इतिहास-ग्रन्थ-मालाका ४था ग्रन्थ

# सुहराब-रुस्तम

वीर-रस-प्रधान सचित्र ईरानी उपाख्यान।

लेखक

पण्डित रामनाथ पाण्डेय।

सम्पादक

पण्डित ईश्वरीप्रसाद शर्म्मा।

प्रकाशक

रामलाल वर्म्मा, प्रोप्राइटर-

"वर्म्मन प्रेस" और "आर० एल० वर्म्मन एण्ड को०,"

३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

वैशाख, सं० १९८१ वि०

प्रथम संस्करण—२००० ] [ मूल्य १॥) सजिल्द १॥।)

सुनहरी रेशमी जिल्द २), रु०।

मुद्रक
राम लाल वर्म्मा
बर्म्मन प्रेस,
कलकत्ता

# समर्पण

जिनकी कृपासे हमने लिखना-पढ़ना सीखा
और जिनके उपकारोंसे हम कभी उऋण
नहीं हो सकते, उन्हीं पितृव्य-देव

**पण्डित सुवर्ण पाण्डेय**

सहकारी अध्यापक, ज़िला स्कूल, आरा

के

कर-कमलोंमें यह पुस्तक सादर

**समर्पित है।**

—रामनाथ पांडेय।

# भूमिका

हमारे स्नेह-भाजन पण्डित रामनाथ पाण्डेयने सुहराब-रुस्तमकी यह कहानी लिखकर हिन्दी-साहित्यको एक अपूर्व भेंट अर्पित की है, इसमें सन्देह नहीं; क्योंकि जहाँतक हमारा अनुमान है, हिन्दीमें अभीतक संसारके इन विख्यात वीरोंके सम्बन्धमें कोई पुस्तक नहीं छपी थी। अँगरेज़ी फारसी, और बंगलामें सुहराब और रुस्तमकी वीरताकी कहानी अनेक काव्यों, नाटकों और चरितात्मक आख्यानोंमें तरह-तरहसे कही गयी है।

फ़ारसके प्राचीन बादशाहोंका एक बड़ाही सुन्दर काव्यमय इतिहास फ़ारसीके परम प्रसिद्ध महाकवि फ़िरदौसीने लिखा है, जो 'शाहनामा' कहलाता है। उसमें फ़ारसके बहुतसे बादशाहोंका हाल लिखा हुआ है। वह पुस्तक एकही साथ काव्य और इतिहास, दोनोंका आनन्द देती है। उसीमें प्रसङ्गानुसार सुहराब और रुस्तमकी भी कथा आ गयी है।

वर्त्तमान पुस्तक उसी शाहनामेके आधारपर तथा कई बँगला और अँगरेज़ी पुस्तकोंके सहारे, कहानीके ढङ्गपर, स्वतन्त्र रूपसे लिखी गयी है। प्रकाशकोंके अनुरोधसे हमें इस ग्रन्थका सम्पादन करते समय बहुतसी बातें घटानी-बढ़ानी और बदलनी पड़ी हैं। विशेषतः परस्परके कथोपकथन तो सारी पुस्तकके बदलने पड़े हैं। मुसलमानोंकी भाषा संस्कृत-बहुल होनेसे अच्छी नहीं लगती, इसी लिये हमने सर्वत्र उर्दू-मिश्रित भाषा कर डाली है। आशा है, कि पाठकोंको यह ढङ्ग पसन्द आयेगा।

इस पुस्तकका उद्देश्य केवल सुहराब और रुस्तमकी वीरता दिखला कर

उनके परस्पर लड़ने और रुस्तमके हाथों सुहराबके मारे जानेका हाल बतलानाही था। इसी लिये सुहराबके मरनेके साथही ग्रन्थकी समाप्ति कर देनी चाहिये थी ; परन्तु लेखकने इसका अन्त वहाँ किया है, जहाँ सुहराबकी माता, उसके वियोगसे व्याकुल हो, हालका पैदा बच्चा छोड़कर, परलोकको प्रस्थान करती है।

इस तरह यह ग्रन्थ दुःखान्त हो जाता है ; पर रुस्तमको गोदमें फिर बच्चा देकरही स्नेहमयी जननी अपने प्राण-प्यारे प्रथम पुत्रके पास जा पहुँची, यह तो किसी संयोगान्त कथानकसे कम आनन्द-प्रद नहीं है। इधर रुस्तमने पुत्रके बदले पुत्र पाया, उधर पुत्र-होना जननी अपने बिछुड़े हुए पुत्रसे परलोकमें जा मिली, यह क्या आनन्दकी बात नहीं है ?

हाँ, दृष्टि-दोषसे एक बड़ी भद्दी भूल हो गयी है। एक जगह राजकुमारी तमीनाके पिताका नाम अफ़रासियाब छप गया है। उस जगह पाठकोंको यह समझना चाहिये, कि वह नाम तमीनाके पिताका नहीं, बल्कि तूरानके बादशाहका था।

प्रकाशकोंने इस पुस्तकमें यत्र-तत्र अच्छे-अच्छे चित्र लगाकर ग्रन्थकी सुन्दरताको वृद्धि करनेका यथेष्ट प्रयास किया है। लेखक और हमने भी अपने कर्त्तव्य-पालनमें भरसक कोई कोर-कसर नहीं की है। इस लिये आशा तो है, कि पाठक हमारे इस परिश्रमको अवश्यमेव प्रेमसे अपनायेंगे पर वह आशा कहाँतक पूरी होती है, यही देखना है।

कलकत्ता,
शारदीय पूर्णिमा, १९८१ वि०

निवेदक,
**ईश्वरीप्रसाद शर्मा।**

# चित्र-सूची

# विषय-सूची

# सुहराब-रुस्तम

# सुहराब-रुस्तम

## उपक्रमणिका

आजसे पच्चीस सौ वर्ष पहलेका ज़िक्र है। उस वक्त हिजरी सन्‌का कहीं नाम-निशान भी न था। सारा यूरोप-देश, जो आज सब तरहसे उन्नत कहा जाता है, अज्ञानके गहरे अन्धकारमें पड़ा हुआ था। कला-कौशल और साहित्य-विज्ञानकी तो बातही दूर है, जिस अन्नसे मनुष्य-शरीरका पोषण होता है, उसके पैदा करनेकी विधितक उन्हें मालूम नहीं थी, अर्थात् वे पूरे असभ्य थे। किन्तु भारतीय सभ्यताका सितारा, उस समय, उन्नतिके शिखरपर पहुँच चुका था और उस सितारे-की चमक एशिया देशके जिन-जिन प्रदेशोंपर पड़ी, वे भी सम्पूर्ण सभ्य और कला-कौशलोंसे भरे-पूरे हो गये थे।

इन्हीं एशियाई देशोंसे सटी, मुसलिम-सभ्यताकी अनुयायी, तहवरस, जमशेद, ज़हाक* आदि बहादुर बादशाहोंकी जन्मभूमि, 'ईरान' और 'तूरान' नामकी दो बड़ी-बड़ी सल्तनतें थीं। ये दोनों सल्तनतें या देश प्रताप, प्रतिभा और प्रभावमें उन दिनों बहुतही बढ़े-चढ़े थे। इन दोनों देशोंको 'जिलून' नामकी नदी दो भागोंमें विभक्त किये हुई थी। उसके उत्तरवाले तटपर तूरान और दक्षिणवाले तटपर ईरान बसा हुआ था; किन्तु जिस प्रकार इन दिनों 'तूरान' 'तुर्किस्तान'के नामसे और 'ईरान' 'फ़ारसके' नामसे, पृथ्वी-तलपर, अपनी महत्ताके कारण, प्रसिद्ध हो रहे हैं, उसी प्रकार उन दिनों भी ये दोनों प्रदेश, अपने उन्हीं नामोंसे, ऐश्वर्य, सुख-सम्पदा और शौर्य-वीर्यमें, सारे संसारके लिये श्रद्धा, भक्ति और सम्मानके पात्र हो रहे थे।

किन्तु प्रकृतिके नियम सदा-सर्वदा अपरिवर्त्तनीय और अनिवार्य्य हुआ करते हैं। यही कारण है, कि एक दिन सारे संसारको,

---

* 'शाहनामे' और मीरकन्दकी लिखी हुई 'तवारीख़-ए-मुअज्जम'में लिखा है, कि जमशेदने ६०० और ज़हाकने १००० वर्ष राज्य किया था। इनके तख़्त आसमानमें उड़ा करते थे और इनके ताबेमें देव और परियाँ भी रहा करती थीं। ज़हाक जमशेदसे भी अधिक वीर और बड़ा प्रतापी राजा था। इसने जमशेदको ईरानसे भगा दिया था और बराबर उसको कैद करनेकी फ़िक्रमें रहता था। जमशेद भागकर एक दूसरे बादशाहकी सल्तनतमें चला गया। उसने बादशाहकी लड़कीसे शादी की और उसी बादशाहसे फौजकी मदद ले, फिर अपने मुल्कपर कब्जा किया।

चुपचाप सिर झुकाकर, उसकी आज्ञाओंका वशवर्ती होना पड़ता है। उदाहरणके लिये,—संसारके जिन जीवोंमें, जब किसी विशेषताका आविर्भाव होता है, तब वे सहसा मदसे मतवाले हो उठते हैं; उस समय उनमें अपनेसे कमज़ोरोंको दबा देनेके लिये एक प्रकारकी प्रबल इच्छा जाग उठती है। इसका परिणाम यह होता है, कि वे दूसरोंको तो अपने अत्याचारोंसे बर्बाद करतेही हैं; साथही स्वयं भी वैभव और श्री-विहीन हो, प्रकृतिके कराल गालमें विलीन हो जाते हैं।

सारांश यह, कि ऐसी-ऐसी घटनाएँ दिन-रात हमारी आँखोंके आगेसे गुज़रती रहती हैं। पाठक इतिहास द्वारा हमारी इस बातका पुष्ट प्रमाण पा सकते हैं। आज जिसकी विजय-वैजयन्ती, असीम आकाशमें फहराकर, उसके विपुल वैभव और प्रबल पराक्रमकी घोषणा कर रही है, जिसकी तूती सारे जहानमें बोल रही है, जो अपने धन-बल तथा जन-बलके मदमें मतवाला होकर विधिके विधानका उल्लङ्घन करनेपर उतारू है, वही कल पथका भिखारी बन, द्वार-द्वार भीख माँगता फिरता है। उस समय न जाने, उसका वह बल-वैभव, शौर्य-वीर्य्य और सुख-सम्पदा, पानीके बुलबुलेकी तरह, कहाँ ग़ायब हो जाती है! यही अवस्था एक दिन 'ईरान' और 'तूरान' प्रदेशोंकी भी हुई। सब तरहसे उन्नत होते हुए भी, इन दोनों प्रदेशोंके भाग्यमें, विधाताने स्थायी सुख और शान्ति नहीं लिखी थी।

हम ऊपर कह आये हैं, कि 'जिलून' या 'आमू' नदी इन प्रदेशों-

की सीमा-रेखा थी। दोनोंही, एक दूसरेके, आमने-सामने पड़ते थे। अतः इनमें सदा-सर्वदा संघर्षण होते रहना स्वाभाविक था। ये सदैव एक दूसरेके जानी दुश्मन बने रहते थे। इस प्रकारके विषम वैमनस्यका, कभी-कभी, यह परिणाम होता था, कि इन दोनों देशोंमें प्रायःही घमासान युद्ध छिड़ जाता था, जिससे इन देशोंकी निरीह प्रजाको सुखसे दिन बिताना कभी नसीब न होता था। यद्यपि 'आमू' नदी ईरान और तूरानकी, अन्य नदियोंकी अपेक्षा अधिक गहरी और लम्बी-चौड़ी थी, तथापि गरमीके दिनोंमें वह भी संकुचित हो जाती थी। उस समय उसमें जलकी मात्रा इतनी कम हो जाती थी, कि मनुष्य सुगमतासे, पैदलही, इस पारसे उस पार आ-जा सकता था। अतएव बीचमें आमू नदीके होते हुए भी, उनके परस्पर लड़ने-भिड़नेमें कोई बाधा नहीं पड़ती थी।

हम जिस समयका ज़िक्र कर रहे हैं, उस समय जिस प्रकार ईरान-राज्यके अन्तर्गत, अनेक छोटे-छोटे राजा, राज्य कर रहे थे, उसी प्रकार तूरान भी छोटे-छोटे मातहत राज्योंसे परिपूर्ण था। जिस समय ईरान और तूरानके बादशाहोंमें युद्ध छिड़ जाता था, उस समय इन दोनों राज्योंके मातहत राजा भी, दल-बल सहित, अपने-अपने बादशाहकी मदद्को आ जुटते थे। इनके अतिरिक्त, प्रत्येक राज्यमें, कुछ ऐसे बड़े-बड़े वीर, योद्धा, साहसी और बलवान् पुरुष रखे जाते थे, जिन्हें बादशाहकी ओरसे मुफ़्त जागीरें दी जाती थीं। इन जागीरोंका वे स्वच्छन्दतापूर्व्वक उपभोग करते और

युद्धके समय, अपने-अपने बादशाहोंकी ओर होकर, वीरता और निर्भीकता सहित, घमासान युद्ध करनेके साथ-साथ समर-वेदीपर, बादशाहके लिये प्राणतक बलिदान करनेमें भी तनिक न हिचकते थे। यद्यपि ये जागीरदार लोग, अपने बादशाहसे, किसी प्रकारका वेतन नहीं पाते थे और न उनकी प्रजाही कहलाते थे, तथापि अपने विशेष बलके कारण, राजासे लेकर प्रजातक, सदा सबके प्रियपात्र बने रहते थे। सभी इनको आदर और सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे। युद्धके समय बादशाह लोग, बड़ेही आग्रह और प्रतिष्ठासे इन्हें अपने यहाँ बुलाते और समस्त सेनाका भार इन्हींपर सौंप, आप निश्चिन्त हो, बैठ जाते थे।

सच पूछिये, तो उस समयके ये जागीरदारही इन देशोंके वास्तविक शासक होते थे। इन्हींके ऊपर प्रजा-जनोंकी देख-भाल, और रक्षा निर्भर करती थी। समाजकी शृंखलाको येही लोग शासक-सूत्रसे दृढ़ताके साथ बाँधे रखते थे। जनताकी शान्ति और सुव्यवस्थाके लिये ये अपनेको उत्तरदायी समझते और अपने कर्त्तव्यका यथारीति पालन भी किया करते थे। जहाँ कभी, कोई राज-विद्रोही सिर उठाता, त्योंही ये लोग झट उसे दबा दिया करते थे। सारांश यह, कि ये जागीरदारही समस्त प्रजाजनोंकी सुख-शान्तिके विधायक और उनकी विधि-व्यवस्थाके शास्ता थे। बादशाह लोग तो एक प्रकारसे, केवल नाममात्रके शासक कहलाते थे। अस्तु।

इस कथाके युगमें, विशेषतः धनुष-बाण, बर्छे-भाले, ढाल-तल-

वार तथा लाठी और गदा आदि शस्त्रोंसेही युद्ध हुआ करता था। उस समय, आजकलकीसी, छल-कपट-भरी युद्ध-चातुरी, काममें नहीं लायी जाती थी; बल्कि दोनों ओरकी सेनाएँ सम्मुख खड़ी हो, एक दूसरेको ललकारतीं और धर्मका ध्यान रखती हुई युद्ध करती थीं। प्रत्येक योद्धा अपने सामनेवाले योद्धापरही शस्त्र-प्रहार करता था, दूसरेपर नहीं। जो सैनिक पीठ दिखाता या लड़ते-लड़ते भाग जाता, उसपर कोई भी योद्धा शस्त्र नहीं चलाता था। साथही किसीके ललकारनेपर, कोई भी वीर, आगे आनेसे मुँह नहीं मोड़ता था। तात्पर्य यह, कि उस कालमें लोग, सच्चा धर्म-युद्ध करते थे। जिस पक्षकी जीत होती थी, वही विजयी कहलाता था और इस बातको उसका विपक्षी दल भी मुक्त कण्ठसे स्वीकार करता था। ऐसी दशामें वह वीर, साहसी और योद्धा पुरुष, जिसका पराक्रम उसके राज्यमें सबसे बढ़ा-चढ़ा सिद्ध होता था, अपने-अपने संरक्षकों द्वारा सम्मानित और सबकी श्रद्धाका पात्र होता था। हमारी इस कथाका प्रधान नायक, रण-चतुर और वीर-चूड़ामणि, महावीर रुस्तम भी इसी श्रेणीका एक पुरुष-रत्न था।



# रुस्तमका जन्म

महावीर रुस्तमका जन्म, ईरान-प्रदेशकी राजधानी 'सीस्तान'से कुछ दूर, 'ज़ाबुलिस्तान' नामक नगरके एक उच्च और प्रतिष्ठित वंशमें हुआ था। यह वंश अपनी शूरता, वीरता शौर्य, साहस और समर-निपुणताके लिये सदासेही, ईरान-प्रदेशमें, सर्व्वमान्य समझा जाता था। इस वंशकी धाक ईरान प्रदेशमेंही नहीं, वरन् तूरानमें भी जमी हुई थी। यही कारण था, कि राज्य-नियमके अनुसार, इस वंशको भी ईरानके बादशाहकी ओरसे जागीर मिली हुई थी तथा राजा और प्रजा—सभी लोग इसे सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे।

रुस्तमके पिताका नाम 'ज़ाल' और माताका 'रूदाया' था। ज़ालके सम्बन्धमें कविवर 'फ़िरदौसी' ने अपने 'शाहनामे' में एक बड़ीही विचित्र कथा लिखी है। लिखा है, कि जिस समय ज़ाल पैदा हुआ और यह ख़बर धायके द्वारा उसके पिता 'सामको' मिली, वह उसी दम सौरीमें घुस गया। वहाँ जाकर उसने नवजात बालकको देखा और देखतेही वह हैरान हो गया! कारण, बालकका रूप-रङ्ग मनुष्य जैसा नहीं था। वह हूर जैसा सुन्दर था और परियोंके बालोंकी भाँति उसके सिरके बाल सुनहले रङ्गके थे। इस

सौन्दर्य्य-सुषमाको देखकर उसके मनको एक अभूतपूर्व आशङ्काने आ घेरा। वहाँके हर ख़ासो-आम यही कहने लगे, कि "यह लड़का सामका पुत्र नहीं, बल्कि कोई परीज़ाद या देव है; क्योंकि मनुष्यमें इतनी ख़ूबसूरती नहीं हो सकती!"

यह सुनकर साम बड़ा शर्मिन्दा हुआ और उसने उसी वक्त ज़ालको लेजाकर अलबुर्ज़-पर्व्वतकी गुफ़ामें बन्दकर दिया; किन्तु उस गुफ़ामें एक 'सीमुर्ग़'का अड्डा था*। जब सीमुर्ग़ वहाँ आया, तब उसने एक बालकको हाथ-पैर पटकता और ज़ार-ज़ार रोता पाया। यह देखकर सीमुर्ग़को बालकपर दया आ गयी और वह उसे अपने रहनेके स्थानमें ले जाकर, अपने बच्चेकी तरह, उसका पालन-पोषण करने लगा। इस बालकपर सीमुर्ग़कोही प्रेम न हुआ, बल्कि उसके बच्चे भी उससे मुहब्बत करने लगे। क्रमशः ज़ाल जवान हुआ और अब इधर-उधर वनमें घूमने भी लगा। एक दिन, संयोगवश, उधरसे कोई कारवान या व्यापारियोंका गिरोह गुज़रा और उसकी निगाह सीमुर्ग़के पास बैठे एक ख़ूबसूरत जवानपर जा पड़ी। कारवानवालोंने ज़ालको

---

* सीमुर्ग़—एक तरहका परदार और लम्बी चोंचवाला विचित्र जानवर होता है। इसके शरीर और पैर तो सिंहकी तरह होते हैं और चोंच टेढ़ी तथा गिद्धकी जैसी होती है। इस जानवरका ज़िक्र 'ग्रीस' और 'रोम'की पुरानी कहानियोंमेंही, विशेषकर पाया जाता है। इसको वहाँवाले 'ग्रिफन' नामसे पुकारते हैं; पर कुछ लोगोंका ऐसा ख़याल है, कि ग्रिफन कोई वास्तविक जीव नहीं, बल्कि एक काल्पनिक पक्षी है।

उसकी सुन्दरता देखकर सीमुर्ग़से माँग लिया और वे उसे, प्रेमपूर्वक, अपने साथ रखने लगे।

उन्हीं दिनों, एक रातको, ज़ालके पिता सामको एक स्वप्न हुआ, जिसमें मानो कोई उससे यह कह रहा था कि, "ऐ नामवर! तेरा पुत्र सकुशल जीवित है। तूने अपने ऐसे सुन्दर पुत्रको, जो ख़ूबसूरतीका ख़ज़ाना, घरका उजाला और दुनियाँमें अपने बाप-दादेका नाम रखनेवाला था, अपनेसे दूर हटाकर—पैरोंसे ठुकराकर—अच्छा नहीं किया।" इस स्वप्नको देखतेही सामके होश-हवास उड़ गये। वह बेचैनसा हो गया—आख़िर सिर धुन-धुन और छाती पीट-पीटकर पश्चात्ताप करने लगा।

इस तरह बहुत देर बीत जानेपर भी जब उससे न रहा गया, तब वह ज़ालकी तलाशमें अलबुर्ज़-पहाड़की ओर रवाना हुआ। वहाँ पहुँचनेपर उसे ज़ाल नहीं मिला! तब तो वह और भी हताश हुआ और बड़ी कातरतासे ज़ालको पानेके लिये, वहीं घुटने टेक, ईश्वरसे प्रार्थना करने लगा। ईश्वरने उसकी प्रार्थना तत्काल सुन ली। कुछ देरके बाद सीमुर्ग़ वहाँ आ उपस्थित हुआ। उसने सामको सारी दुःख-भरी कहानी और उसकी स्वप्नकी बात सुनकर कहा,—"मैंनेही तेरे पुत्रका पालन-पोषण किया था। इस वक़् वह एक कारवानके साथ है।"

इसपर सामने, ज़ालको ला देनेके लिये उस सीमुर्ग़से बड़ी अनुनय-विनय की। अन्तमें सीमुर्ग़, सामकी हालतपर तरस खाकर, कारवानवालोंसे ज़ालको ले आया और उसने उसे सामके

सुपुर्द कर दिया। जब ज़ाल अपने पिताके साथ 'सीस्तान' जानेको तैयार हुआ, तब सीमुर्ग़ने अपने कुछ पर देकर उससे कहा,— "बेटा! इन परोंको तू अपने पास रख ले। अगर तू कभी, किसी आफ़तमें पड़ जाये, तो इनमेंसे एक परको जला दीजियो, मैं फ़ौरन तेरी मददपर जा पहुँचूँगा; क्योंकि तुझपर मेरी, अपनी औलाद जैसीही, मुहब्बत हो गयी है।"

यह सुनकर ज़ालने उसकी बहुत कुछ प्रशंसा की और उसे धन्यवाद देता हुआ अपने पिता सामके साथ,सीस्तान चला आया।

जब ज़ालके आनेकी ख़बर ईरानके तत्कालीन शाह नौज़रको हुई, तब उन्होंने उसी दम उसे अपने दरबारमें बुलवा भेजा। ज़ाल शाहका फ़रमान पाकर, फ़ौरन दरबारमें हाज़िर हुआ। उस दिन दरबारमें, किसी कारणसे, प्रायः सभी दरबारी उपस्थित थे। देशके बड़े-बड़े ज्योतिषी भी आये हुए थे। उन लोगोंने ज़ालको देखतेही, उसकी, बड़ी प्रशंसा की और बादशाहसे कहा,—"भविष्यमें ज़ालकी क़िस्मतका सितारा बहुतही बुलन्द होगा। यह बड़ाही नामवर, हिम्मतवर और बहादुर होगा।" यह सुनकर बादशाहने ज़ालको बहुत-कुछ इनाम दिया और उसके पिताकी जागीर पहलेसे चौगुनी कर दी। यही नहीं,—वरन् उसे, एक तरहसे, अधीनस्थ राजाही बना दिया। इससे सामकी प्रसन्नताकी सीमा न रही। वह अपने बादशाहसे ऊँचे ख़िताब और बहुतसी जागीरें हासिलकर, ज़ालको लिये हुए, ज़ाबुलिस्तानमें लौट आया।

वहाँ आकर उसने, देशभरके बड़े-बड़े पहलवानोंको बुलवाया

और उनसे कहा,—"मैं आजसे अपने पुत्र ज़ालको तुम्हारी शागिर्दीमें सौंपता हूँ। इसे पहलवानी और हुकूमत करनेका हुनर सिखलाओ। इसे हरएक फ़नमें ऐसा क़ामिल बना दो, कि दूर-दूरतक इसका जोड़ न निकले। मैं अब यहाँकी हुकूमत इसीको सौंप, 'गरकिसारान'में जाकर रहना चाहता हूँ।" फिर वह ज़ालको सम्बोधनकर उसे तरह-तरहकी नसीहतें देने लगा; बोला,—"पुत्र! मैं आज तुझे यह ज़ाबुलिस्तानकी सल्तनत सौंपता हूँ। यहाँ हमेशा एक क़ाबिल शाहकी तरह हुकूमत करना।" इसके बाद वह गरकिसारानकी ओर रवाना हो गया।

पितासे राज्य-भार पातेही ज़ालने ज़ाबुलिस्तानका, बड़ी योग्यतासे, शासन किया। उसके शासन-कालमें सभी ख़ुशहाल और सुखी हो गये। चारों ओर सुख-शान्ति विराजने लगी। उस समय वहाँपर 'मेहराब' नामका एक पहलवान रहा करता था। वह तूरानके बादशाह ज़हाकका वंशज था। उसके एक कन्या थी, जिसका नाम 'रूदाया' था। 'रूदाया' ख़ूबसूरतीमें रूपकी खान थी। ज़ालने उससे ब्याह करना चाहा और इस बातको मेहराबपर प्रकट किया। मेहराब भी उसके प्रस्तावसे सहमत हो गया और उन दोनोंकी शादी हो गयी।

अब ज़ालके दिन बड़े सुखसे बीतने लगे। कुछ दिनोंके बाद रूदाया गर्भवती हुई और प्रसवके समय उसे इतनी पीड़ा हुई, कि उसके प्राणोंके निकलनेकी नौबत आ गयी। इससे ज़ालको महती चिन्ता उपस्थित हुई, कि वह इस समय क्या करे, कि जिससे

उसकी पत्नीकी प्रसव-वेदना दूर हो ? वह कुछभी स्थिर न कर सका। अन्तमें उसे सीमुर्ग़की पर जलानेवाली बात याद आ गयी। उसने उसके दिये हुए परोंमेंसे एकको आगमें जला दिया और उसे याद किया। सीमुर्ग़ तत्काल उसके सामने आ उपस्थित हुआ ! ज़ालने उससे अपना दुखड़ा कह सुनाया। सुनतेही सीमुर्ग़ वहाँसे ग़ायब हो गया और थोड़ीही देर बाद, दो बूटियोंको ला, उन्हें ज़ालके हाथमें देकर बोला,—"बेटा! लो, इन बूटियोंमेंसे एक अपनी औरतको सुँघा देना ; इससे वह बेहोश हो जायेगी। फिर उसके पेटको चीर देना, जिससे बच्चा फ़ौरन बाहर निकल आयेगा। फिर वह दूसरी जड़ी सुँघा देना। ऐसा करनेसे उसकी सारी तकलीफ़ें रफ़ा हो जायेंगी और उसका बदन भी पहलेकी तरह ज्यों-का-त्यों हो जायेगा।" यह कह, सीमुर्ग़ ग़ायब हो गया। ज़ालने उसके आदेशानुसारही सारे काम किये। फलतः 'रुस्तम' पैदा हो गया और उसकी माताके प्राण बच गये। अस्तु।

किसी कविने कहा है, "गुणीके गुणान, सो तौ प्रथमहीते प्रकटे हैं।" उसीके अनुसार बचपनसेही रुस्तमके अङ्ग-प्रत्यङ्गसे वीरोचित गुण प्रकट होने लगे थे। उसका उन्नत ललाट, अद्भुत ज्योतिसे भरी हुई बड़ी-बड़ी आँखें, साँड़केसे ऊँचे-ऊँचे कन्धे, चौड़ी छाती और सिंहकीसी पतली कमरको देखकर, सभी लोग यह बात भली भाँति जान गये थे, कि यह लड़का एक दिन निश्चयही अद्वितीय वीर होगा। क्यों न हो, तभी तो कवियोंने कहा है, कि "होनहार बिरवानके, होत चीकने पात।"

अन्तमें वही बात हुई। आयु-वृद्धिके साथ-ही-साथ रुस्तमके अन्यान्य गुण भी विकास पाने लगे। उसकी रहन-सहन, बात-चीत और चाल-ढालसे यथेष्ट वीरता टपकने लगी। जब रुस्तम किसी लायक़ हुआ और उसके माता-पिताको उसे रण-शिक्षा दिलानेकी ज़रूरत मालूम हुई, तब उसे दूर नहीं जाना पड़ा। उसका पिता स्वयं एक मशहूर लड़ाका और युद्ध-विद्याका पारदर्शी पण्डित था, अतएव उसे इन कलाओंकी शिक्षा, सुचारु रूपसे, घरमेंही मिल गयी। रुस्तमकी स्मरण-शक्ति इतनी प्रखर थी, उसकी बुद्धि इतनी तीव्र थी, कि उसे एक बार जो कुछ बतलाया जाता, उसे वह कभी भूलता न था। साथही सबसे बढ़कर उसकी बुद्धिकी विशेषता यह थी, कि किसी अस्त्र या शस्त्रका एक तरहका प्रयोग सीख लेनेपर, वह उसे भिन्न-भिन्न रूपमें स्वयं प्रयोग करना सीख लेता था। सारांश यह, कि कुछही दिनोंमें रुस्तमने युद्ध-कलाकी समस्त क्रियाओंमें पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त कर लिया। कहते हैं, उसने अपनी उठती उम्रमेंही अनेक युद्धोंमें सम्मिलित हो, अपने युद्ध-कौशलसे अनेक बार शत्रुओंको हराया था।

रुस्तमकी एक जीवनीमें लिखा है, कि वह सदा एक स्थानपर रहना पसन्द नहीं करता था; अतएव वह सदाही पार्वत्य-प्रदेशों तथा जङ्गलोंमें भ्रमण किया करता था। किन्तु जब कभी उसके संरक्षक और ईरानके बादशाह 'कैकाऊस'पर उसका शत्रु, तूरानका शाह, चढ़ आया और उन्हें पराजितकर राज्य-च्युत करने लगा, तभी रुस्तमने उपदेवकी भाँति—फ़रिश्तेकी तरह—तत्काल उप-

स्थित हो, अपने प्रबल पराक्रम द्वारा, शत्रुको परास्त करके भगा दिया और अपने बादशाहको बर्बादीसे बचा लिया था।

रुस्तमके पुरुषार्थ और शक्तिके कारण, उस समय, ईरान देश बड़ाही सुखी हो गया था। राजा-प्रजा सभी, निर्भयता पूर्वक, बड़ेही अमन-चैनके साथ अपना-अपना कार्य्य सम्पादन करते थे। प्रबल आततायियोंसे देश सर्वथा सुरक्षित रहता था। उस समय वहाँ किसी भी विदेशीकी दाल नहीं गलने पाती थी। ईरानपर चढ़ाई करनेका किसीको स्वप्नमें भी साहस नहीं होता था। लेकिन कैका-ऊस बड़ेही दुर्बलचित्त, अविचारी और अयोग्य शासक थे। इनकी अविचारिता और उद्दण्डता बराबरही तूरानियोंमें असन्तोष और हलचल पैदा करती रहती थी। हारकर, कभी-कभी, प्रजाके लोग भी नाना प्रकारके उपद्रव करने लग जाते थे, जिससे कैकाऊस कभी स्थिरताके साथ राज-सुखोंका उपभोग नहीं करने पाते थे।

हाँ, तो जिन दिनों कैकाऊस ईरान-प्रदेशके अधिपति थे, उन दिनों तूरानके नायक 'अफ़रासियाब' थे। यद्यपि अफ़रा-सियाबके दरबारमें महावीर रुस्तमकी बराबरीका कोई योद्धा नहीं था, तथापि कैकाऊसके आचरणसे तङ्ग और कुपित होकर उसे भी कभी-कभी देशमें ऐसी आग भड़का देनी पड़ती थी, कि जिससे समस्त देशमें बड़ीही अशान्ति फैल जाती थी। वीरवर रुस्तमने तूरानियोंको युद्धमें बहुत बार हराया था; पर इतना होनेपर भी लड़ाईकी आग कभी समूल नष्ट नहीं हुई। वह अनुकूल परि-स्थिति पाकर, प्रायःही, भड़क उठती थी और जिस समय इन दोनों

# रुस्तमका बाल्यकाल

रुस्तमका वह सुन्दर-सलोना रूप देख और अपने नाते-गोतेवालोंके मुँहसे उसकी बार-बार प्रशंसा सुनकर उसके माता-पिता फूले अङ्ग न समाये। उन्होंने अपने नन्हेंसे बच्चेके शरीरकी वह अनुपम कान्ति और सुन्दर डील-डौल देखकरही अनुमान कर लिया, कि यह किसी दिन बड़ा शूर-वीर होगा। यही सोच-सोचकर वे आनन्दके समुद्रमें डूबने-उतराने लगे।

कुछही दिन बाद ज़ालने गरकिसारानमें अपने पिताके पास और काबुलमें अपने ससुर मेहराबके पास रुस्तमके जन्मका समाचार भेज दिया। पोतेके जन्मका समाचार पाकर सामको बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने इस आनन्दके अवसरपर दीन-दरिद्रोंको बहुतसा दान दिया। इधर मेहराबने भी नाती पैदा होनेकी ख़ुशीमें ग़रीबोंको मुँह-माँगा इनाम दिया। इसके बादही वह अपने नातीको देखनेके लिये ज़ाबुलिस्तानकी ओर रवानः हुआ।

शाहनामेमें लिखा है, कि जब रुस्तमने दूध पीना छोड़कर अन्न खाना शुरू किया, तभी उसको इतनी भूख लगने लगी, कि वह बात-की-बातमें थाल-का-थाल सफ़ाचट कर जाता था। यह

देख, लोगोंको बड़ा अचम्भा होता था। एक दिन छुटपनमेंही रुस्तमने अपने पिताकी बड़ी भारी गदा अनायासही उठा ली। बालकके इस आश्चर्य-जनक साहसको देख, लोग बड़े ताज्जुबमें आये और सबके जीमें यह धारणा बद्धमूल हो गयी, कि यह बालक अवश्यही एकदिन अपने वीर-वंशका शिरोमणि और अपने दादा सामसे भी बढ़कर शूर-वीर, साहसी तथा पराक्रमी होगा।

रुस्तमका नाना मेहराब तो उसे देखनेके लिये काबुलसे ज़ाबुलिस्तानकी ओर रवानः होही चुका था; अबके उसके दादा सामके हृदयमें भी अपने पौत्रको देखनेकी बड़ी अभिलाषा हुई। वह भी ज़ाबुलिस्तानकी ओर चल पड़ा। मेहराब उसके आनेके पहलेही ज़ाबुलिस्तान पहुँच गया था। ज्योंही ज़ालने अपने पिता सामके आनेकी ख़बर सुनी, त्योंही वह अपने ससुर मेहराब और अपने आठ वर्षके बच्चे रुस्तमको साथ ले, घोड़ेपर सवार हो, अपने पिताकी अगवानी करनेको आया। उस समय रुस्तम हाथीपर सवार था। सामके पास पहुँचतेही ज़ाल, मेहराब और रुस्तम अपनी-अपनी सवारीसे नीचे उतर पड़े। रुस्तमको देखकर सामको जो प्रसन्नता हुई, उसका वर्णन नहीं हो सकता। सामने रुस्तमको लपककर गोदमें उठा लिया और मुँह चूमकर उसे आशीर्वाद दिया, कि "बेटा! तुझे परवरदिगार इस दुनियामें हर तरहकी इज़्ज़त और मरतबा बख्शे!" इसके बाद सभी लोग सीस्तानके क़िलेमें चले आये।

सामके आनेपर 'सीस्तानने' एकबार अपूर्व शोभा धारण की।

ख़ूब जलसे होने लगे। नाच-गान और खान-पानकी धूम-धामके मारे ज़ालके घर नित्य चहल-पहल रहने लगी। एक दिन बातों-ही-बातोंमें सामने रुस्तमको बार-बार असीसें देते हुए पूछा,—“बेटा! सच-सच बता, तू क्या चाहता है? मैं तेरी हरएक ख़्वाहिश पूरी करनेके लिये तैयार हूँ। तू जो चाहे, माँग ले।”

यह सुनकर रुस्तम बड़ा प्रसन्न हुआ और अपने दादा सामकी बार-बार प्रशंसा करता हुआ बोला,—“मेरे बहादुर दादा! ख़ुदा आपको दुनियामें हमेशः ख़ुशो-ख़ुर्रम रखे। आपकी उम्र दराज़ हो। मैं तो हमेशः आपका वफ़ादार बन्दा हूँ। मुझे दुनियवी ऐशो-आरामसे मतलब नहीं। मैं तो सिर्फ़ एक घोड़ा, एक बर्छी, एक माला, एक ढाल, एक तलवार और एक ख़ञ्जर चाहता हूँ, जिनकी मददसे मैं अपने तमाम दुश्मनोंको मारकर उनके ख़ूनसे ज़मीन तरकर दूँ और अपने ख़ानदानकी इज्ज़त बढ़ाऊँ।”

रुस्तमकी यह बात सुन, सामका हृदय हर्षसे भर उठा। उसका मुख कमलके समान खिल गया। इसके बाद फिर नाच-गान और शराबका दौर चलने लगा। थोड़ीही देरमें सब नशेमें चूर हो गये। महफ़िल ख़ूब जमी हुई थी। जब रुस्तमके नाना मेहराबको बेतरह नशा चढ़ आया, तब वह एकाएक मस्तीमें चूर होकर बोल उठा,—“अब मुझे दुनियामें किसका ख़ौफ़ है? ओफ़! अब न तो मुझे ज़ाल या सामका डर है, न जहाँगीर शाहका अन्देशा। अब तो सारे जहानमें रुस्तमकाही बोल-बाला होनेवाला है। उसकी तलवारके आगे बड़े-बड़े पहलवान और शाहोंके शाह

भी सिर झुकायेंगे। अब रुस्तमके सामने भला कौन लश्कर-कशी कर सकेगा और किसकी हिम्मत है, जो ज़ोर-ज़ुल्म करनेके लिये सिर उठायेगा? अब तो मैं बात की-बातमें ज़हाक जैसे ज़बरदस्त बादशाहको भी ख़ाकमें मिला दे सकता हूँ।"

मेहराबकी इस बातको चतुर साम और ज़ालने हँसीमें उड़ा दिया। उन लोगोंने इसपर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। इसी समय गरकिसारान और माज़न्दरानसे यह ख़बर आयी, कि शत्रु-ओंने फिर सिर उठाया है और वे वहाँ नाना प्रकारके अत्याचार और उपद्रव मचा रहे हैं। यह संवाद पातेही विजयी सामने उसी समय बख़्तरकी ओर प्रस्थान किया।



# रुस्तम और हाथी

इन दिनों ईरानके बादशाह मनचेहरके पास एक बहुत बड़ा मतवाला हाथी था। उस हाथीका रङ्ग सफ़ेद था। एक दिन रातके समय वह मतवाला हाथी अपनी साँकल तुड़ा, पीलख़ानेसे निकल भागा और नगर-निवासियोंको पैरोंसे कुचलते तथा उन्हें सूँड़से पकड़-पकड़कर उछालते हुए नीचे गिराने लगा। इस उपद्रवके मारे चारों ओर भयानक कोलाहल मच गया। आबाल-वृद्ध-वनिता सभी अपनी प्राण-रक्षाके लिये व्याकुल हो उठे और आसमानकी ओर हाथ उठाये हुए अपनी रक्षाके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करने लगे। उस गम्भीर रात्रिके समय एकाएक भयङ्कर आर्त्तनाद और कोलाहल सुनकर रुस्तमकी नींद टूट गयी। वह सहसा जाग पड़ा। इतनी रातको लोग क्यों इस प्रकार रो-चिल्ला रहे हैं, यह उसकी समझमें नहीं आया। अन्तमें लोगोंसे पूछ-ताँछ करनेपर उसे मालूम हुआ, कि बादशाहका सफ़ेद रङ्ग-वाला मतवाला हाथी बन्धन तोड़कर पीलख़ानेसे बाहर हो गया है और शहरके लोगोंको मारे डालता है।

यह सुनतेही क्रोध और उत्साहके मारे रुस्तमकी नसें फूल

उठीं। उसके अङ्ग-अङ्गमें अद्भुत शक्तिका संचार हो गया। वह झटपट विस्तरेसे उठ खड़ा हुआ और अपने दादा सामकी एक बड़ी भारी गदा लिये हुए उस मतवाले हाथीकी हस्ती मिटाने और नगर-निवासियोंकी जान बचानेके लिये घरसे तुरन्त बाहर निकला। नौकरों और पहरेदारोंने उसे जाते देख, उसकी राह रोककर कहा,—"नादान बच्चे! कहाँ जा रहे हो? तुम अभी महज़ कमसिन छोकरे हो और वह मतवाला पील जवानीके नशेमें चूर है। सिवा इसके, इस वक्त रातका मौक़ा है। लिहाज़ा, तुम अपने महलसे बाहर हरगिज़ न निकलो और मुफ़्तमें अपनी जान ख़तरेमें न डालो।"

पर वीर-हृदय वीरता दिखानेका मौक़ा हाथमें आनेपर उसे योंही नहीं जाने देता। लोग लाख कहते रह गये; पर रुस्तमने अपनी हठ न छोड़ी और पहरेदारोंसे दरवाज़ा खोलनेको कहा। लेकिन पहरेदारोंने उसकी बात नहीं मानी। उनकी इस बेअदबीपर रुस्तमको बड़ा क्रोध हुआ और उसने उसी समय एक पहरेदारके सिरपर इतने ज़ोरसे घूँसा मारा, कि वह वहीं गिर पड़ा और मर गया।

उस पहरेदारको मरते देख, और-और पहरेदार अपनी-अपनी जान लेकर वहाँसे भाग गये। इसके बाद रुस्तम महलका फाटक खोलकर बाहर चला आया और जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाता हुआ उस मतवाले हाथीके सामने आ पहुँचा। फिर तो जैसे शेरका बच्चा मतवाले हाथीका मस्तक विदीर्ण करनेके लिये उसपर टूट पड़ता

है, वैसेही रुस्तमने भी उस हाथीके मस्तकको लक्ष्यकर अपनी भयङ्कर गदा चलायी। हाथी उस गदाघातको न सह सका और भयानक चिंग्घाड़ करता हुआ पृथ्वीपर गिर पड़ा। कुछही देर बाद वह हाथी तड़प-तड़पकर मर गया। हाथीके मरतेही चारों ओर आनन्द-कोलाहल होने लगा। सभीके मुर्झाये हुए चेहरों-पर खुशी झलकने लगी। सारे नगर-निवासियोंका भय दूर हो गया। सभी लोग मुक्त-कण्ठसे रुस्तमकी प्रशंसा करने और उसे हृदय खोलकर आशीर्वाद देने लगे।

हाथीको मार, गर्वसे फूला हुआ रुस्तम प्रसन्न-मनसे अपने महलमें आकर सो रहा। सवेरा होतेही सारे नगरमें यह संवाद बिजलीकी तरह फैल गया। जिसे देखो, वह इसी घटनाकी चर्चा कर रहा है। ज़ाल अपने वीर पुत्रकी वीरताकी बात सुनकर बड़ा ही खुश हुआ। उसने रुस्तमको अपने पास बुला, बड़े प्यारसे उसका मुँह चूम, गले लगाकर कहा,—"बेटा! खुदा तेरी उम्र दराज़ करे। बेशक तू मेरे ख़ानदानका नाम ऊँचा करेगा और चन्द रोज़ोंमें दुनिया तेरी बहादुरी और सिपहगिरीके सामने सिर झुकायेगी। तेरा सानी कहीं ढूँढ़े भी न मिलेगा।"

इसके बाद ज़ालने मन-ही-मन कहा,—"इसमें कोई शक नहीं, कि मेरा यह जवाँमर्द लड़का एक रोज़ मेरे दादा नूरे-ईमानके खूनका बदला वसूल करेगा।"

इसके बाद ज़ालने रुस्तमसे कहा,—"बेटा! आजकी तेरी बहादुरी देखकर मैं निहायत खुश हुआ। आज मुझे इस बातका

यक़ीन हो गया, कि तू मेरे दादाके ख़ूनका बदला बड़ी आसानीसे ले सकेगा। बेटा! उस बातको गुज़रे एक ज़माना हो गया; लेकिन उसकी याद मेरे दिलमें हमेशः ताज़ा बनी रहती है। एक दफ़ेकी बात है, कि मेरे दादा नूरेईमान ईरानके बादशाहके हुक्मसे सेपन्दके पहाड़ी क़िलेको अपने क़ब्ज़ेमें करनेके इरादेसे वहाँ गये। उन्होंने लश्कर लेकर क़िलेको तो घेर लिया; मगर वे उसके दरवाज़ेका पता न पा सके। इसीलिये वे क़िलेके अन्दर घुस, दुश्मनोंको भगाकर, उसपर क़ब्ज़ा न कर सके। एक रोज़ भीतर घिरे हुए सिपाहियोंने क़िलेके बुर्ज़ेपर चढ़कर एक बहुत बड़ा पत्थर लाकर उनके सिरपर गिरा दिया। उसी पत्थरकी चोटसे उनकी जान निकल गयी। जब यह ख़बर मेरे वालिद सामको मिली, तब उन्होंने भी अपने वालिदके ख़ूनका बदला लेनेके लिये उस क़िलेको जा घेरा। इस तरह घेरा डाले हुए उन्हें कई साल गुज़र गये; मगर इसका भी कोई नतीजा न निकला। लाचार, वे लौट आये। दादाके ख़ूनका बदला नहीं वसूल हुआ। मेरे लख्ते-जिगर! आज मुझे ऐसा मालूम पड़ता है, गोया यह काम तेरेही लिये अबतक रुका रहा है। आज मुझे पूरा-पूरा यक़ीन हो गया, कि तू यह काम बड़ी आसानीसे कर सकेगा। इसलिये तू अब ज़रा भी देर न कर और लश्कर लेकर फ़ौरनही सेपन्दकी ओर रवानः हो जा।"

रुस्तम उसी समय सदल-बल सेपन्दकी ओर रवानः हो गया।

# सेपन्द-विजय

जब यह संवाद माज़िन्दरानमें सामके पास पहुँचा, तब वह सुनतेही घबरा उठा। उसने सोचा, कि अभी रुस्तम युद्ध-विद्यामें पूर्णतया निपुण नहीं है, इस लिये उसका अकेला जाना ठीक नहीं। यही सोचकर उसने भी एक बहुत बड़ी सेना ले, सेपन्दकी यात्रा की। वहाँ पहुँचकर रुस्तम और साम अपनी-अपनी सेनाके साथ तीन वर्ष और एक महीनेतक सेपन्दके क़िलेको घेरे पड़े रहे। इस बीच उन्होंने कई बार उस क़िलेको तोड़नेकी चेष्टा की; पर उन्हें प्रत्येक बार विफलताही हाथ आयी। अन्तमें वे वहाँसे लौट आये। उनके लौटनेपर क़िलेका फाटक फिर खुल गया और पहलेकीही तरह आना-जाना और वाणिज्य-व्यवसाय होना आरम्भ हो गया। क़िलेका फाटक खुल जानेकी ख़बर पाकर सामने रुस्तमके पास कहला भेजा, कि अगर तुम बनज--ब्योपारके बहाने व्यापारी बनकर क़िलेके अन्दर घुस सको, तो सारा काम बन जाये।

यह सुनकर रुस्तम तुरतही सेपन्द जानेको तैयार हो गया; पर अब उसके सामने यह समस्या उपस्थित हुई, कि वहाँ किस चीज़का व्यवसायी बनकर जाना चाहिये। उन दिनों सेपन्द-

वालोंको नमककी बड़ी ज़रूरत थी। इसलिये उसने नमक लेकर-ही वहाँ जाना स्थिर किया। ऊँटोंपर नमकके बोरे लादे गये और उन बोरोंके अन्दर ढाल, तलवार तथा और-और तरहके हथियार छिपाकर रख दिये गये। इस प्रकार ऊँटोंपर नमकके बोरे लादकर उसने अपने चुने हुए वीर पहलवानोंको भी साथ ले लिया और सब लोग व्यापारीके वेशमें सेपन्दकी ओर रवानः हो गये। यथासमय वे लोग सेपन्दके क़िलेके दरवाज़ेपर आ पहुँचे।

उनके वहाँ पहुँचतेही सेपन्दके बादशाहको ख़बर मिली, कि एक कारवान बहुतसे ऊँटोंपर नमक लेकर क़िलेके दरवाज़ेपर आया हुआ है। बादशाहने उसी समय उस कारवानको क़िलेके अन्दर चले आनेका हुक्म दे दिया। कारवान क़िलेके भीतर दाख़िल हो गया। लोग नमक लेनेके लिये टूट पड़े—नमककी लूटसी मच गयी। रुस्तम और उसके साथी ख़रीदारोंके हाथ नमक बेचने लगे। उन्हें नमकके बदलेमें अशर्फ़ियाँ, चाँदीके सिक्के तथा बहुमूल्य वस्त्र आदि मिलने लगे। क्रमशः सन्ध्या हुई। नमककी बिक्री बन्द हो गयी। धीरे-धीरे रात्रिका घना अन्धकार पृथ्वीपर चारों ओर फैलने लगा।

कुछ रात बीत जानेपर जब चारों ओर अच्छी तरह अन्धकार-का साम्राज्य छा गया, तब रुस्तम, अपने साथियों सहित हर्बे-हथियारसे लैस हो, क़िलेके अन्दर बने हुए राजमहलकी ओर रवानः हुआ और ललकारकर उसपर धावा बोल दिया। तुरतही क़िलेवालोंको भी इसकी ख़बर हो गयी। क़िलेका कोतवाल

शीघ्रही अपनी सेना लिये रुस्तमके सामने आया और दोनों दल मार-काट करने लगे। गदा, भाला, बर्छी, तलवार और खञ्जर आदि हथियार बेधड़क चलने लगे। अस्त्र-शस्त्रोंकी ध्वनिसे आसमान गूँजने लगा। रुस्तमने एकही हाथमें कोतवालका सिर काट डाला। क्रमशः बहुतसे सेपन्दवाले मारे गये। सारी रात मौतका बाज़ार गरम रहा। सुबहतक लड़ाई होती रही।

सुबहकी सुफ़ेदी फैलतेहो रुस्तमने दुर्ग-स्वामीको सामने पाकर उसे अपनी तलवारके घाट उतार दिया। यह देख, उसके सारे सैनिक भागनेकी तैयारी करने लगे। परन्तु वीर रुस्तमके सामनेसे निकल भागना उनके लिये मुश्किल हो गया। एक-एक करके सभी वीर मारे गये।

सबको ठिकाने लगाकर रुस्तम बादशाहके महलके पास आ पहुँचा। शाही महलकी दीवारें पत्थरकी बनी थीं और उसका दरवाज़ा मज़बूत लोहेका था। शक्तिशाली रुस्तमने उस दृढ़ द्वारको अपने एकही गदाघातसे चूर-चूर कर दिया। इसके बाद वह भीतर घुसा। भीतर जानेपर उसे एक सोनेका बना हुआ मकान दिखाई दिया, जिसमें नाना प्रकारके बहुमूल्य रत्न और आभूषण भरे हुए थे। वे सब रुस्तमके हाथ लगे। इस प्रकार सेपन्दके क़िलेपर अधिकार करके रुस्तने अपने पिता ज़ालके पास इस आशयका एक पत्र लिखा:—

"मेरे नेक वालिद! मैंने सेपन्दके क़िले और इसके तमाम इख़्तोहसीनको अपने क़ब्ज़ेमें कर लिया। इसमें ऐसे-ऐसे

बेश-क़ीमत ज़र-व-जवाहिरात मेरे हाथ लगे हैं, जैसे मैंने पहले कभी देखे भी न थे। अब आप जो इर्शाद करें, उसे बसरो-चश्म बजा लानेको आपका यह फ़र्माबरदार पेसर तैयार है। अगर हुक्म हो, तो मैं वहाँ चला आऊँ या यहीं रह जाऊँ।"

रुस्तमका यह पत्र पढ़कर ज़ाल फूला न समाया। उसने उसी समय रुस्तमकी वीरताकी प्रशंसा करते और उसे आशीर्वाद देते हुए उसके पत्रके उत्तरमें लिखा :—

"मेरे जिगरके टुकड़े! तूने अपनी बहादुरीसे फ़क़त मेरेही दिलको शाद नहीं किया ; बल्कि मेरे दादा नूरेईमानकी रूहको भी खुशी और तसल्ली बख़्शी। तूने इस मसलको सच साबित कर दिया, कि पेदर न तमाम कुनद, पेसर तमाम कुनद—यानी जो काम बाप-दादे न कर सके, उसे बच्चेने पूरा कर दिखाया। अब तेरे वहाँ रहनेकी कोई ज़रूरत नहीं है। तू जल्द उस क़िलेमें आग लगाकर वहाँकी तमाम दौलतको ऊँटोंपर लदवाये हुए यहाँ चला आ। तेरी प्यारी-प्यारी सूरत देखनेके लिये मेरी आँखें तरस रही हैं। जी बेचैन हो रहा है।"

पिताकी आज्ञा पा, रुस्तम रत्नोंसे लदे हुए ऊँटोंको लिये ज़ाबुलिस्तानमें आ पहुँचा। ज़ालने बड़े समारोहसे उसका स्वागत किया और उसका मुँह चूम, उसे गले लगाकर अपना प्यार जतलाया। इस जीतकी खुशीमें सीस्तानमें बड़े जलसे-तवाज़े हुए और ग़रीबोंको खूब धन-दौलत लुटायी गयी।

# रुस्तम और रुस्तम

अपने जीवनके आरम्भमेंही नौजवान रुस्तमने सेपन्द-विजयके अवसरपर जैसी अनुपम वीरता दिखायी, उसे देखकर उसके पिताके आनन्द और उत्साहकी सीमा न रही। उसने बड़ी लगनके साथ रुस्तमको युद्ध-कलाकी विशेष-विशेष बातें बतलानी शुरू कीं। एक तो रुस्तम स्वयंही लासानी वीर था; दूसरे, पिताकी शिक्षाने उसको और भी युद्ध-निपुण बना दिया। कहते हैं, कि इसी प्रकार रुस्तमने अपनी उठती जवानीमेंही अनेक युद्धोंमें सम्मिलत होकर शत्रुओं-के दाँत खट्टे कर दिये थे।

रुस्तमकी एक जीवनीमें लिखा है, कि वह सदा एकही स्थान-पर रहना पसन्द नहीं करता था; अतएव वह प्रायः पार्वत्य-प्रदेशों तथा जङ्गलोंमें भ्रमण किया करता था। किन्तु जब कभी उसके संरक्षक और ईरानके बादशाह 'कैकाऊस'पर उनका शत्रु, तूरान-का शाह, चढ़ आता और उन्हें पराजितकर राज्य-च्युत करने लगता, तभी रुस्तम उपदेवकी भाँति—फ़रिश्तेकी तरह—तत्काल वहाँ उपस्थित हो जाता और अपने प्रबल पराक्रम-द्वारा, शत्रुको परास्त कर अपने बादशाहको बर्बादीसे बचा लेता था।

रुस्तमके पुरुषार्थ और शक्तिके कारण, उस समय, ईरान-देश बड़ाही सुखी हो गया था। राजा-प्रजा सभी, निर्भयता-पूर्वक, बड़ेही अमन-चैनके साथ, अपना-अपना कार्य्य-सम्पादन करते थे। प्रबल आततायियोंसे देश सर्वथा सुरक्षित रहता था। उस समय वहाँ किसी विदेशीकी दाल नहीं गलने पाती थी। ईरानपर चढ़ाई करनेका किसीको स्वप्नमें भी साहस नहीं होता था। लेकिन क़ैकाऊस बड़ेही दुर्बलचित्त, अविचारी और अयोग्य शासक थे। उनकी अविचारिता और उद्दण्डता बराबरही तूरानियोंमें असन्तोष और हलचल पैदा करती रहती थी। इसीसे कभी-कभी, प्रजाके लोग भी नाना प्रकारके उपद्रव करने लगते थे, जिससे क़ैकाऊस कभी शान्तिके साथ राज-सुखोंका उपभोग नहीं करने पाते थे।

हाँ, तो जिन दिनों क़ैकाऊस ईरान-प्रदेशके अधिपति थे, उन दिनों तूरानके नायक 'अफ़रासियाब' थे। यद्यपि अफ़रासियाबके दरबारमें महावीर रुस्तमकी बराबरीका कोई योद्धा नहीं था, तथापि क़ैकाऊसके आचरणसे तङ्ग और कुपित होकर उसे भी कभी-कभी देशमें ऐसी आग भड़का देनी पड़ती थी, जिससे समस्त देशमें घोर अशान्ति फैल जाती थी। वीरवर रुस्तमने तूरानियोंको युद्धमें बहुत बार हराया था ; पर इतना होनेपर भी लड़ाईकी आग कभी समूल नष्ट नहीं हुई। वह अनुकूल परिस्थिति पाकर, प्रायःही, भड़क उठती थी। यद्यपि उस समय इन दोनों प्रदेशोंके रक्त-पातकी चेष्टाको रुस्तमने अपने बाहुबलसे दबा दिया था, तथापि क़ैकाऊसके आचरणोंका स्मरणकर, वीर-शिरोमणि

रुस्तमके हृदयमें बराबरही यह आशङ्का बनी रहती थी, कि यह शान्ति चिरस्थायिनी नहीं है।

पहले कहा जा चुका है, कि अपने पिता और भाईकी तरह, बराबर ईरानमेंही पड़े रहना रुस्तमकी प्रकृतिके प्रतिकूल था। वह एक स्थानपर रहना पसन्द नहीं करता था; किन्तु इधर देशकी अव्यवस्थित परिस्थिति देख, देशके भविष्यकी चिन्तासे, उसका हृदय इतना दुःखित और व्याकुल हो उठा, कि वह वहाँ स्थिर रूपसे नहीं रह सका। अतः वह मनके भारको हल्का करनेके लिये एक दिन सब अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित हो, अपने प्यारे घोड़ेपर सवार हो, अकेलाही शिकार खेलने निकल पड़ा।

रुस्तम जैसा अद्वितीय वीर था, वैसेही, ईरान और तूरानमें, उसके प्रिय अश्व 'रख़्श'के मुक़ाबलेका कोई घोड़ा भी न था। इन प्रदेशोंके निवासी जिस प्रकार रुस्तमको देखकर आश्चर्य्य-चकित हो रहते थे, उसी प्रकार रख़्शका चेहरा-मोहरा भी उन्हें अवाक् कर देता था। रुस्तम और रख़्श, एक दूसरेको प्राणोंसे भी अधिक प्यार करते थे। पशु होकर भी 'रख़्श' मनुष्य जैसाही समझदार और चतुर था। स्वामीकी निगाह देखकरही, वह उसके मनकी बात जान लेता था। साथही अपनी पीठपर प्रभुके सवार होतेही उसका रोम-रोम फड़कने लगता, बदनमें अद्भुत स्फूर्त्ति आ जाती और आगे बढ़नेके लिये वह व्यग्र तथा चञ्चलसा हो उठता था। रख़्शकी गति वायु-वेगसे भी बढ़कर थी। वह छोटे-छोटे पेड़ों, छोटी-मोटी नदियों और

नालोंको बड़ी आसानीसे फाँद जाता था। उसमें अपने स्वामीकीही भाँति निर्भीकता थी। सूअर आदि छोटे-छोटे जानवरोंकी तो बातही क्या है? वह शिकारके समय शेरके मुँहतक पहुँचनेमें भी नहीं हिचकता था। सारांश यह, कि सवारके योग्यही सवारी थी—स्वामीके योग्यही सेवक था।

जिस समय रुस्तमने कैकाऊसका कुशासन देख, अपने देशके भविष्यकी चिन्तासे चिन्तित और दुःखित हो, रख़्शपर सवार होकर, शिकार खेलनेके लिये प्रस्थान किया, उस समय ईरान और तूरान प्रदेशोंमें आन्तरिक द्वेषकी आग भीतर-ही-भीतर सुलग रही थी। हाँ, कहनेके लिये शान्ति अवश्य थी। यद्यपि ईरानके किसी मनुष्यको दलबन्दी कर तूरानमें तथा तूरानवालोंको ईरानमें जानेका साहस नहीं होता था, तथापि दोनों राज्योंके हृदय स्वच्छ नहीं थे।

दोनोंही देशोंके शासकोंको शिकार खेलनेका बड़ा शौक़ था; किन्तु शिकारके लिये उन्हें बाहर जानेकी ज़रूरत नहीं पड़ती थी। कारण, दोनोंही देश पर्व्वत और घने जङ्गलोंसे घिरे हुए थे। दर्याय आमूके दोनों तटोंपर भी घने वन थे, जिनमें अनेक वर्णोंके पशु-पक्षी प्रचुरतासे पाये जाते थे। इसलिये भी उक्त शासकोंको दूसरे देशमें जानेकी ज़रूरत नहीं होती थी।

हाँ, तो महावीर रुस्तम, अपने अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित तथा रख़्शपर सवार हो, शिकार खेलनेके लिये रवानः हुआ। उस समय उसका मन बड़ाही अशान्त और उद्विग्न था। उसके घोड़ेकी

गति मन्द थी। प्रकृतिकी अनुपम शोभासे चारों दिशाएँ हँस रही थीं। रुस्तमका मन वनकी शोभा निरखनेमें इस तरह मग्न हो रहा था, कि उसके सारे पिछले संस्कार स्मृति-पटसे मानों अदृश्य हो गये थे। मानसिक क्षोभ, राज्यके मङ्गलकी चिन्ता और अपने संरक्षककी अयोग्यताका ध्यान एकदम जाता रहा था। साथही, इन सब बातोंके स्थानपर उस समय उसके हृदयमें आनन्दकी अपूर्व स्रोतस्विनी हिलोरें मार रही थी। उस समय उसका मन एकमात्र उसी शोभामें तन्मय हो, वाह्य-जगत्‌के ज्ञानसे बिलकुल-ही अलग होरहा था।

सामनेही आमू-नदी प्रोषित-पतिका, विरह-विधुरा, कृश-गात्रा रमणीकी तरह पृथ्वी-पटलपर पड़ी हुई ऐसी मालूम होती थी, मानों वह, पर्व्वत-खण्ड-रूपी तकियेसे मुँहको छिपाये, वियोगकी असह्य वेदनासे सिसक रही है। ऊपर वन-वृक्षोंकी मनोहर रमणीयता देखनेवालोंका मन अपनी ओर खींचे लेती है। रंग-बिरंगे पक्षियोंका फुदक-फुदककर एक वृक्षसे दूसरे वृक्षकी शाखापर जा बैठना और मधुर स्वरमें चहकना बड़ा भला मालूम होता है। इन प्राकृतिक शोभाओंके अनुपम आनन्दका अनुभव, ऊँची-ऊँची अटारियों या आलीशान महलोंके रहने-वालो तथा जोड़ी, फ़िटन और हवागाड़ीपर बैठकर हवा खाने-वालोंको, कदापि नहीं हो सकता। इस सुषमामय सौन्दर्य्यका यथेष्ट रूपसे रसास्वादन वेही कर सकते हैं, जो प्रकृतिकी रम्य-तटीके निवासी हैं—जो प्रकृतिके सौन्दर्यके सच्चे उपासक हैं।

अब रुस्तमने घोड़ेकी बाग-डोर नदीकी ओर मोड़ी। रख़्श, प्रभुका आदेश पा, तत्काल नदी-तटपर आ खड़ा हुआ। रुस्तम वहाँ आकर चुपचाप घोड़ेकी पीठपर बैठा रहा और ललचायी आँखोंसे, एकटक, उस पारकी शोभा देखने लगा। देर हो गयी; पर वह उसी भावसे प्रकृतिकी सुघराई देखनेमें लीन रहा। उस समय ऐसा जान पड़ता था, मानों उसके नेत्रोंकी प्यास कम नहीं होती; बल्कि उस सौन्दर्य्य-रसका पान करनेके लिये, उत्तरोत्तर बढ़तीही जाती है। कुछ काल इसी भाँति बीत गया। रुस्तम वहाँसे हिलातक नहीं। उसका मन, वन्य-शोभाको और भी समीप जाकर, देखनेके लिये व्याकुल हो उठा। उसे ऐसा मालूम पड़ने लगा, मानों उस वनमें कोई ऐसी सुन्दरता छिपी हुई है, जो दूरसे नहीं देखी जा सकती। अतएव वह, बिना किसी आशङ्काके, नदीको पार कर, सामनेके वनमें जा पहुँचा। वह वन तूरानकी सरहद्पर था।

उस समय दिन ढल रहा था। बहुतसे जङ्गली जानवर स्वच्छन्द भावसे इधर-उधर विचरण कर रहे थे। किन्तु एकाएक, वनमें, घोड़ेकी टापोंका शब्द सुनतेही सब-के-सब मारे डरके जहाँ-तहाँ झाड़ियोंमें जा छिपे। इन सब बातोंकी ओर रुस्तमका ध्यान न था। वह बराबर आगेही बढ़ता चला जा रहा था—मानों लौटनेका ख़यालही भूल गया हो अथवा यों कहिये, कि वन-भ्रमणके मदने उस समय उसे इतना आत्म-विस्मृत कर दिया था, कि वह वहाँसे लौटनाही नहीं चाहता था। परन्तु

सन्ध्या होती देख, उसका वह समाधि-भाव टूट गया और उसके स्थानपर, इस चिन्ताने अधिकार जमाया, कि इस समय यहाँ भोजन कहाँसे मिलेगा ? इस विचारके मनमें उठतेही, वह वहीं खड़ा हो रहा। अभी वह बहुत दूर नहीं आया था—पीछे छूटा हुआ नदीका तट अभीतक स्पष्ट रूपसे दिखाई दे रहा था।

घोड़ेको वहीं खड़ा कर, उसने एक बार चारों ओर दृष्टि दौड़ायी। उसे देखनेसे ज्ञात हुआ, कि जहाँ उसने नदीको पार किया था, उससे हटकर पूरब-पच्छिमकी ओर, नदीके किनारेपरही, हरिनोंका एक झुण्ड खड़ा है। यह देख उसने, उसी ओर जानेके लिये, घोड़ेको इशारा किया। चतुर घोड़ा अपने स्वामी-का इशारा समझकर फ़ौरनही उधर दौड़ चला।

भगवान् भुवन-भास्कर, दिनभरके कठिन परिश्रमसे श्रान्त और क्लान्त होकर,अन्तमें विश्राम करनेके लिये, शीघ्रता-पूर्वक अस्ताचल-की ओर जा रहे थे। दिनभर यात्रा करनेके कारण, वे इतने थक गये थे, कि इस समय उनके चेहरेका रङ्ग एकदम लाल, पर फीका पड़ गया था। अब उनमें वह कुछ देर पहलेवाली ज्योति नहीं रह गयी थी। उनका मुख-मण्डल एकदम शोभा-हीन हो गया था। उनकी लाल-लाल किरणें, आमू-दरियाके स्वच्छ जल तथा वन-वृक्षोंके शिखरोंपर पड़कर अद्भुत आभा विकीर्ण कर रही थीं। उस समय झुण्ड-के-झुण्ड जङ्गली जानवर भी इस सान्ध्य-दृश्यका सुख लूटनेके लिये,अपनी-अपनी जगहोंसे बाहर निकलकर इधर-उधर घूम रहे थे। चिड़ियाँ अपने बच्चोंके साथ, मीठे

सुरोंमें प्रकृति-देवीको प्रसन्न करनेके लिये, गौरी-गान कर रही थीं। सारांश यह, कि उस समय वह सारा वन एक विचित्र प्रकारके कोलाहलसे गूँज रहा था।

ऊपर लिखे हरिनोंके झुण्डमेंसे कुछ तो नदीके किनारे पानी पीने आकर, ऊपर सिर उठाये, चञ्चल दृष्टिसे, इधर-उधर देख रहे थे और कुछ शामकी ठण्डी और सुगन्ध-भरी वायुका सुख लूट रहे थे। साथही थोड़ेसे हिरन, इन सब बातोंकी ओर ध्यान न दे, एक-मनसे, पानीके भीतर घुसकर, जल-पान कर रहे थे। इसी समय एकाएक किसी अनोखी आवाज़ने उन्हें चौंका दिया! वे बेतहाशा छलाँगें मारते हुए इधर-उधर दौड़ पड़े। लेकिन उसी क्षण, एक तीर, बड़ो तेज़ीके साथ आकर, उनमेंसे एक हिरनके बच्चेके हृदयमें घुस गया। तीरके लगतेही वह बेचारा हरिण-शिशु उसी क्षण ज़मीनपर लोट गया और तीव्र वेदनाके मारे छटपटाने और तड़पने लगा।

उस हरिनके तीर लगनेके पलभर बादही, एक बहुतही सुन्दर घोड़ा, अपनी टापोंकी आवाज़से जङ्गलको कँपाता हुआ, अनेक अस्त्र-शस्त्रोंसे सजे हुए एक दीर्घ-काय और महाबली योद्धाको अपनी पीठपर बैठाये तीर-वेगसे वहाँ आ पहुँचा।

हमारे सहृदय पाठक आगन्तुक घोड़े और उसके सवारको सम्भवतः पहचान गये होंगे। यदि अभीतक न पहचान सके हों, तो सुनिये, सवार वही रुस्तम और उसकी सवारीमें उसका वही प्यारा घोड़ा रख़्श था।

रुस्तमने, अपने जीवनके अन्तिम गिने-चुने श्वास लेनेवाले उस हरिण-शिशुको, एक बार लुब्ध-दृष्टिसे देख, घोड़ेकी पीठ ख़ाली कर दी और ज़मीनपर उतरकर बड़े प्यारसे रख़्शके गलेपर कई बार थपकियाँ दीं। घोड़ेने स्वामीके प्यारको बड़े हर्षसे स्वीकार किया और अपनी समस्त क्लान्तिको सार्थक समझ-कर हिनहिनाना शुरू किया।

इसके बाद रुस्तमने फिर प्रसन्न-मनसे अपने शिकारकी ओर देखा और देखनेके साथही उसके होठोंपर हँसीकी रेखा अङ्कित हो गयी। वह धीरे-धीरे शिकारकी ओर बढ़ा और उसका पैर पकड़े, उसे झुलाता हुआ, सामनेके वनमें जा घुसा। रख़्श भी पालतू कुत्तेकी तरह उसके पीछे-पीछे चल दिया।

वनमें कुछ दूर आगे जानेपर, रुस्तमको एक बहुतही रमणीय स्थान मिला। उसमें कितनीही विचित्रताएँ भरी हुई थीं। सामने-ही ऊँचा पहाड़ था, जिसपर हरी-हरी घास उगी हुई थी। वह देखनेमें ऐसी मालूम होती थी, मानों वन-देवियोंके बैठकर गाने तथा परस्पर अठखेलियाँ करनेके लिये प्रकृति-देवीने मख़मली फ़र्श बिछा दिया हो। एक ओर उनके जल-क्रीड़ा करनेके लिये स्वच्छ जलका झरना उमङ्गके साथ मधुर तान अलापता हुआ बह रहा था। झरनेके दोनों ओर पेड़ोंके झुंड इस प्रकार खड़े थे, मानों वन-देवियोंके जल-क्रीड़ा-स्थलकी रखवाली करनेवाले पहरेदार हों। पहाड़के नीचेका भाग भी हरी-हरी दूबोंसे भरा हुआ था। उस स्थानको देखतेही रुस्तमका मन-मयूर मारे आनन्दके नाच उठा।

उसने वहीं, एक वृक्षके नीचे,हरिनको रख दिया और घोड़ेकी ज़ीन उतार, उसकी पीठ ठोंककर बोला,—"प्यारे रख़्श! बस, इस दुनियामें तूही मेरा भाई, दोस्त, ख़ैरख़्वाह नौकर और दिन-रातके तकलीफ़-आरामका साथी है; इसलिये सबसे पहले तेरीही ख़िदमत करना मेरे लिये लाज़िम है। अच्छा, जा, ख़ूब इतमीनानसे इधर-उधर घूमकर अपनी थकावट मिटा और मन-मानी ताज़ा घास खाकर पानी पी ले।"

स्वामीके किये हुए प्यारसे अत्यन्त आह्लादित हो, रख़्श पासही एक जगह चरने लगा। इधर रुस्तम भी अपने खाने-पीनेके प्रबन्धमें लग गया। उसने पहले पेड़ोंकी बहुतसी सूखी डालियाँ तोड़ डालीं; फिर बहुतसे सूखे पत्ते जमा किये और दो बड़े-बड़े पत्थरोंको रगड़कर आग पैदा करली। तदुपरान्त उसने अपनी कमरमें लटकती हुई तलवार द्वारा हिरनकी खाल उतार, उसके मांसको अच्छी तरह आगमें भूना और उसे ही खा तथा झरनेका पानी पीकर भली-भाँति अपनी उदर-पूर्त्ति की।



# रख़शकी चोरी

रुस्तमके भोजनसे निवृत्त होनेके साथही रात्रिने पदार्पण किया ; किन्तु आजकी रातमें उतना घना अन्धकार न था। उजेले पाखका चन्द्रमा धीरे-धीरे मुँह निकालकर, मधुर मुसकानसे, अन्धकारकी हँसी उड़ा रहा था। जो शुभ्र-ज्योत्स्ना वृक्षोंकी पत्तियोंसे छन-छनकर धरातलपर आ गिरती थी, वह ऐसी मालूम होती थी, मानों मख़मलके ऊपर सुनहले तारोंसे मोतियोंके बेल-बूटे कढ़े हों। एक तो रुस्तम दिन-भरका थका हुआ था ही, फिर भोजनके नशेने ज़ोर मारा ; अत: वह उसी प्रभामयी दिगम्बरा वन-भूमिपर, एक वृक्षके नीचे, अपने शरीरसे बिना अस्त्र-शस्त्र उतारेही, लम्बा पड़ रहा। नींदने इस बेरहमीके साथ उसपर आक्रमण किया, कि उसे अपने प्यारे घोड़ेतकका ख़याल न रहा। उसे इस बातका पूरा विश्वास था, कि रख़्श उसे छोड़कर कहीं नहीं जा सकता ; इसीसे वह निश्चिन्तताके साथ सो रहा।

इधर अश्व-श्रेष्ठ 'रख़्श' चरते-चरते रुस्तमसे बहुत दूर चला गया। भूखा होनेके कारण, वन-भूमिकी हरी-हरी घास उसे अमृतसी मीठी मालूम हो रही थी। वह अनुकूल भोजन मिल

जानेसे मस्त होकर चर रहा था। किन्तु थोड़ी देर बादही, उसे एकाएक किसीके पाँवोंकी आहट मालूम हुई। उसके कान खड़े हो गये। वह ऊपरको गरदन उठाकर चकित दृष्टिसे चारों ओर देखने लगा। देखतेही वह भली भाँति समझ गया, कि मामला बेढब है। अतः वह सीधा खड़ा हो गया और अपने स्वामीकी ओर गरदन फेरकर बड़े ज़ोरसे हिनहिनाया; किन्तु उसका स्वामी उस समय बेख़बर सो रहा था। इसलिये उसे कोई उत्तर नहीं मिला। तब वह घोड़ा अपना एक अगला पैर उठाकर बड़े ज़ोरसे पृथ्वीपर पटकने और ज़मीन खोदने लगा।

असल बात यह थी, कि जहाँ रख्श घास चर रहा था, उससे थोड़ीही दूरपर कुछ तूरानी घने वृक्षोंकी आड़में, शायद घोड़ा पकड़नेकेही लिये, ताँतका फन्दा बना रहे थे।

एकने दबी ज़ुबानसे कहा—"ऐसा ख़ूबसूरत और सुडौल घोड़ा तो मैंने आजतक नहीं देखा!"

दूसरा—"लेकिन मैंने तो सुना है, कि सारे ईरान और तूरान मुल्कमें अगर घोड़ा है, तो बस रुस्तमकाही। अगर यह घोड़ा रुस्तमकाही है, तो यहाँ कैसे आया?"

तीसरे मनुष्यने अनमने भावसे कहा—"चाहे किसीका हो और कहींसे आया हो; पर जबतक यह पकड़ा नहीं जायेगा, तबतक मुझे किसी तरह चैन न आयेगा। इसको घर ले जातेही सारे तूरानमें हलचलसी मच जायेगी। शाह अफ़रासियाब जब इस घोड़ेको देखेंगे, तब मारे खुशीके फूले न समायेंगे और हम

लोगोंको इसके लिये उनकी ओरसे कम-से-कम पचास हज़ार रुपया इनाम मिलेगा।"

चौथा,—"और अगर यह रुस्तमकाही घोड़ा हो, तब तो समझ लो, कि हमेशाके लिये तूरानकी ख़ैरियत कूच कर गयी। फिर तो आफ़तही हो जायेगी। पर यार! यह समझमें न आया, कि रुस्तमका घोड़ा यहाँ कैसे आया?"

तीसरा आदमी बोला,—"अरे यार! कहाँकी बात कर रहे हो? अगर हमलोग यों ज़रा-ज़रासी बातसे ख़ौफ खाया करें, तब तो हो चुका! तूरान-भरमें कभी किसीने ऐसा ख़ूबसूरत घोड़ा न देखा होगा। चाहे जो हो, भाई! अगर यह हमारे मुल्कमें रह गया, तो तूरानी सल्तनतके लिये एक बड़े फ़ख्रकी चीज़ होगी। ऐसा बेशक़ीमत हीरा हाथमें पाकर क्या कभी फेंका जाता है? मान लो, कि यह रुस्तमकाही घोड़ा है और किसी तरह यहाँ आ पहुँचा है, तो फिर इसमें डरनेकी क्या बात है? रुस्तमकोही क्योंकर मालूम हो सकेगा, कि हम लोगोंने उसके घोड़ेको चुरा लिया है? मेरी समझमें तो, चाहे जैसे हो वैसे, यह घोड़ा ज़रूर पकड़ लेना चाहिये।"

इस प्रकार निश्चयकर वे लोग रख़शके पास आये। इसके बाद उन्होंने बड़ी फुर्त्तीसे उस ताँतके फन्देको घोड़ेके गलेमें डाल दिया। उस समय रख़श भी इतना गुस्सेमें आ गया, कि फन्देके गलेमें पड़तेही, उसने उसे झटका देकर फेंक दिया और साथही पिछले पैरोंसे इतने ज़ोरसे उन सबको मारा, कि उनमेंसे तीन

आदमी चारों ख़ाने चित् होकर गिर गये और उनके इतनी चोट आयी, कि वे उसी क्षण यम-पुरी सिधार गये।

लेकिन चोरोंकी संख्या भी कम न थी। वे जी-जानसे उसे पकड़नेकी चेष्टा करने लगे; पर उनके लाख यत्न करनेपर भी, रातके तीसरे पहरतक रख़्शने उन्हें अपनी देहको हाथ न लगाने दिया। परन्तु चतुर मनुष्यकी कूट-बुद्धिके सामने, एक पशु कबतक पार पा सकता था? अन्तमें रख़्शको हार माननीही पड़ी। सुबह होते-होते, वह उन लोगोंके चंगुलमें फँसही गया। बचे हुए तूरानी उसे लेकर ख़ुशी-ख़ुशी अपने घरको चल दिये। जाते-जाते भी रख़्श, अपने स्वामीको सूचित करनेके लिये, पुनः एक बार बड़े ज़ोरसे हिनहिनाया।

# तमीनाका स्वप्न

इन दिनों तूरानके अन्तर्गत एक छोटासा राज्य था, जिसकी राजधानी "सामिंगन" थी। हम जिस समयकी कथा लिख रहे हैं, उस समय इस राज्यका शासक 'अफ़रासियाव' था। उसके एक पुत्री थी, जिसका नाम तमीना था। तमीना बड़ी सुन्दरी और गुणवती लड़की थी। उसके रूप और गुणोंकी प्रशंसामें महाकवि फ़िरदौसीने शाहनामेके पन्ने-के-पन्ने रँग डाले हैं। कहते हैं, कि तमीना जैसी अद्वितीय सुन्दरी थी, वैसीही धर्म-परायणा, साधु-शीला, उदार-हृदया और वीर भी थी। ऐसा कोई आदमी न था, जो बचपनमें उसे प्यार न करता हो।

धीरे-धीरे उस राजकुमारीने यौवनमें पदार्पण किया। जवानी-में पैर रखतेही उसके-उस स्वाभाविक सौन्दर्य्यमें और भी कान्ति पैदा हो गयी। अनुपम रूप-छटाने उसकी कीर्त्तिको और भी दिगन्त-व्यापी कर दिया।

इन्हीं दिनों एक अद्भुत घटना घटी। एक दिन रातका समय था। दो पहर बीत चुके थे। आकाशके मध्य-स्थलपर अपना अधि-कार जमाये हुए चन्द्रदेव बाँकी अदासे मुस्करा रहे थे। उनकी उस

हास्यच्छटासे जो श्वेत-कान्ति निकल रही थी, उससे दशों दिशाएँ खिल उठी थीं। सामिङ्गनका राजप्रासाद भी उस शोभामें अपनी शोभा मिलाकर, रात्रिकी रमणीयताको दूना कर रहा था।

तरह-तरहके फूलोंका मधुर पराग चुराकर, मलय-पवन मीठी-मीठी सुगन्ध फैला रहा था। शाहज़ादी तमीना, राजप्रासादके एक सजे हुए कमरेमें रत्न-जटित पलङ्गपर पड़ी, बेख़बरीके साथ सो रही थी। दरवाज़ेके पासही उसकी सारी सेविकाएँ सोयी हुई थीं। एकाएक तमीना नींदसे जगकर पलङ्गपर बैठ गयी और एक बार घबरायी हुई दृष्टिसे चारों ओर देख, फिर उसी तरह सो गयी। उसके इस प्रकार अचानक उठ बैठनेका कारण, एक स्वप्न था। उसने यह सपना देखा था, कि वह अपनी सहेलियोंके साथ, शाहीबाग़में, टहल रही है। बाग़के फाटकपर हरवे-हथियारोंसे सजा हुआ एक पहरेदार पहरा दे रहा है। इसी समय एक बड़ाही रूपवान् पुरुष बाग़के फाटकपर आकर खड़ा हो गया। उसके चेहरेसे अद्भुत ज्योति निकल रही है। वह अनेक प्रकारके अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित है। मालूम होता है, मानों कोई बड़ा भारी वीर हो। युवकने फाटकपर आतेही प्रहरीसे कुछ कड़ककर कहा और तुरतही उसे अधरमें उठाकर ज़मीनपर दे पटका।

स्वप्नकी घटनासे क्षुभित हो तमीना, सहसा घबराकर निद्रितावस्थासे उठ बैठी और पुनः सो गयी थी। सोनेके कुछ देर बाद, उसने फिर वही सपना देखना शुरू किया। अबके उसने देखा, कि युवक पहरेदारकी टाँग पकड़, उसे घसीटता हुआ बाग़के भीतर

लाया और पासकेही एक वृक्षमें बाँध दिया। इसके बाद वह बाग़के अन्दर घुसा। उसे देखतेही तमीनाके साथकी सब सखियाँ, तमीनाको अकेली छोड़कर, भाग गयीं। लेकिन तमीना अपने स्थानसे ज़रा हटकर एक वृक्षकी आड़में छिप रही और ग़ौरसे उस युवकको देखने लगी। युवक उस बाग़में किसीको न देख, कुछ देरतक किसीको खोजता रहा। फिर वह तमीनाकी ओर मुड़ा। तमीना उस समय एक वृक्षकी आड़में खड़ी हो, एकटक उसकी ओर देख रही थी। युवकने उसे देख लिया और लपका हुआ उसके पास आ पहुँचा। पास आकर उसने पूछा,—"माहेरू! तुम कौन हो? यहाँ किस लिये अकेली खड़ी हो?"

तमीनाने जवाब दिया—"मैं यहाँके बादशाहकी लड़की हूँ और बाग़की सैरके लिये आयी हूँ।"

यह सुनकर वह मनुष्य बाग़के फाटककी ओर बढ़ा और ग़ायब होगया। उसके ग़ायब होतेही तमीना चौंककर उठ बैठी और पहलेकी भाँति भौंचकसी हो, आँखें फाड़-फाड़कर चारों ओर देखने लगी। दरवाज़ेपर बाँदियाँ उस वक्त भी नींदमें बेहोश पड़ी हुई थीं। तमीनाका दिल बेतरह धड़क रहा था। वह कुछ देरतक कुछ भी नहीं समझ सकी, कि मामला क्या है? अभीतक उसका मन उसी वीर योद्धाके ध्यानमें लगा हुआ था। उसकी आँखोंके सामने अभीतक उसीकी मनोहर मूर्त्ति विराजमान थी। कुछ देर बाद, मन शान्त हो जानेपर, उसने अपनी बाँदियोंमेंसे एकको जगाया। बाँदी, "क्या है? क्या है?" कहती हुई उठ बैठी और

एक गहरी जमुहाई लेकर फिर सो रही। किन्तु तमीनाने उसे फिर जगानेकी चेष्टा नहीं की। वह भी पलङ्गपर लेटकर, फिर सोनेकी चेष्टा करने लगी ; पर नींद नहीं आयी ; क्योंकि उसका मन अभीतक क़ाबूमें नहीं था। वह तो बाग़के उस अतिथिकाही चेला बना हुआ था। इसीसे उसने, अन्तकी सारी रात, करवटेंही बदलते-बदलते बिता दी।

प्रातःकाल हुआ। सूर्य्योदय होते देख, सभी लोग अपने-अपने बिस्तरेसे उठकर अपने दैनिक कार्य्योंको करने लगे। तमीना भी प्रतिदिन बड़े तड़के उठा करती थी ; किन्तु उस दिन, उसे ज़ियादः देरतक सोते देख, उसकी माताने बाँदियोंसे उसके अबतक सोये रहनेका कारण पूछा।

बाँदीने बड़े अदबसे कहा,—"हुज़ूर! मैंने तो शाहज़ादीको ठीक वक्त़पर जगा दिया था। लेकिन न मालूम क्यों, वे अबतक बिस्तरेपरही पड़ी हुई हैं।"

यह सुन, उसकी माँ यानी बेगम स्वयं तमीनाके कमरेमें गयीं और बाहरसेही "तमीना! तमीना!" पुकारती हुई उसके पास आ खड़ी हुईं। माताको देखतेही, तमीना शय्यासे उठ बैठी! बेगमने, बड़े प्यारसे उसकी पीठपर हाथ फेरते हुए, उसके देरसे उठनेका कारण पूछा। तमीनाने सिर-दर्दका बहानाकर बातको योंही टाल दिया और झट नित्यके आवश्यक काम करनेके लिये वहाँसे चल दी। जब कुछ देर बाद वह स्नान-ध्यानसे निपटकर शयनागारमें आयी, तब वहाँ उसने अपनी

बाल्य-सहचरी हमीदाको बैठे पाया। हमीदाने आज अपनी सखीके हाव-भाव, अलसाये बदन तथा मलिन मुखको देखकर, उससे इसका कारण पूछा। तमीनाने असली बातको छिपानेके लिये बहुत कुछ बहाने किये ; पर चतुर हमीदाको उनमेंसे एकपर भी विश्वास न हुआ। अन्तमें हमीदाके बहुत कुछ कहनेपर, तमीनाने रातके स्वप्नकी सारी घटनाएँ उसको कह सुनायीं।

सुनकर हमीदा कुछ देरतक चुप बैठी रही। अनन्तर बोली—"शाहज़ादी! आपने जो सपना देखा है, वह कभी ग़लत न होगा। मेरा दिल गवाही दे रहा है, कि वह एक-न-एक दिन ज़रूर सच होगा। इसलिये आप चुपचाप रहें ; घबरायें नहीं ; क्योंकि इस तरहके सपने अक्सर ठीक हुआ करते हैं।"

इसी प्रकार हमीदाने,शाहज़ादीको अनेक प्रकारके प्रबोध दिये।

* * * * *

उक्त घटनाको हुए बहुत दिन बीत चुके। इस अर्सेमें तमीना पूरी जवान हो गयी थी। उसके हरएक अङ्गसे यौवन फूट-फूटकर बाहर निकल रहा था। इसीसे उसके माता-पिता उसकी शादीकी फ़िक्र कर रहे थे; किन्तु तमीनाको उनकी यह चेष्टा अच्छी नहीं मालूम होती थी। उसने एक दिन रातको जो स्वप्न देखा था, उसने उसके सारे सुखोंको नष्ट कर दिया था। वह उसी दिनसे, हरदम उसी स्वप्नमें देखे हुए युवकके ध्यानमें डूबी रहती थी। उसने अपने मनकी बातको आजतक बड़ी चतुराईसे मनमेंही छिपा रखा था। एक हमीदाही ऐसी थी, जिसने चालाकीसे मालूम

कर लिया था। इसीसे उसके माता-पिताने उसकी शादीके लिये जो नवीन प्रबन्ध किया था, उससे उसकी शान्ति न हुई ; वरन् जलती आगमें और भी घी पड़ गया ! उसकी रही-सही सुखाशा-पर तुषार-पात हो गया उसने उसी समय प्रण कर लिया, कि यदि मैं विवाह करूँगी, तो उसी सपनेमें देखे हुए युवकके साथ ; अन्यथा जीवनभर, योंही, अविवाहित रहूँगी !

जिस समयकी यह बात है, उस समय तमीनाके रूप और सौन्दर्यकी चर्चा सारे तूरान-देशमें फैल चुकी थी। उसकी शादीकी ख़बर पातेही, तूरानभरके वीर, पहलवान, अमीर और उमराव उससे शादी करनेके लिये लालायित होकर अफ़-रासियाबके दरबारमें आने लगे ; परन्तु तमीनाने उन लोगों-मेंसे किसीके साथ शादी करना मंज़ूर नहीं किया। इसपर उसके माता-पिताने भी कुछ आपत्ति नहीं की ; क्योंकि वे अपनी पुत्रीको इतना अधिक प्यार करते थे, कि उसकी मर्ज़ीके खिलाफ़ कुछ करना, उनके लिये असम्भवसा था।

# अनुसन्धान

पाठकोंको याद होगा, कि जिस समय तूरानो चोर रख़्शको लेकर अपने घरको चले, उस समय रख़्श अपने स्वामीको जगानेके उद्देश्यसे बड़े ज़ोरसे हिनहिनाया था। रुस्तम, उसी हिनहिनाहटको सुनकर, जाग पड़ा। उस समय उषाकी नवीन छटा आकाशको उज्ज्वल कर रही थी। उठकर बैठतेही रुस्तमकी नज़र पेड़के नीचे पड़े हुए घोड़ेके साज़पर पड़ी। वह विस्मयसे बोला—"यह क्या? रख़्श अभीतक क्यों नहीं लौटा?"

प्रिय पाठकगण! रुस्तमके घोड़ेको, स्वामीके साथ ऐसा प्रेम हो गया था, कि वह बिना रुस्तमके एक क्षण भी नहीं रह सकता था। घरकी तो कोई बातही नहीं; परदेशमें भी वह खानेके सिवा और किसी समय उससे अलग नहीं होता था। सारांश यह, कि उसका वह घोड़ा घोड़ा नहीं, वरन् ख़ासा पहरेदार था। पर आज यह कैसे अचरजकी बात हुई? रख़्श सही-साँझही घास चरने गया था। घास चरनेके लिये ज़ियादः-से-ज़ियादः दो घण्टे काफ़ी थे। पर अब तो सवेरा हो गया! इस वक़्ततक तो उसे लौटही आना चाहिये था।

रुस्तमको बड़ी चिन्ता हुई। उसने बड़े ज़ोरसे चिल्लाकर पुकारा,—"रख़्श! रख़्श! तुम कहाँ हो?"

पहले स्वामीका शब्द सुनतेही रख़्श, जहाँ कहीं रहता, वहाँसे हिनहिनाता हुआ दौड़कर, उसके पास चला आता था; लेकिन इस समय आना तो दूर रहा, उसने शब्दतक नहीं किया। इससे रुस्तम बड़े आश्चर्य्यमें आया! यह अघटित घटना देख, वह शीघ्रता-पूर्वक उठ खड़ा हुआ। उसे आशङ्का हुई, कि रख़्श शायद किसी बड़ी भारी विपत्तिमें पड़ गया है। वह बड़ा अधीर हुआ और बार-बार "रख़्श! रख़्श!" कहकर, ज़ोर-ज़ोरसे, उसे पुकारने लगा। उसके पुकारनेका शब्द इतना भयानक और इतना ऊँचा था, कि उससे सारा वन एकबारगी काँप उठा।

यद्यपि उषाने सूर्य्योदय होनेकी ख़बर चारों तरफ़ फैला दी थी; तथापि वनके घने स्थानोंमें, बड़े-बड़े वृक्षोंकी आड़में, अभीतक अन्धकारका राज्य फैला हुआ था। रुस्तमकी आवाज़ने मानों उसे भी कँपा दिया। जो चिड़ियाँ अपने घोसलोंमें आराम कर रही थीं, वे भी भयभीत हो, चें-चें करने लगीं। जानवरोंके छोटे-छोटे बच्चे अपनी माताओंकी छातियोंसे जा लिपटे; किन्तु इतना होनेपर भी रख़्श नहीं आया। यह देखकर रुस्तमको पूर्ण विश्वास हो गया, कि रख़्श निश्चयही किसी-न-किसी विपत्तिके जालमें फँस गया है। वह, घबराया हुआ, उसकी खोजमें चल पड़ा।

जिस समय तूरानी चोरोंने, रख़्शको पकड़नेके लिये, पीछेसे उसके गलेमें फन्दा डाला था, उस समय घोड़ा बेतरह बिगड़ उठा

था। उसने अपनी दुलत्तियोंसे उस वक़ कई चोरोंको ज़मीन दिखा दी थी। कई बुरी तरह घायल हो गये थे और घायल होकर उन्होंने सारी रात बेहोशीकी हालतमें बितायी थी। जब सुबहकी ठण्डी हवाने बिछौनोंपर सोये हुए प्राणियों और घोंसलोंमें आराम करनेवाले पक्षियोंको जगा दिया,तब उन चोरोंकी भी बेहोशी दूर हुई। वे उठकर बैठ गये; लेकिन अभीतक उनके शरीरमें चलने-फिरनेकी शक्ति नहीं आयी थी। रात-भरकी बेहोशीने उनकी पुरानी याददाश्तको भुला दिया था। अभीतक उन्हें इस बातका ज्ञान नहीं हो पाया था, कि वे यहाँ किस तरह आये; किन्तु सवेरेके शीतल समीरसे क्रमशः उनके शरीरकी पीड़ा दूर हुई। उन्होंने एक बार चारों ओर दृष्टि पसारकर देखा,तो पासमेंही उनका एक साथी मरा हुआ दिखाई दिया। उसको देखतेही उन्हें बीती हुई सभी बातें याद हो आयीं। उन्होंने एक बार परीक्षार्थ उसके बदनपर हाथ रखा; पर वह ठण्डा हो चुका था! अतएव वे उससे निराश होकर, अब घर चलनेकी तैयारी करने लगे। इसी समय उन्हें रुस्तमके "रख़्श! रख़्श!" पुकारनेकी आवाज़ सुनाई दी। वह आवाज़ सुनतेही, उन्हें तो काठ मार गया; क्योंकि ऐसी भयानक आवाज़ उन्होंने ज़िन्दगी-भरमें कभी नहीं सुनी थी।

एकने घबराये हुए स्वरमें कहा,—"भाई शमशीर! ऐसी ख़ौफ़नाक आवाज़ कहाँसे सुनाई दे रही है? इस बियाबान जङ्गल-में, इतना सवेरे कौन आ गया? और वह किसे पुकार रहा है?"

शमशीरने जवाबमें कहा,—"भाई अहमद ! मामला तो बड़ाही बेढङ्गा दिखाई दे रहा है ! यह आवाज़ तो कुछ-कुछ पहचानीसी मालूम हो रही है ! कहीं पुकारनेवाला रुस्तम तो नहीं है ? अरे यार ! कहीं वह घोड़ा रुस्तमकाही तो नहीं था ?"

अहमद,—"मैं तो तुम लोगोंसे पहलेही कह रहा था, कि यह घोड़ा रुस्तमके सिवा किसी दूसरेका नहीं है ; इसे मत पकड़ो ; लेकिन तुम लोगोंने उस वक्त मेरी एक भी न सुनी। अब अगर रुस्तमको किसी तरह मालूम हो गया, कि उसका घोड़ा तूरानकेही आदमी चुराकर ले गये हैं, तो अभी क़यामत बरपा हो जायेगी। दो-चार आदमियोंके कियेका कड़वा नतीजा तूरान-भरको भुगतना पड़ेगा। अब ख़ुदाही ख़ैर करे, तो हमारी जानें बच सकती हैं !"

इसी समय रुस्तमने अपने घोड़ेका नाम लेकर फिर पुकारा। इससे शमशीर और अहमद, वहाँ ज़ियादः देर ठहरना ख़तरनाक समझ, जल्दी-जल्दी पाँव बढ़ाते हुए, एक ओर चल दिये।

अभी वे कुछही दूर आगे बढ़े थे, कि किसीने पीछेसे आवाज़ दी,—"यह कौन ज रहा है? ठहरो।"

इस आवाज़ने तो उनके और भी छक्के छुड़ा दिये। उन्होंने पीछेकी ओर मुँह फेरकर जो कुछ देखा, उससे उनकी जानें सूख गयीं। काटो, तो बदनमें ख़ून नहीं। मानों लकवा मार गया हो। वे लाचारसे होकर वहीं खड़े हो रहे। कुछही क्षण बाद उन्होंने देखा, कि एक दीर्घ-काय योद्धा, अस्त्र-शस्त्रोंसे सजा, रुद्र-रूप धारण किये, उनकी ओर बड़ी तेज़ीसे चला आ रहा है।

रुस्तमके नज़दीक आनेपर, चोरोंने अपने धड़कते हुए दिलको मज़बूत किया। वे निर्भीकसे बनकर खड़े-खड़े उसके निकट आनेकी प्रतीक्षा करने लगे। यह मानी हुई बात है, कि मनुष्य तभीतक विपदसे डरता रहता है, जबतक वह उससे दूर रहती है ; किन्तु जब वह सिरपरही आ घहराती है, तब मनुष्य सब तरहसे लाचार हो, उससे लड़नेके लियेही तैयार हो जाता है। वह सोचता है,कि सम्भव है,मैं इससे किसी तरह पार पाजाऊँ। यही बात ठीक-ठीक शमशीर और अहमदके सम्बन्धमें भी हुई। पहले तो वे रुस्तमकी केवल आवाज़ सुनकरही डर गये थे ; पर अब शरीरमें कुछ साहसका सञ्चार हो जानेके कारण, साक्षात् यमके समान रुस्तमसे भी अभय हो गये।

रुस्तमने आतेही उनसे पूछाः—"तुम कौन हो ?"

शमशीरने कहा,—"ऐ बहादुर ! हमलोग पासवाले शहरके बाशिन्दा हैं। इस वक्त हम, हवाख़ोरीके लिये, यहाँ आये हुए हैं।"

रुस्तम,—"तुम लोगोंके नाम क्या हैं ?"

अहमद,—"हमारे नाम जानकर आप क्या करेंगे ? आपसे हमारी कोई पहलेकी मुलाक़ात तो है नहीं, कि आप नाम सुनकर हमें पहचान लेंगे ?"

रुस्तम,—"अच्छा, यह कौनसा सूबा है ?"

अहमद,—"यह तूरानी सल्तनत है। "

तूरानका नाम सुनतेही रुस्तमको बड़ा आश्चर्य्य हुआ। उसने फिर पूछा,—"अच्छा, तुम्हारे शहरका नाम क्या है ?"

शमशीर,—"सामिङ्गन।"

रुस्तमने इस बार कुछ नम्र स्वरमें कहा,—"भाई! मैं एक मुसाफ़िर हूँ। कल रातको मैंने इसी जङ्गलमें अपने घोड़ेको चरनेके लिये छोड़ दिया था; लेकिन सारी रात गुज़र जानेपर भी, वह अभीतक नहीं लौटा। क्या तुम लोगोंने उसे कहीं देखा है?"

अहमद—"नहीं, जनाब! हमलोगोंने कोई घोड़ा नहीं देखा।"

इतना कह और रुस्तमके उत्तरकी कुछ प्रतीक्षा न कर, शमशीर और अहमद, लम्बा-लम्बा डग बढ़ाते हुए, चल दिये।

रुस्तमने उनके इस प्रकार जानेमें कोई बाधा नहीं डाली; पर उनकी इस हरकतपर उसे बेहद गुस्सा आया। उसने मन-ही-मन कहा,—"ये कैसे बेवक़ूफ़ हैं। इन्होंने मुझे सलामतक नहीं किया! उलटा-सीधा जवाब देकर, उल्लूकी तरह चल दिये। क्या यहाँके बाशिन्दे रुस्तमको नहीं पहचानते? ख़ैर, अभी तो इन सबसे पीछे निपटा जायेगा। पहले तो मैं यह चलकर देखूँ, कि मेरा रख़्श किधर गया।"

इतना कहकर रुस्तम उसी ओर चल दिया, जिधरसे उसने शमशीर और अहमदको आते देखा था। उस वक़्त चारों तरफ़ काफ़ी उजेला हो चुका था। जङ्गलकी सभी चीज़ें साफ़ दिखाई देने लगी थीं। चलते-चलते रुस्तम क्रमशः वहाँ पहुँचा, जहाँ तूरानी चोरोंने, रात-भरके अविराम परिश्रमके बाद रख़्शको पकड़ा था। वहाँ पहुँचकर उसने देखा, कि कुछ दूरतककी लम्बी-लम्बी घास, छोटे-छोटे पेड़ोंके पौधे और सिवारके झूँड़ मनुष्योंके

पैरोंसे रौंदे गये हैं। कुछ दूरपर एक आदमी भी मरा पड़ा है। यह सब देख, रुस्तम आश्चर्य्यसे चौंक पड़ा। वह शीघ्रता-पूर्वक उस मरे हुए आदमीके पास आया और उसे एक बार हिला-डुलाकर देखा। इसके बाद उसे वहाँ घोड़ेके खुरोंके निशानोंके अलावा, कई आदमियोंके पैरोंके चिह्न भी दिखाई पड़े। इन सब निशानोंको देखकर रुस्तमको यह समझते देर न लगी, कि उसके प्यारे घोड़ेको किसीने चुरा लिया है और चुरानेवाला कोई तूरानीही है।

यह सोचतेही रुस्तमको बेहद गुस्सा चढ़ आया। उसकी आँखोंसे आगकी लपटें निकलने लगीं। उसे विश्वास हो गया, कि अभी-अभी मैंने जिन दो आदमियोंको सामिंगनकी ओर जाते देखा है, वही मेरे घोड़ेके चोर हैं।

एकबार उसके जीमें आया, कि वे अभी ज़ियादः दूर न गये होंगे, जाऊँ—अभी दौड़कर उन्हें पकड़ लूँ; परन्तु पीछे यह ख़याल कर, कि यदि वेही चोर होते, तो उनके साथ घोड़ा भी होता, वह रुक गया। उसने अब फिर घोड़ेके निशानोंको एकबार ग़ौरसे देखा; अनन्तर उन्हींके सहारे आगे बढ़ चला।

यद्यपि दिनका पहलाही पहर था, तथापि प्रचण्ड मार्त्तण्डकी तीखी किरणें चारों ओर आग बरसा रही थीं। धूपके मारे खोपड़ी जली जाती थी। पैर झुलसे जाते थे; पर रुस्तम अपनी धुनमें मस्त चला जाता था। धीरे-धीरे वह सामिङ्गनके समीप जा पहुँचा।



# राज-अतिथि

खामिङ्गन तूरानके अन्तर्गत एक छोटेसे राज्यकी राजधानी थी। इस नगरकी रमणीयता और कमनीयता देखनेही योग्य थी। नगरके चारों ओर, क़िलेकी रक्षाके लिये, बड़ी गहरी खाई खुदी हुई थी, जिसमें हर वक़्त सुन्दर और साफ़ पानी भरा रहता तथा नाना भाँतिके कमल खिले रहते थे। खाईका जल फूल-पत्तियों और तरह-तरहकी घासोंसे ढका रहता था। कोई उसे देखकर इस बातका अनुमान नहीं कर सकता था, कि उसमें अगाध जल भरा होगा। क़िलेके भीतर, जगह-जगह, फूलवाले वृक्षोंकी वाटिकाएँ थीं। उनमें गुलाब, चम्पा, जूही, केवड़ा, मौलसिरी और केतकी आदिके फूल अपनी भीनी-भीनी सुगन्धसे आगन्तुकोंका मन बरबस अपनी ओर खींच लेते थे। मेवोंकी भी कमी नहीं थी। मेवेके पेड़ोंसे बाग़का कोना-कोना भरा हुआ था। नगरकी एक ओर सैनिकोंके रहनेके लिये, ख़ूबसूरत छावनी बनी हुई थी। छावनीके सामनेही तालाब और पुष्पोद्यान थे। नगरके बीचमें लम्बी-चौड़ी सड़कें थीं, जिनके दोनों तरफ़ आलीशान मकान गर्वसे

सिर ऊँचा किये, अपनी शानमें फूले नहीं समाते थे। क़िलेके सबसे पिछले हिस्सेमें राजमहल, गर्वसे अपना मस्तक ऊँचा किये, खड़ा था। कहनेका मतलब यह, कि सामिंगन-नगर सचमुच बड़ाही सुन्दर था।

जिस दिन रुस्तम उस नगरमें पहुँचा, उस दिन किसी आवश्यक विषयपर विचार करनेके लिये बादशाहने एक बहुत बड़ा दरबार किया था। बड़े-बड़े मन्त्री और सामन्त दरबारमें उपस्थित थे। सभी अपने-अपने काममें लगे हुए थे। कोई काग़ज़ लिख रहा था, कोई किसी मामलेमें वज़ीरोंसे सलाह-मशवरः कर रहा था। बादशाहकी सवारी अभी हालही आयी थी। वे अभी महलोंसे आकर सिंहासनपर बैठेही थे, कि एक चोबदार दौड़ता-हाँफता हुआ दरबारमें आ पहुँचा। उसकी घबरायी हुई सूरत देखतेही दरबारी लोग अचम्भेमें आ गये।

चोबदारने आतेही, बादशाहको कोर्निश कर, भर्रायी हुई आवाज़में कहा,—“जहाँपनाह! आज न मालूम क्यों, ईरानका मशहूर पहलवान रुस्तम यहाँ आ पहुँचा है। इस वक़्त वह बहुतही मामूली लिबासमें है। पासमें कोई सवारीतक नहीं है। मैंने उसे दूरसेही आते देख, हुज़ूरको इसकी ख़बर दे देना मुनासिब समझा।” रुस्तमका नाम सुनतेही सारे दरबारमें सन्नाटा छा गया। सबके चेहरेपर हवाइयाँ छूटने लगीं। सब लोग आपसमें कानाफूसी करने लगे;—“भाई! आज रुस्तम यहाँ किस लिये आया? वह तो बड़ाही ख़ौफ़नाक आदमी है। उसका यहाँ इस

तरह एकाएक चला आना, तो किसी आनेवाली बलाकाही पता बतलाता है । बड़ी मुश्किल हुई !"

बादशाहको भी बड़ा भारी भय हुआ ; क्योंकि वे भी कई बार लड़ाईके मैदानमें रुस्तमका लोहा मान गये थे। उन्होंने सोचा, कि रुस्तमके आनेके पहलेही दरबार बर्ख़ास्त कर देना चाहिये ; लेकिन फिर तुरतही उनको यह ख़याल आया, कि ऐसा करनेसे शीघ्रही सारे शहरमें खलबली मच जायेगी और फिर न मालूम इसका क्या नतीजा हो। यही सब सोच-विचार कर, वे दिल कड़ा किये, चुपचाप बैठे रहे।

थोड़ी देर बाद उन्होंने दरबारियोंसे कहा,—"भाइयो ! इस तरह रुस्तमका एकाएक पाँव-प्यादे यहाँतक आना, तो बिलकुलही हैरतमें डाल देनेवाली बात है। मैंने लाख सोचा, मगर इसकी कोई वजह नहीं दिखाई दी। ख़ैर, मुझे तो इस वक़्त यही मुनासिब मालूम होता है; कि हमलोग उसके आनेके पहलेही उसके इस्तक़बालके लिये जा पहुँचें और उसे बड़ी ख़ातिरके साथ यहाँ ले आयें ।"

यह कह, बादशाहने ख़ास-ख़ास राजकर्म्मचारियों और सैनिकोंको आज्ञा दी, कि वे उनके साथ-साथ रुस्तमकी अगवानी करनेके लिये चलें। आज्ञानुसार सब लोग बादशाहके साथ-साथ चल पड़े। जब वे लोग शहरसे एक मील दूर, शहर-पनाहके पास पहुँचे, तब उन्हें दूरसेही रुस्तम आता दिखाई दिया। रुस्तमने भी वहींसे उन लोगोंको देखा। उनपर दृष्टि पड़तेही रुस्तमकी

भौंहें चढ़ गयीं। एक तो उसे पहलेसेही इस बातका सन्देह था, कि उसका घोड़ा यहाँके बादशाहकेही इशारेसे चुराया गया है ; अबके बादशाहके साथ-साथ इतने आदमियोंको अपनी ओर आते देख, उसका यह सन्देह और भी पक्का हो गया। एक तो अपने प्यारे घोड़ेके चोरी चले जानेसे वह आपही जला-भुना हुआ था ; दूसरे, बादशाहको लड़ाईके सामानसे लैस होकर आते देख, उसका क्रोध सीमाको पार कर गया। वह बड़ी तेज़ीसे बादशाहका सामना करनेके लिये आगे बढ़ा।

एकाएक उसका यह बदला हुआ तौर देखकर बादशाह और उनके सङ्गी-साथी बड़े सन्देहमें पड़ गये। थोड़ीही देरमें रुस्तम उनके पास आ गया। उसे देखतेही सामिङ्गन-पतिने उसे अदबके साथ झुककर सलाम करते हुए कहा,—"ऐ बहादुर! मैं आपके यहाँ तशरीफ़ लानेकी ख़बर पातेही आपकी क़दमबोसीके लिये हाज़िर हुआ हूँ। अब आप बराहेमिहबानी यह फ़र्मायें, कि हुज़ूरने किस लिये इस नाचोज़के ग़रीबख़ानेको रौनक़-अफ़रोज़ करनेकी तकलीफ़ गवारा की? किस लिये बन्देपर यह नज़रे-इनायत हुई? ज़हे-नसीब, जो आज आपकी ख़िदमत करनेका मुझे मौक़ा हाथ लगा। चलिये, तशरीफ़ ले चलिये, इस ग़रीबकी मिहमानदारी कुबूल कीजिये।"

रुस्तम मारे क्रोधके आग-बबूला हो रहा था। क्रोधमें सीधी बातका भी उलटाही मतलब सूझता है। इसी लिये रुस्तमने बादशाहकी इन विनय-भरी बातोंको भी चालबाज़ीसे भरा हुआ

समझा। उसने बड़ीही रुखाईके साथ कहा,—"माफ़ कीजिये, मैं इस वक़ आपकी मिहमानदारी कुबूल करने नहीं आया। आपकेही किसी ख़ास आदमीने या रियायाने मेरा प्यारा घोड़ा चुरा लिया है। मैं उसीकी तलाशमें आया हूँ। घोड़ेके खुरोंका निशान देखता-देखता मैं यहाँतक चला आया हूँ। इसलिये, मुझे पूरा यक़ीन है, कि वह चोर इसी रियासतके अन्दर आया है। अब अगर आप अपनी और अपनी सलतनतकी ख़ैर चाहते हैं, तो जल्द मेरे घोड़ेको ढुँढ़वा मँगवाइये; वरना याद रहे, मैं इस सारी सलतनतको ख़ाकमें मिला दूँगा।"

बादशाहको यह बात अच्छी तरह मालूम थी, कि रुस्तम अपने घोड़ेको जानसे भी बढ़कर प्यार करता है। अपनी प्यारी चीज़के खो जानेपर सभीको बड़ा भारी दुःख होता है। उस समय आदमीके क्रोधका ठिकाना नहीं रहता। यही सोचकर, बादशाहने कहा,—"आपके घोड़ेके चोरी चले जानेका हाल सुनकर मुझे निहायत अफ़सोस हुआ। और यह मालूम कर, कि यह हरकतेबेजा मेरीही किसी रियायाकी तरफ़से हुई है, मैं और भी शर्मिन्दः हुआ। ख़ैर, फ़िलहाल तो आप मेरे ग़रीबख़ानेपर तशरीफ़ ले चलें और थोड़ी देर आराम करें। इसके बाद मैं आपके घोड़ेकी तलाशमें अपने आदमियोंको रवानः करूँगा और चोरके पकड़े जानेपर उसे काफ़ी सज़ा दूँगा। आप मेरी बातोंपर यक़ीन करें—मुझे अपनाही समझें।"

अबके रुस्तमका क्रोध कुछ ठण्ढा हुआ। अपनी उद्दण्डताके

बदलेमें बादशाहको नम्रता और उदारता देखकर उसका दिल पिघल गया—शर्म और पछतावेके मारे उसकी गरदन झुक गयी। सच पूछो, तो नम्रता ऐसाही गुण है, जो कठोरसे कठोर व्यक्तिको भी मोमकी तरह पिघला देता है।

रुस्तमको सिर झुकाये चुपचाप खड़ा देखकर बादशाहने कहा,—"शेरदिल बहादुर! आप चुपचाप खड़े क्या सोच रहे हैं? चलिये, मेरी मिहमानी कुबूल कीजिये। पहले रास्तेकी थकावट दूर कीजिये, इसके बाद और कुछ कीजियेगा। मैं सच्चे दिलसे आपसे वायदा करता हूँ, कि फ़ौरनही आपके घोड़ेकी खोज-पड़तालके लिये मैं अपने जासूसोंको रवानः करूँगा। इस वक्त रास्तेकी थकावट और वहमने आपको परेशान कर रखा है। थोड़ी देर आराम कर लेनेके बाद मैं आपकी सारी दास्तान बड़े ग़ौरसे सुनूँगा और आपके घोड़ेको बड़ीही मुस्तैदीसे ढुँढ़वाकर आपके हवाले करूँगा।"

अब तो रुस्तमसे अस्वीकार करते नहीं बना। वह उसी समय बादशाहके साथ-साथ सामिङ्गनकी ओर चल पड़ा। उस समय बादशाह उसकी बायीं तरफ़ था।

रुस्तम यही पहले-पहल सामिङ्गन आया था। हम पहले कह आये हैं, कि उस ज़मानेमें यह नगर शोभा और सौन्दर्यमें अपना सानी नहीं रखता था। रुस्तमने ज्योंही क़िलेके भीतर पैर रखा, त्योंही उस नगरकी शोभा और सजावटने बरबस उसका मन अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। जैसे-जैसे वह नगरके भीतर

प्रवेश करता जाता था, वैसेही-वैसे उसकी थकावट वहाँकी सुन्दरता देख-देखकर दूर हुई जाती थी। दिलकी कली खिली जाती थी। शाही महलके पास पहुँचते-पहुँचते तो उसकी सारी क्लान्ति एकबारगी मिट गयी।

बादशाहने पहलेसेही एक सवारको भेजकर रुस्तमकी ख़ातिर-तवज्जहका सारा इन्तज़ाम करा रखा था। उस ख़ातिरको देखकर रुस्तमका जी बड़ाही ख़ुश हुआ। उसका दिल बादशाहकी तरफ़से बिलकुल साफ़ हो गया। यहाँतक, कि इस अजीबो-ग़रीब मिहमानदारीपर वह लट्टू हो गया और खुले दिलसे बादशाहको शुक्रिया अदा करने लगा।

रुस्तमको अपनी मिहमानदारीसे सोलह आने ख़ुश कर लेनेके बाद सामिङ्गनके बादशाहने उसके घोड़ेको खोज लानेके लिये बहुतसे सिपाही और जासूस छोड़े।

बादशाहके आज्ञानुसार उन लोगोंने राजधानीमें और उसके आस-पास चारों ओर बहुत ढूँढ़-खोज की; पर कहीं उस घोड़ेका पता न लगा। यह देख, रुस्तमको यह सारा आदर-सत्कार, बिना लवणके व्यञ्जनकी तरह, फीका जँचने लगा।



# स्वप्न या सत्य

वहाँ शाही महलसे सटा हुआ एक सुन्दर पुष्पोद्यान था। उसमें तरह-तरहके फूलों और फलोंके वृक्ष शोभा पा रहे थे। उस उद्यानमें जहाँ तरह-तरहके मेवोंके पेड़ लगे हुए थे, वहीं एक सुन्दर-स्वच्छ जलवाला छोटा-सा तालाब था। उसीके किनारे एक ओर एक संगमर्मरका बना हुआ चबूतरा था। प्रतिदिन सन्ध्याके समय शाहज़ादी तमीना अपनी सखी-सहेलियोंके साथ टलहनेके लिये इसी बाग़में आया करती है और कुछ देर इसी चबूतरेपर बैठकर दिल बहलाया करती है।

इधर जबसे तमीनाने सुना है, कि आजकल एक नवयुवक, ठीक उसी रंग-रूपका, मेरे पिताके दरबारमें आया है, जिस तरहका युवक मैंने सपनेमें देखा था, तबसे तमीना दिन-रात इसी ख़यालमें डूबी रहती है, कि क्योंकर उस नवयुवकसे मिलकर दो-दो बातें करूँ? एक दिन उसने लुक-छिपकर उस आगन्तुक जवानको देख भी लिया और उसके रूपसे अपने स्वप्नमें देखे हुए सुन्दर युवाकी तुलना करके अच्छी तरह समझ गयी, कि यह तो ठीक वैसाही है। यह निश्चय होतेही उसके दिलकी कली खिल उठी।

उसका मुरझाया हुआ जी हरा हो गया। उसकी उदासीनता दूर हो गयी; पर ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये और उसे उस युवकसे मिलनेकी कोई सूरत नहीं दिखाई देने लगी, त्यों-त्यों उसकी व्यग्रता और व्याकुलता बढ़ने लगी। रह-रहकर अपने उस प्यारेकी यादमें उसकी आँखें भर-भर आने लगीं।

जबसे तमीनाने अपनी प्यारी सखी हमीदासे अपने दिलका भेद बतला दिया है, तबसे वह सदा छायाकी भाँति शाहज़ादीके पीछे-पीछे डोलती फिरती है।

एक दिनकी बात है। प्रतिदिनके नियमानुसार आज भी तमीना सन्ध्याके समय अपनी सखी-सहेलियोंके साथ बाग़में टहलनेके लिये आयी हुई थी। थोड़ी देरतक इधर-उधरकी बातें होती रहीं। इसके बाद तमीनाने हमीदासे एकान्तमें कुछ बातें करनी चाहीं। उसकी यह इच्छा प्रकट होतेही सब सखियाँ वहाँसे हट गयीं और अकेली हमीदाही वहाँ रह गयी।

एकान्त हो जानेपर हमीदाने कहा,—"क्यों, शाहज़ादी! आपने ईरानके उस मशहूर और जवाँमर्द पहलवानको अच्छी तरह देखा या नहीं, जो आजकल हमारे बादशाहका मेहमान हो रहा है?"

तमीना,—"देखा है। ख़ूब आँखें पसारकर—दिल खोलकर—देखा है। आजकल रोज़ही देखा करती हूँ; लेकिन जितनाही देखती हूँ, तमन्ना उतनीही बढ़ती जाती है। प्यारी बहन! तूने उस दिन बहुतही ठीक कहा था, कि तेरा सपना सच्चा होगा। सचमुच मैंने ख़्वाबमें यही सूरत देखी थी। रुस्तमही मेरा वह

सपनेमें देखा हुआ दिलदार यार है। मेरा वह ख़्वाब बिलकुल सही साबित हुआ। जब वह यों खुद-ब-खुद मेरे घर आ पहुँचा है, तब उम्मीद होती है, कि किसी दिन मिलना भी नसीब होगा। बहन! मुझे तो ऐसा मालूम होता है, कि खुदाने हमें एक दूसरेसे मिलानेकीही यह बन्दिश बाँधी है।"

हमीदा,—"मुझे भी ऐसाही मालूम होता है। इसके लिये हमें खुदाये-पाकका शुक्रिया अदा करना चाहिये।"

तमीना,—"ज़रूर, बहन! मुझे तो सिर्फ़ खुदाकोही मिह्रबानीका आसरा है। जिस दिन मैंने उन्हें ख़्वाबमें देखा, उसी दिन दिलमें इस बातका पक्का इरादा कर लिया, कि चाहे जो हो, लेकिन मैं उनके सिवा किसी ग़ैरके साथ शादी न करूँगी। तुम्हें बख़ूबी मालूम है, कि मेरे वालदैनने मेरी शादीके लिये कितना ज़ोर मारा, कितने नामी-गरामी बहादुर, जवाँमर्द, बादशाह और शाहज़ादे मुझसे शादी करनेके इरादेसे आये, लेकिन मैंने साफ़ इनकार कर दिया। बहन! औरतकी शादी एकही दफ़े, एकहीके साथ, होती है। मैं तो उसी दिन शादी कर चुकी, जिस दिन मैंने अपना दिल रुस्तमको दे दिया। अब मैं दूसरेके साथ शादी कैसे कर सकती हूँ? ऐसा करनेसे मेरी असमतमें फ़र्क़ पड़ेगा। जिस औरतकी असमतमें फ़र्क़ पड़ गया, उसकी हस्तीही गोया मिट गयी। इसी ख़यालसे मैं बराबर शादीके मामलेमें इनकार करती जाती हूँ। इसके लिये चाहे वालदैन मेरे ऊपर नाराज़ हों, चाहे मुझे घरसे निकाल दें, लेकिन मैं अपनी

असमतमें खुद-ब-खुद बट्टा नहीं लगा सकती।" यह कह वह चुप हो रही। शाहज़ादीके मुँहसे ऐसी उच्च-भाव-पूर्ण बातें सुन, हमीदाने भी मन-ही-मन उसकी बार-बार प्रशंसा की।

कुछ देर चुप रहनेके बाद शाहज़ादीने आँसू-भरी आँखोंसे हमीदाकी ओर देखते हुए भर्रायी हुई आवाज़में कहा,—

"लेकिन मेरी प्यारी हमीदा! मैं कबतक इस क़दर दिल-ही-दिलमें पेंचोताब खाती रहूँगी? क्या इस ज़िन्दगीमें मुझे अपने प्यारेके साथ मिलनेकी खुशनसीबी हासिल नहीं होगी?"

हमीदाने कहा,—"बहन! सब्र करो। सब्रकी डालमें मेवा फलता है। हरएक कामका वक़्त मुक़र्रर होता है। इन्सान हज़ारों कोशिशें करके भी उस वक़्तके पहले उस कामको हरगिज़ पूरा नहीं कर सकता। जिस खुदातालाने यहाँतक काम बना दिया है, वही आगे भी बनायेगा और तुम्हें ज़रूरही रुस्तमसे मिलायेगा। रहो, मैं तुम्हारे लिये कोशिश करती हूँ। खुदाके फ़ज़लसे मेरी कोशिश ज़रूरही बर आयेगी।"

इसी समय ज़ोहरा नामकी दासी वहाँ आ पहुँची। ज़ोहरा आजकल रुस्तमकीही सेवामें रहती है। उसे देखतेही हमीदाने कहा,—"अरी ज़ोहरा! आज तू इधर कैसे भूल पड़ी?"

ज़ोहराने कहा—"मैं एक बड़ेही ज़रूरी कामके लिये महलमें आयी थी। बेगम साहबने शाहज़ादीको बुलाया है। इसीसे मैं उन्हें ख़बर देनेके लिये यहाँतक चली आयी।"

हमीदाने कहा—“हम दोनों तो ख़ुदही वहाँ जा रही थीं। ख़ैर, मुझे तुझसे एक ज़रूरी बात कहनी है। अगर तू वादा कर, कि हत्तलमक़दूर उस कामको अंजाम करेगी, तो मैं तुझसे वह बात कहूँ। लेकिन देखना, इस राज़को अपनेही तक रखना, कोई ग़ैर न जानने पाये।”

ज़ोहरा बोली—“कौनसी बात है, ज़रा सुनूँ भी तो ? मैं तो तुम्हारी ख़ाकसार हूँ। अगर मेरा किया तुम्हारा कोई काम हो जाये, तो हरगिज़ न उठा रखूँगी।”

हमीदाने कहा—“आज रातको रुस्तमके कमरेका पच्छिम-वाला दरवाज़ा खुला छोड़ देना।”

ज़ोहराको हमीदाकी बातें सुनकर बड़ा आश्चर्य्य हुआ। वह बोली—“यह तो कोई बड़ी बात नहीं है। मगर माफ़ करना, अगर यह हुक्म तुम्हारा है, तो मैं इसे बजा लानेको तैयार नहीं; क्योंकि मैं डरती हूँ, कि कहीं ऐसा करनेमें मैं किसी फन्देमें न पड़ जाऊँ। कहीं मेरी रोज़ी न छिन जाये।”

हमीदाने कहा,—“तेरा कहना बजा है। लेकिन यह हुक्म मेरा नहीं, बल्कि शाहज़ादीका है। आज वह अपने दिलो-जिगरके मालिककी क़दमबोसीके लिये जाना चाहती है।”

इसी समय तमीनाको बुलानेके लिये फिर एक दूसरी दासी आयी। हमीदा तमीनाको जानेके लिये कहकर वहीं रह गयी। हमीदाने उसे आँखोंकेही इशारेसे बतला दिया, कि जानेमें कुछ हर्ज नहीं है, मैं तबतक ज़ोहराको ठीक कर लूँगी।

तमीनाके चले जानेपर ज़ोहराने आश्चर्य-भरे स्वरमें हमीदासे पूछा,—"शाहज़ादीका वह दिलदार यार कौन है, बहन ?"

हमीदा,—"तू जानतीही नहीं ? अच्छा, ले—सुन, आजकल जो नेकनाम बहादुर हमारे बादशाहके मिहमान हो रहे हैं, वही शाहज़ादीके दिलवर हैं। इन्होंने दिल-ही-दिलमें उन्हींको अपना शौहर मान लिया है ; लेकिन माँ-बापके डरके मारे इन्होंने किसी-पर यह राज़ नहीं ज़ाहिर किया।"

ज़ोहरा—"ओह ! अब मुझे मालूम हुआ, कि क्यों शाहज़ादी बराबर शादी करनेसे इनकार करती रहीं। लेकिन उन्हें तो अबतक माँ-बापसे साफ़-साफ़ कह देना चाहिये था। इसमें डरनेकी कौनसी बात थी ?"

हमीदा,—"डरनेकी बात क्यों नहीं थी ? रुस्तम ईरानका बाशिन्दा है और ईरानसे हमारे मुल्कवालोंकी हमेशाःसे दुश्मनी चली आती है। ऐसी हालतमें अगर शाहज़ादी अपने माँ-बापसे कहतीं, तो सिवा ज़िल्लतके और कुछ हाथ नहीं आता। इसके सिवा कहीं तूरानके सबसे बड़े शाहनशाह अफ़रासियावके कानोंमें यह ख़बर पहुँचती, तो वे इस सलतनतकी जड़ही खोद डालते। इसके अलावा यह भी तो हो सकता है, कि रुस्तम शाहज़ादीसे शादी करनेको राज़ी न हों ? इसीलिये वह पहले रुस्तमसे मिलकर पूछ लेना चाहती हैं।"

ज़ोहरा,—"तो क्या आज रातको शाहज़ादी खुद रुस्तमके पास मिलने जायेंगी ?"

हमीदा,—"नहीं—पहले मैंही जाकर रुस्तमके दिलकी थाह ले लेना चाहती हूँ।"

ज़ोहरा सोचमें पड़ गयी। सोचते-सोचते बोली,—"लेकिन क्या रुस्तमको यह बात मालूम ?"

हमीदा,—"नहीं, उन्हें अभी कहाँ मालूम है ? जब अभीतक घरवालेही नहीं जानते, तो फिर रुस्तम कैसे जानेंगे ? सिर्फ़ मैं जानती थी और अब तूने भी जान लिया।"

ज़ोहरा,—"लेकिन अगर रुस्तम इस बातपर राज़ी न हों, तो फिर क्याहोगा ?"

हमीदा,—"यही जाननेके लिये तो मैं आज उनके पास जाना चाहती हूँ। राज़ी हो गये, तो पाँचोंही घीमें हैं—और नहीं, तो शाहज़ादी जोगन बनकर जंगलमें या मक्केशरीफ़को चली जायेंगी। यही उनका पक्का इरादा है।"

यह बात सुनतेही ज़ोहरापर मानों पहाड़ही टूट पड़ा। वह कुछ देरतक चुपचाप एकटक हमीदाकी ओर देखती रही। इसके बाद वह एक लम्बी साँस लेकर बोली,—"अगर रुस्तम राज़ी न हों, तो मक्काशरीफ़ जानेकी क्या ज़रूरत है ? क्या अकेले रुस्तमही इस दुनियामें मर्द हैं ?"

हमीदा,—"चुप रह बेअक्ल कहींकी ! पाकदामन और नेक-ख़सलत औरतें एक दफ़े अपनी जुबानसे जिसे शौहर कहकर पुकार देती हैं, उसे ताज़िस्त फिर छोड़ नहीं सकतीं। चाहे जान चली जाये, मगर वे हरगिज़ दूसरेकी नहीं होतीं। अगर किसी

ख़यालसे रुस्तमने इनकार किया, तो ठीक समझ ले, कि शाहज़ादी ताउम्र बग़ैर शादी किये रह जायेंगी। इसलिये देखना, दरवाज़ा रातको ज़रूर खुला छोड़ देना। भूलना नहीं। इसके सिवा इस राज़को अभी किसीपर ज़ाहिर न करना। दिलमेंही रखना। नहीं तो बुरी तरह मारी जायेगी।"

बातोंही-बातोंमें देर हुई देख, ज़ोहरा झटपट हमीदासे छुट्टी माँगकर चल पड़ी। जाते-जाते वह उसके इच्छानुसार कार्य करनेकी प्रतिज्ञा करती गयी।

* * * *

हमीदाके बतलाये अनुसार ज़ोहराने उस दिन रातको रुस्तमके कमरेका पच्छिमवाला दरवाज़ा खुलाही रखा। घड़ी रात बीतनेपर हमीदा धीरे-धीरे उसी दरवाज़ेकी राह रुस्तमके कमरेमें दाख़िल हुई। रुस्तम कैसा ख़ूँख्वार आदमी है, यह बात तूरान और ईरानके हरएक स्त्री-पुरुषको भली भाँति विदित थी। तोभी अपनी प्यारी सखी तमीनाके लिये अपनी जान हाथमें लिये हुई हमीदा दबे पाँवों उस कमरेमें चलीही आयी।

उस समय रुस्तम नींदमें बेख़बर पड़ा हुआ था। कमरेके बीचोंबीच एक बड़ासा फ़ानूस जल रहा था। उसी रोशनीके सहारे वह थोड़ी देर निर्निमेष नयनोंसे रुस्तमका वह अलौकिक सौन्दर्य देखती रही। देखते-ही-देखते वह ऐसी तन्मय हो गयी, कि उसे इस बातका बिलकुलही ज्ञान न रहा, कि वह कहाँ खड़ी है और क्या करने आयी है। उसके मुँहसे एकाएक ये कई

वाक्य निकल पड़े,—"ऐन खुशक़िस्मती है उस मुल्ककी, जहाँ ऐसा नामदार जवाँमर्द पैदा हुआ। उस नेकबख़्त माँकी भी जितनी तारीफ़ कीजिये, थोड़ी है, जिसने ऐसा बहादुर लड़का पैदा किया। ओह! हरएक अज़ोसे कैसी बहादुरी और दिलेरी टपक रही है! यह तो जैसाही बहादुर है, वैसीही लासानी खूबसूरती भी इसने पायी है। शाहज़ादी! अगर यही हुस्नका बादशाह तुम्हारा शौहर हो, तो तुम्हारी क़िस्मतका सितारा चमक जाये, इसमें कोई शक नहीं।"

हमीदाकी यह बात सुनतेही रुस्तम एकाएक उठ बैठा। उठतेही उसने हमीदाको देखा। उस रातके समय एक औरतको अपने पास खड़ी देख, उसके आश्चर्यका ठिकाना न रहा। उसने कठोर स्वरसे कहा,—"तुम कौन हो?"

हमीदाने कहा,—"मैं हुज़ूरकी एक महज़ नाचीज़ बाँदी हूँ।"

रुस्तम,—"यहाँ इस वक़् किस लिये आयी हो? बोलो, तुम मुझसे क्या चाहती हो?"

हमीदा,—"मैं एक ग़रीब औरतकी अर्ज़ी लेकर आपकी खिद्मतमें हाज़िर हुई हूँ।"

रुस्तम,—"वह औरत कौन है?"

हमीदा,—"बादशाहकी प्यारी दुख़्तर, शाहज़ादी तमीना।"

एक तो रुस्तम उसकी सूरतही देखकर क्रोधित हो रहा था, अबके उसकी यह बात सुनतेही उसका क्रोध दूना हो गया। उसने लाल-लाल आँखें किये, बड़े ज़ोरसे गरजकर कहा,—"शैतान!

क्या बकती है? अभी चली जा मेरे सामनेसे। नहीं तो तेरी ख़ैर नहीं है। क्या तुझे अपनी जानका ख़ौफ़ नहीं था, जो इस-तरह चुपकेसे यहाँ चली आयी?"

लेकिन हमीदा इस डपटसे ज़रा भी न सहमी। उसने जी कड़ा कर कहा,—"अफ़सोस, सद अफ़सोस! नेकबख्त बहादुर! ज़ो शख़्स एक मुसीबतज़द: औरतकी मुसीबतोंकी दास्तान भी नहीं सुनना चाहता, जो अपने ऊपर मरनेवाली एक नेकअसमत और बावफ़ा औरतकी तकलीफ़ें दूर करना तो दरकिनार, उसकी बातें भी सुनना नहीं चाहता, उसे कम-से-कम मैं तो इन्सान समझनेके लिये भी तैयार नहीं हूँ, चाहे वह कितनाही बड़ा जवाँ-मर्द, बहादुर और नामी-गरामी आदमी क्यों न हो।"

हमीदाकी यह निर्भीकता देख, रुस्तम भौंचकसा होकर उसकी ओर देखने लगा। थोड़ी देर सोचनेके बाद उसने कहा,—"अच्छा, तो तुम मुझे यह बतलाओ, कि तुम्हारी शाहज़ादीको कौन तकलीफ़ दे रहा है?"

हमीदा,—"जनाबे आली! हमारी शाहज़ादीको खुद आपही ईज़ा पहुँचा रहे हैं।"

रुस्तम,—"ग़ैरमुमकिन! सरासर झूठ! मैंने आजतक कभी किसी औरतको तकलीफ़ नहीं पहुँचायी। बजाय इसके, मैं हमेश: मुसीबतमें पड़ी हुई औरतोंको बचाताही रहा हूँ। ख़ैर, यह तो कहो, तुम्हारी इस बातका कोई सुबूत भी तुम्हारे पास है या नहीं?"



'क्या तुझे अपनी जानका ख़ौफ़ नहीं था, जो इस तरह चुपकेसे यहाँ चली आयी।"

Burman Press, Calcutta.

[ पृष्ठ—७८ ]

हमीदा,—"हाँ, सुबूत मैं अपने साथ लेती आयी हूँ।" यह कहकर उसने अपनी कुर्तीकी जेबसे एक ख़त निकालकर रुस्तमके हाथमें दे दिया।

रुस्तमने रोशनोके पास जाकर उस पत्रको पढ़ना शुरू किया। उसमें लिखा था :—

"मेरे प्यारे दिलवर!

"एक दिन ख़्वावमेंही आपकी सूरत देखकर मैंने अपने दिलोजिगर, दीनोईमान,—सब आपके क़दमोंपर निसार कर दिये। बस उसी वक़्तसे यह नाचीज़ शबोरोज़ आपकेही ख़्याल-में डूबी रहती है। न दिनको चैन है, न रातको नींद है। हर वक़् यही तमन्ना दिलको बेचैन किये रहती है, कि किस तरह आपकी क़दमबोसी हासिल करूँ—कब आपके दीदार नसीब हों। ख़ुदाका शुक्र है, कि उसने आपको मेरे इतने क़रीब पहुँचा दिया है और मैं दूर-ही-दूरसे आपको देखकर दिलको शाद कर लिया करती हूँ।

"लेकिन जानमन! अब इतनेसेही तमन्ना नहीं मिटती। मेरा हौसला बढ़ताही जाता है—हबस ऊपरकोही उठती जाती है। अब यह ख़ाकसार आपकी कमतरीन बाँदी बननेकी ख़्वास्तगार है और उम्मीद कामिल है, कि वह आपके क़दमोंकी ख़िदमत करनेका मौक़ा ज़रूरही हासिल करेगी।

"प्यारे! मेरी ज़िन्दगी इस वक़् एक महज़ पतले धागेके सहारे-लटक रही है। आपका इक़रारही मेरी ज़िन्दगी है और

इनकार मौत है। अब इन दोनोंमेंसे आप जो चाहें बख्श दें, बन्दी उसे बसरोचश्म कुबूल करेगी।

"आपकी मुहब्बतकी तलबगार,
"ख़ाकसार तमीना।"

पत्र पढ़ना पूरा होतेही रुस्तमने ऊपर सिर उठाया; पर देखा, कि हमीदा ग़ायब है। यह देख, उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

लाचार, रुस्तम पलङ्गपर आकर बैठ रहा और सोचने लगा, "यह कैसा तमाशा है? वह औरत इस तरह चुपकेसे मेरे हाथमें शाहज़ादीका ख़त देकर भाग क्यों गयी? वह कोई परी थी या शैतान, जो इस क़दर पलक मारतेही ग़ायब हो गयी? कुछ समझमें नहीं आता, कि यह क्या मामला है?"

यही सब सोचते हुए रुस्तम रात-भर उस चिट्ठीकी लिखने-वाली और उसकी बातोंपर विचार करता रहा। इसी चिन्तामें पड़े-पड़े उसने सारी रात जागतेही बिता दी—पलकें फिर पल-भरके लिये भी न लगीं।

# रुस्तमका विवाह

सवेरा हुआ। सूर्य्यकी सुनहरी किरणें सारे संसारको प्रकाशित करने लगीं। रुस्तम भी अलसाया हुआ उठा और प्रातःकृत्यसे निवृत्त हो, दरबारका समय हुआ देख, मन बहलानेके लिये वहाँ जा पहुँचा। उसे देखतेही सभी दरबारियोंने बड़े अदबसे उठकर उसे सलाम किया। बादशाहने स्वयं आगे बढ़कर उसका हाथ थाम लिया और अपने पासही एक सुन्दर आसनपर बैठाया। थोड़ीही देर बाद नाचनेवालियाँ आकर अपने नाच-गानसे सभाके लोगोंको प्रसन्न करने लगीं; परन्तु महावीर रुस्तमका मन अपने आपेमें नहीं था, इसीलिये उसको किसीका गाना अच्छा नहीं लगा। इधर नाच-गान हो रहा था और उधर वह बैठा-बैठा रातकी आश्चर्य-जनक घटनाके विचारमें डूबा हुआ था। उस पत्रकी बातोंने उसके हृदयको विचलित कर दिया था। रह-रहकर उसके मनमें उसीकी बातें उठ रही थीं।

एकाएक रुस्तम, सभ्यता और असभ्यताका कुछ भी विचार न कर, उठ खड़ा हुआ और वहाँसे चलता बना। उस समय उसकी अवस्था नशेसे चूर मतवाले मनुष्यकीसी हो रही थी। बादशाह और उनके दरबारियोंको, उसका इस तरह भरी सभासे

उठकर चला जाना, बड़ाही बुरा मालूम हुआ ; लेकिन किसीने रोक-टोक नहीं की। रुस्तम, वहाँसे उठकर सीधा अपने कमरेमें आ, पलँगपर लेट रहा ; पर वहाँ भी उसे चैन नहीं आया। वह कभी उठकर रातवाले उस पत्रको पढ़ने लगता और कभी उसे अपने सिरके नीचे रखकर मन-ही-मन कहने लगता,—"मालूम होता है, कि उस कम्बख़्तने मुझसे दिल्लगी की है। अगर अबके उसे देख पाऊँ, तो कच्चाही चबा जाऊँ।" यह कहते-कहते रोषके मारे उसकी आँखें लाल हो गयीं ; परन्तु क्षणभर बादही उसका वह भाव बदल गया। उसके हृदयमें दुखियाके प्रति सहानुभूति उत्पन्न हुई। हृदयमें एक विचित्र प्रकारकी धड़कन पैदा होने लगी। इसी प्रकार किसी तरह वह दिन कट गया। रात आयी। रुस्तम और दिनोंकी अपेक्षा उस दिन पहलेही सोने चला गया ; पर चिन्ताके मारे नींद नहीं आयी। पहर-डेढ़ पहर रात करवटें बदलतेही बीत गयी ; किन्तु दूसरे पहरका अन्त होते-न-होते वह नींदमें बेसुध हो गया।

रात आधीसे अधिक बीत चुकी है। सिवा पवनके झकोरे और झिल्लीकी झनकारके और कोई शब्द नहीं सुनाई देता। सारे शहरमें सन्नाटेका आलम है।

इसी समय हमीदा और तमीना रुस्तमके कमरेके पास दबे पैरों आ पहुँचीं। तमीनाको घरके अन्दर भेजकर हमीदा बाहरही खड़ी रही। भीतर पहुँचकर तमीनाने देखा, कि महावीर रुस्तम गहरी नींदमें बेसुध पड़ा है। उसके चेहरेका भाव प्रतिक्षण

बदल रहा है। उस समय रुस्तम स्वप्न देख रहा था। उसने देखा, कि उसने अपने बाहु-बलसे एक बहुत बड़ा राज्य जीत लिया है और उसींकी एक मनोहर फुलवारीमें फूलोंकी मीठी खुशबूका मज़ा ले रहा है। एकाएक उसने आसमानकी ओर दृष्टि फेरतेही देखा, कि बादलोंके बीचसे एक सुन्दर सिंहासन निकलकर नीचेकी ओर उतर रहा है। धीरे-धीरे वह सिंहासन रुस्तमके पास आ गया। उसपर एक बड़ीही सुन्दर देवी गोदमें एक बालक लिये बैठी हुई थी। रुस्तम उस बच्चेकी सुन्दरता देखतेही मुग्ध हो गया और उसे गोदमें लेनेके लिये उसने झट हाथ बढ़ा दिया। इसी समय एकाएक न जाने किधरसे बहुतसे दैत्य वहाँ पैदा हो गये और "मार-मार"का शोर मचाते हुए रुस्तमकी ओर दौड़े। इतनेमें रुस्तमने झट अपने म्यानसे तलवार निकाल ली और देवीकी गोदसे उस बालकको छीन लिया। देवी मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। तब रुस्तमने उन दैत्योंके सिर काट डालनेके इरादेसे अपनी तलवार घुमानी शुरू की। दैव-संयोगसे एक बार वह तलवार उस बालककी गरदनपर आ पड़ी और उसका सिर उसी क्षण धड़से जुदा हो गया। ज़मीनपर ख़ूनकी धारासी बह चली।

यह विचित्र और भयङ्कर स्वप्न देखतेही रुस्तमका सारा शरीर एकबार काँप गया और वह धड़फड़ाकर एकाएक उठ बैठा। उठतेही उसने देखा, कि सामने एक अपूर्व लावण्यमयी ललना खड़ी है। उसने चकित भावसे पूछा,—"ऐं! तुम कौन हो?"

सुन्दरी,—"आपकी कमतरीन बाँदी, तमीना।"

रुस्तम,—"नहीं—हरगिज़ नहीं। तुम वही परी हो, जिसे मैंने अभी ख़्वाबमें देखा है। माफ़ करना। मैंने तुम्हारी गोदका बच्चा छीनकर बहुत बड़ा गुनाह किया।"

रुस्तमकी यह पहेलीसी बात सुनकर तमीना भौंचकसी हो रही। थोड़ी देर बाद बोली,—"आप क्या फ़र्मा रहे हैं, यह मेरी समझमें नहीं आता। मैं कोई परी या हूर नहीं, बल्कि आपकी मुहब्बतकी तलबगार—बादशाहकी दुख़्तर तमीना हूँ।"

यह सुन, रुस्तमका स्वप्न-मोह कुछ भङ्ग हुआ और उसने बड़े ग़ौरसे शाहज़ादीकी ओर देखते हुए पूछा,—"क्या कल तुम्हींने मेरे पास ख़त भेजा था? अच्छा, बोलो, क्या चाहती हो?"

गद्गद-कण्ठसे तमीनाने कहा,—"सिर्फ़ इतनाही, कि आप इस नाचीज़को अपनी बाँदी बना लें—इसे अपने क़दमोंके ज़ेरसाये कर लें और अपनी मुहब्बतकी चाशनी चखाकर इसके तड़पते हुए दिलोजिगरको शाद कर दें।"

यह सुनतेही रुस्तम थोड़ी देरके लिये चुप हो रहा। उसके मनमें तरह-तरहकी भावनाओंकी तरङ्गें उठने लगीं। अन्तमें बहुत सोच-विचार कर रुस्तमने कहा,—"अच्छा, दिलरुबा! लो, मैं तुमसे कहे देता हूँ, कि मुझे तुम्हारी आरज़ू दिलोजानसे क़ुबूल व मंज़ूर है। रुस्तमके संगदिलको आजतक कोई परीजमाल अपने दामे-उल्फ़तमें नहीं फँसा सकी; लेकिन न मालूम क्यों, तुम्हारी जादू-भरी निगाहोंके तीरने एकही वारमें मेरे दिलको

मोमकी तरह पिघला दिया। इस चाँदसे चेहरेने न जाने कौनसा जादू मेरे दिलपर डाल दिया, कि मेरी ज़िन्दगीका रुख़ही बदल गया। जिस रुस्तमको यह भी नहीं मालूम था, कि इश्क़ किस चिड़ियाका नाम है, उसका दिल तुमने हाथोंहाथ छीन लिया और उसे अपना गुलाम बना लिया। दिलरुबा! जाओ, जाकर चैनकी नींद सोओ। मैं कलही तुम्हारे वालिदसे इस बातका इसरार करूँगा और उम्मीद क़वी है, कि वे ज़रूर मेरी अर्ज़ क़ुबूल कर लेंगे। बस, कलसेही तुम मेरी हो जाओगी और तुम्हारा हो जाऊँगा।"

यह कहते-कहते भावके आवेशमें आकर रुस्तम उठ खड़ा हुआ और तमीनाके पास जा, उसके कोमल कर-कमलको हाथमें लेकर धीरेसे चूम लिया। उस समय तमीनाको जो सुख हुआ, उसका अनुभव स्वयं पाठकही कर सकते हैं। लिखनेकी कोई आवश्यकता नहीं।

दूसरे दिन रुस्तमने बादशाहके सामने तमीनाके साथ विवाह करनेका प्रस्ताव किया। यह प्रस्ताव सुनतेही वे मन-ही-मन बड़े प्रसन्न हुए; पर उस प्रसन्नताको मनमेंही दबाकर बोले,—"आपकी यह बात मैं निहायत ख़ुशीके साथ मान लेनेको तैयार हूँ; मगर इसमें एक शर्त्त यह है, कि अगर आगे चलकर ईरान और तूरानमें फिर जंग छिड़ जायेगा, तो आप मेरी दुख़्तरको यहाँसे ईरान नहीं ले जा सकेंगे। बहरकैफ़ इसके बारेमें तमीनाकी राय मालूम कर लेनी निहायत ज़रूरी है।"

रुस्तमने कहा,—"अगर शाहज़ादी इस शर्त्तपर राज़ी हों, तो मुझे भी दिलसे मंज़ूर है।"

यह सुनतेही बादशाहकी बानछें खिल गयीं। उन्होंने उसी समय तमीनासे इस मामलेमें राय पूछी। उसने भी शर्त्त मंज़ूर कर ली। दूसरेही दिन बड़ी धूमधामसे रुस्तमके साथ तमीनाका विवाह हो गया। सारे सामिंगन-नगरमें आनन्द-महोत्सवकी धूम मच गयी। उसी दिन रुस्तमका प्यारा घोड़ा रख़्श भी बड़ी-बड़ी मुश्किलोंसे जासूसोंके हाथ लग गया। इससे रुस्तमका आनन्द और भी दूना हो गया।

# चिर-विच्छेद

तमीनाकी शादी हुए चार महीने हो गये। सुखके दिन बीतते देर नहीं लगती। इसीलिये ये चार महीने किस तरह कट गये,कुछ मालूम नहीं पड़ा। तमीना-को तो ऐसा मालूम पड़ता है, मानों अभी कलही उसकी शादी हुई है। उसके सुख और सौभाग्यकी सीमा नहीं है। अपना मनचीता स्वामी पाकर वह आनन्दके समुद्रमें गोते लगा रही है। उसका सौन्दर्य, आन्तरिक आनन्दके कारण, सहस्र-गुण अधिक शोभाका विस्तार कर रहा है। रुस्तम भी प्रेमकी मदिरा पीकर ऐसा पागल हो रहा है, कि यद्यपि अधिक दिन किसी एक स्थानपर टिके रहना, उसकी प्रकृतिके विरुद्ध था, तथापि उससे कहीं टस-से-मस नहीं हुआ जाता।

पर "सबै दिन नाहिं बराबर जात"। इस प्रेममयी दम्पतीके भाग्यमें अधिक दिन सुख भोगना बदाही नहीं था। भाग्यने तुरत-ही पलटा खाया। रुस्तमके ईरानसे हटतेही क़ैकाऊसने मनमानी करनी शुरू की ; इससे देशकी शान्ति क्रमशः नष्ट हो गयी और ईरानके लोग तूरानवालोंके साथ भी मौक़े-मौक़ेपर लड़ने-झगड़ने लगे। इन छोटी-मोटी लड़ाइयोंने क्रमशः बड़ा भारी भयङ्कर रूप

धारण किया और दोनों देशोंमें घोर संग्राम छिड़ जानेकी आशङ्का होने लगी। युद्धके घनघोर बादल चारों ओर छा गये।

इतनी जल्दी इन दोनों देशोंकी सन्धि भङ्ग हो जायेगी और ये एक दूसरेके ख़ूनके प्यासे होकर लड़नेको तैयार हो जायेंगे, यह बात रुस्तमकी कल्पनामें भी नहीं आयी थी। इसीलिये जिस दिन उसके कानोंमें यह बात पड़ी, उस दिन उसके आश्चर्यका ठिकाना नहीं रहा। उसे तुरतही अपनी मातृ-भूमिका स्मरण हो आया। एक बार उसकी आत्मा अपनी प्यारी जन्म-भूमिमें जाने और उसकी सेवा करनेके लिये व्याकुल हो उठी। उसने तमीनाको अपने पास बुलाकर कहा,—"प्यारी! ईरान और तूरानमें तो फिर लड़ाई छिड़नेके आसार नज़र आ रहे हैं। इसमें शक नहीं, कि अगर अबकी दफ़े जङ्ग छिड़ा, तो उसकी आग जल्द ठण्ढी न होगी। इसलिये अब तो मैं यहाँ एक लहज़ा भी ठहरना नहीं चाहता अपने वतनकी ख़िदमत करना मेरा पहला फ़र्ज़ है। अपने मुल्कके लिये ख़ून बहाना, हरएक अहलेवतनके लिये लाज़िम है। लिहाज़ा, अब तुम मुझे रुख़सत करो। बस यही मेरी-तुम्हारी आख़िरी मुलाक़ात है।"

रुस्तमकी बातें सुनतेही तमीना व्याकुल हो गयी। उसे काठसा मार गया। उसकी आँखोंके आगे अन्धेरा छा गया। उसे ऐसा मालूम पड़ने लगा, मानों उसके पैरों-तलेकी मिट्टी खिसकी जाती हो। वह थोड़ी देरके लिये यह निश्चय नहीं कर सकी, कि इस समय उसका कर्त्तव्य क्या है? एक बार तो

उसके जीमें आया, कि अभी कह दूँ, कि प्यारे! इस क़द्र मुझे हमेशःके लिये रुलाकर मत चले जाओ ; लेकिन दूसरेही क्षण उसके जीमें यह भावना उत्पन्न हुई, कि नहीं, यह बात मेरे जैसे एक बहादुर शख़्सकी बीबीके लिये बड़ीही शर्मकी होगी, अगर मैं अपने ख़ाविन्दको वतनकी ख़ातिर जंगमें जानेसे रोक रखूँ—इस वक़्त तो मेरा यही फ़र्ज़ है, कि अपने प्यारेके बदनपर अपने हाथों हथियार बाँध दूँ और कह दूँ, कि जाओ, मैं ख़ुशीसे तुम्हें रुख़-सत करती हूँ—जाकर जंगमें अपने हथियारके जौहर दिखाओ और वतनपर क़ुर्बान हो जाओ।

यही सोचकर उसने कहा,—"प्यारे! वतनकी ख़ातिर जङ्गमें जानेसे मैं तुम्हें हरगिज़ नहीं रोक सकती।"

यह कहते-कहते तमीनाका मुख-मण्डल पति-गर्वसे चमक उठा। रुस्तम भी उसकी ये बातें सुनकर मन-ही-मन उसकी प्रशंसा करने लगा ; पर तुरतही उससे बिछुड़नेकी बात सोचकर उसके चेहरेपर उदासी छा गयी। उसने फिर तमीनासे कहा,— "तमीना! प्यारी तमीना! तुमसे बिछुड़नेका मुझे सख़्त अफ़सोस है। यह बात सोचकर मेरा कलेजा मुँहको आ रहा है, कि तुम्हें छोड़कर मुझे चला जाना पड़ेगा। अगर मेरे वतनमें अमनोचैनका दौर-दौरा होता और इस क़द्र जंगके अब्र आसमानमें नहीं छा जाते, तो मैं तुम्हें छोड़कर हरगिज़ कहीं नहीं जासकता था ; पर क्या करूँ? लाचारी है। और अब इस बातकी कोई उम्मीद भी नहीं नज़र आती, कि इस दफ़े जो आग पैदा होगी, वह जल्द-

ही बुझ जायेगी। इसलिये यह मुलाक़ात शायद ज़िन्दगी-भरके लिये आख़िरी मुलाक़ात है। अब फिर तुम्हारे इस चाँदसे मुखड़े-का दीदार नसीब होना ग़ैर-मुमकिन मालूम पड़ता है। हाय! आजही हम लोग ताज़ीस्तके लिये एक दूसरेसे बिछुड़ गये! प्यारी तमीना! अब तुम्हें फ़क़ उसी बच्चेको देख-देखकर दिलको शाद करना पड़ेगा, जो जल्दही इस दुनियामें आनेवाला है। ओफ़! मेरी क़िस्मतमें अपनी औलादका मुँह देखना भी नहीं लिखा था! अब कहाँ देखूँगा? कैसे देखूँगा? यह हस्रत, यह अरमान, यह तमन्ना तो दिलकी दिलहीमें रह गयी! लेकिन जानेजाँ! वतनकी मुसीबतकी ख़बर पाकर रुस्तम चुप बैठा नहीं रह सकता। उसे जानाही पड़ेगा। ज़रूर जाना पड़ेगा।"

यह कहते-कहते रुस्तमकी आँखोंमें आँसू आ गये। थोड़ी देरके लिये उसके मुँहसे एक शब्द भी नहीं निकला। वह चुपचाप उस सुन्दरीके भावी वियोगसे व्याकुल होकर विवर्ण बने हुए वदन-मण्डलकी ओर देखता रह गया। कुछ देर बाद उसने अपनी दाहिनी बाँहपर बँधी हुई एक क़ीमती तावीज़ खोलकर तमीनाके हाथमें देते हुए कहा,—"प्यारी! लो। यह तावीज़ मेरे ख़ानदानकी बहुत पुरानी चीज़ है। इसके अन्दर मेरा और मेरे ख़ानदाका हाल लिखा हुआ है। इस तावीज़में बड़ी भारी ख़ूबी है। यह जिसके हाथमें बँधी रहती है, उसको इस दुनियाके तमाम ऐशोइशरत हासिल होते हैं और वह आलम-भरमें मशहूर होकर ख़ुशक़िस्मतोंमें आला बन जाता है। दिलरुबा! इसे तुम ख़ूब

हिफ़ाज़तके साथ अपने पास रख लो। अगर तुम्हारे लड़का हो, तो उसके दाहिने हाथमें बाँध देना। इससे वह बड़ाही खुशकिस्मत, बहादुर, नेकनाम और नेकखसलत होगा और अगर लड़की हुई, तो उसके बायें हाथमें बाँध देना। खुदाके फ़ज़लसे, बुज़ुर्गोंकी दोआसे इस तावीज़के पहनानेका यह असर होगा, कि वह लड़की बड़ीही पाकदामन, बाअसमत औरत बाप-दादोंके नामको ऊँचा करनेवाली होगी।"

तमीनाने वह तावीज़ काँपते हाथोंसे अपने हाथमें लेली और रोते-रोते कहा,—"हाय! दिलवर! मैंने इस बातका ख़्वाब भी नहीं देखा था, कि साल भी न लगने पायेगा और हम इस क़दर आनन-फ़ानन हमेशःके लिये एक दूसरेको छोड़ देनेके लिये मजबूर होंगे। लेकिन मेरे प्यारे शौहर! मैं तुम जैसे बहादुर जवाँमर्दकी बीबी होकर वतनके लिये जङ्ग करनेसे तुम्हें मना भी नहीं कर सकती। वतनकी पुकारपर जाना, तुम्हारा सबसे बड़ा फ़र्ज़ है। उस फ़र्ज़को अदा करनेसे मैं तुम्हें हरगिज़ न रोकूँगी—तुम्हारी नेकनामीकी सफेद चादरमें काला दाग़ न लगाऊँगी। लो, मैं अपनी आँखोंके आँसुओंको पोछे डालती हूँ। जाओ—खुशीसे जाओ—वतनके लिये जङ्ग करते हुए अपने बुज़ुर्गोंके नामको ऊँचा करो। बाँदी हमेशः तुम्हारी याद करती रहेगी और उसी यादगारीके सहारे अपनी ज़िन्दगीके बाक़ी दिन गुज़ार देगी।"

रुस्तमने गद्गद होकर कहा,—"ऐ नेक औरत! रुस्तमकी बीबी कहलानेका दावा बेशक तुम्हीं कर सकती हो। तुम जैसी

आलादिमाग़ और बुलन्द ख़यालवाली औरतोंके रहते हुए मर्दों-की फ़र्ज़-अदाईमें कभी ख़लल नहीं पड़ सकता। तो बस, अब मैं रुख़सत होता हूँ। देर करनेकी कोई ज़रूरत नहीं है।"

यह कह, एक बार अपनी प्यारी पत्नीको हृदयसे लगाकर, रुस्तम बिदा हो गया। उसके जाते समय तमीना न रोयी, न चिल्लायी। चुपचाप आँखोंसे उसका जाना देखती रही। जब वह कमरेके बाहर चला गया, तब विरहके सोचसे तमीना एकबारगी व्याकुल हो गयी। वह धूलमें लोट-लोटकर रोने, तड़पने और छातीमें घूँसे मार-मारकर चिल्लाने लगी। यह हालत देख, उसकी बाँदीने वहाँ आकर उसे ढाढ़स बँधाते हुए कहा,—"शाहज़ादी! आप यह क्या कर रही हैं? क्या आपको अपने पेटके बच्चेका भी ख़याल भूल गया?"

बाँदीकी इस बातसे तमीनाका मोह मानों दूर हो गया। उसे झट अपने स्वामीकी यह बात याद आ गयी, कि अब उसी भावी सन्तानकी आशापर उसे यह सारा जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। सन्तानकी मायाने पति-विरहपर विजय पायी और वह कलेजेपर पत्थर [illegible] हो रही।



# माता और पुत्र

अपने स्वामीके चले जानेके चार महीने बाद तमीनाने एक बड़ाही सुन्दर पुत्र उत्पन्न किया। उसका चाँदसा चेहरा देख, तमीनाका हृदय शीतल हो गया—वह अपने स्वामीका वियोग बहुत कुछ भूल गयी। पुत्रके जन्मके बादही उसने अपने स्वामीकी दी हुई तावीज़ उसके हाथमें बाँध दी।

तमीनाके पुत्र-जन्मकी खुशीमें शाही महलमें बड़ी धूम-धामके जलसे-तवाज़े और नाच-गान शुरू हो गये। सामिङ्गनके बादशाहने अपने नातीकी पैदाइशकी ख़ुशीमें दीन-दरिद्रोंको ख़ूब धन लुटाया और नौकरोंको मुँहमाँगा इनाम दिया। महीनोंतक यही चहल-पहल जारी रही। तमीनाने बड़े प्यारसे उस लड़केका नाम 'सुहराब' रखा।

सुहराब बड़े प्रेमसे लालित-पालित होने लगा। ज्यों-ज्यों उसकी उमर बढ़ने लगी, त्यों-त्यों उसका बदन गठीला होने लगा और उसके अङ्ग-अङ्गसे भावी शूरता तथा वीरताके लक्षण दिखाई देने लगे। दस बरसकी उमरमेंही सुहराबकी वह वीरता-भरी मूर्त्ति देखकर लोग दङ्ग होने लगे। उसकी चौड़ी छाती,

लम्बी-लम्बी भुजाएँ, साहस, सहनशीलता और बुद्धिमत्ता देख-कर सब लोग अचम्भेमें आने लगे। तेज़ दौड़ने और कसरत करनेमें उसे बड़ा मज़ा मालूम होता था। धीरे-धीरे उसे शिकार-का भी शौक़ हो गया। कहनेका मतलब यह, कि 'होनहार पूतके पाँव पालनेमेंही दीखने लगते हैं'—इस कहावतके अनुसार, बालकपनसेही सुहराब वीर पिताका वीर पुत्र होनेका परिचय देने लगा। अपने होनहार पुत्रके इन शुभ लक्षणोंको देख-देखकर तमीना मन-ही-मन परम आनन्दका अनुभव करने लगी। पतिका स्मरण और चिन्तन हृदयसे दूर नहीं होनेपर भी, उनके विरहसे उसके हृदयमें जो आग धधक रही थी, वह बहुत कुछ ठण्ढी हो गयी।

तमीनाने रुस्तमको पुत्र-जन्मका संवाद नहीं दिया। सुह-राबके जन्मके कुछही दिन बाद रुस्तमने तमीनाके पास बहुतसे बहुमूल्य मणि-रत्न और अलङ्कार आदि उपहार-स्वरूप भेजकर यह बात दर्याफ़्त करायी थी, कि उसे कौनसी सन्तान हुई—पुत्र या कन्या? इसके उत्तरमें तमीनाने कहला भेजा, कि मेरे लड़की हुई है। लड़की पैदा होनेकी ख़बर पाकर रुस्तम-की आशापर पानी फिर गया। उसका जी इतना छोटा हो गया, कि उसने फिर सामिङ्गनका नाम भी नहीं लिया।

तमीनाने यही सोचकर, यह चाल खेली थी, कि कहीं पुत्रके जन्मका संवाद सुनकर रुस्तम किसी दिन लड़केको भी अपने साथ न ले जाये। पुत्रकी ममतासेही विवश होकर उसने इस प्रकार अपने स्वामीके साथ धोखाधड़ी की।

रुस्तमका अनुमान यथार्थमें ठीक निकला। इस बार ईरान और तूरानमें जो युद्धकी अग्नि प्रज्वलित हुई, वह जल्द नहीं बुझी। दिन-दिन मामला बेढबही होता चला गया। साल-पर-साल बीतने लगे, तोभी शान्तिका कोई चिह्न नहीं दिखाई पड़ता था। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, त्यों-त्यों इन दोनों देशोंकी शत्रुता बढ़तोही चली गयी। इसोलिये रुस्तमको फिर अपनी स्त्रीसे मिलनेका मौक़ा नहीं मिला। इसी तरह दोनोंकी भेंट हुए एक ज़माना गुज़र गया।

सुहराब इस समय बालकपनकी अवस्था पारकर यौवनमें पदार्पण कर रहा है। बालकपनमेंही उसके शरीर और प्रकृतिमें वीरता और साहसके जो सब लक्षण दिखाई दिये थे, युवावस्थाको पाकर वे और भी पुष्ट होने लगे। वह अपने पिताकेही समान वीर, तेजस्वी और पराक्रमी निकला।

पितासे जन्म-संस्कारकी तरह पाये हुए गुणोंके अतिरिक्त अपनी माताकी सुशिक्षासे भी उसमें अनेक गुण आ गये। उसका हृदय परम उदार, चरित्र अतिशय शुद्ध और व्यवहार अत्यन्त सुन्दर था। इसीलिये उसके देशके सभी लोग उसे बड़े आदर, प्रेम और श्रद्धासे देखने लगे। उसकी माताको अपने पुत्रकी इस प्रकार सर्वत्र प्रशंसा होती देख, बड़ाही आनन्द होता था; पर इस आनन्दके साथ-ही-साथ आजकल उसके हृदयमें एक नयी तरहकी चिन्ता पैदा हो जाती थी और कभी-कभी इसी सोचके मारे वह बेतरह बेचैन हो जाती थी।

देशमें युद्धकी जैसो प्रबल अग्नि प्रज्वलित हो रही थो, उससे रह-रहकर तमीनाको यह चिन्ता होने लगती थी, कि कहीं बादशाह सुहराबकी इस बहादुरी, दिलेरी और जवाँमर्दीका हाल सुनकर इसे अपने पास न बुलालें और इसे ईरानके साथ लड़नेके लिये न भेज दें। वैसी हालतमें इसे किसके साथ लड़ाई करनी पड़ेगी—यही सोचकर तमीना तड़प जाती थी। इसके अलावा, यह चिन्ता भी उसे कभी-कभी व्याकुल कर देती थी, कि कहीं बादशाह अफ़रासियाबको यह मालूम हो गया, कि यह सुहराब रुस्तमकाही लड़का है, तब तो वह इसकी जानको आ जायेगा और इसे अपना दुश्मन समझकर किसी तरह खपा डालनेकी कोशिश करेगा। इसी डरके मारे तमीनाने आजतक सुहराबको भी यह नहीं बतलाया था, कि उसके बापका नाम क्या है? साथ-ही-साथ तमाम लोगोंको इस बातकी मनाही करवा दी थी, कि कोई सुहराबको उसके बापका नाम न बतलाये। सामिङ्गनके लोग सुहराबको इतना प्यार करते थे, कि वे उसकी थोड़ीसी भी बुराई होती देखना नहीं चाहते थे। इसीलिये उन लोगोंने कभी भूले-भटके भी सुहराबको उसके पिताका परिचय नहीं दिया। वह अनजानही बना रहा।

किन्तु इतनी चेष्टा करनेपर भी तूरानके बादशाह अफ़रासियाबको सुहराबके पिताका हाल मालूम होही गया। उन्हें यह भी मालूम होनेसे बाक़ी न रहा, कि वह ठीक अपने पिता रुस्तमकेही समान वीर है। अब तो वे मन-ही-मन डरने लगे, कि कहीं

ये दोनों बाप-बेटे मिल गये, तब तो फिर मेरे ऊपर क़यामतही टूट पड़ेगी। इसीलिये वे एकही ढेलेमें दो शिकार करनेका उपाय सोचने लगे। उन्होंने सोचा, कि ऐसी कोई तरकीब लड़ानी चाहिये, जिससे मेरे ये दोनोंही दुश्मन दुनियासे दूर हो जायें।

जिन दिनों बादशाहके दिमाग़में यह बात चक्कर लगा रही थी, उन्हीं दिनों एक बार सुहराबने अपनी माँके पास आकर बड़ेही कोमल स्वरसे पूछा,—"अम्मा! लड़कपनसे आजतक मैं बराबर तुझसे यह पूछता आता हूँ, कि मेरे वालिद्का नाम क्या है; लेकिन न मालूम तू क्यों नहीं बतलाती? जो कोई मुझसे यह सवाल कर बैठता है, उसके सामने मुझे चुप रह जाना और शर्म-से सर झुका लेना पड़ता है। अब तो यह शर्मिन्दगी बेबर्दाश्त हो गयी है। लड़कपनसे आजतक मैंने अपने अब्बाजानको नहीं देखा; उन्हें 'अब्बा' कहकर नहीं पुकारा; बापका प्यार कैसी चीज़ है, यह नहीं जाना, इससे बढ़कर रञ्जका बायस और क्या हो सकता है? अगर तू अब भी मुझसे यह बात पोशीद: रखेगी और मुझे अपने हमजोलियोंके रू-बरू शर्मिन्द: होनेको लाचार करेगी, तो मैं ख़ुदकुशी कर लूँगा—इस ज़लील तौरसे ज़िन्दगी बसर करना, अब मुझे गवारा नहीं।"

पुत्रके मुखसे कुछ क्षोभ, कुछ क्रोध और कुछ सङ्कोचसे भरे हुए वचनोंको सुनकर तमीना बड़ेही आश्चर्यमें पड़ गयी। साथही उसे यह सोचकर बड़ी ग्लानि हुई, कि कहीं मेरे नौजवान बेटेको इस बातके पोशीद: रखनेसे यह शक तो नहीं हो रहा है, कि मेरी

माँ पाकदामन और बाअसमत नहीं है ; इसीलिये मेरे बापका नाम नहीं बतलाती। यह बात मनमें पैदा होतेही तमीनाके हृदयमें एक बार सतीत्वका गर्व और स्वामीके उच्च-वंश और विमल-कीर्त्तिका अभिमान उदय हो आया। उसने बड़े ज़ोरसे गरजकर कहा,—"बेटा! ठंडे हो जाओ। इतने उतावले न बनो। सुनो—ख़ूब ग़ौरसे सुनो, कि तुम किस बहादुर और नेकनाम शख़्सके लख़्ते-जिगर हो—किस आलीख़ानदानमें तुम्हारी पैदाइश हुई है। जिस दुनियाके बेजोड़ और लासानी बहादुरकी जवाँमर्दी, दिलेरी और फ़तहयाबीका डङ्का सारे जहानमें बज रहा है, उसी नेकनाम सामके बहादुर बेटे ज़ालके तुम पोते हो और सिस्तानके जिस पहलवान सिपाही और शेर-नरका नाम इस वक़्त दुनियाके बड़े-बड़े बहादुरोंको भी ख़ौफ़से कँपा देता है, उन्हीं रुस्तमके तुम बेटे हो। बोलो, क्या अब भी तुम्हें अपने आलीख़ानदान होनेमें कोई शुबहा है? बेटा! तुम्हें शर्मिन्दगी क्यों हासिल होने लगी? बतलाओ तो सही तुम्हारे ख़ानदानका मुक़ाबला इस दुनियामें दूसरा कौन कर सकता है?"

यह कह, बुद्धिमती तमीनाने उसके पिता-पितामहोंकी कीर्त्ति-का बखान करते हुए उसे रुस्तमके भेजे हुए मणि-रत्नोंको दिखलाया। यह सब देख-सुनकर सुहराबको अपने पितासे मिलनेकी बड़ी प्रबल चिन्ता हुई और उसने कहा,—"अम्मा! अब तो मैं ज़रूरही अपने अब्बाजानके पास जाकर उनकी क़दमबोसी हासिल करूँगा और उन्हें देखकर अपनी आँखें शाद करूँगा।"



सुहराब और तर्मीना।

"खब ग़ौरसे सुनो, कि तुम किस बहादुर [illegible] सके लख्तेजिगर हो।"



Burman Press, Calcutta

[ पृष्ठ—९८ ]

यह सुनतेही तमीना भयसे थर्रा उठी। उसे वही पुरानी चिन्ता हो आयी। उसने घबरायी हुई आवाज़में कहा,—"बेटा ! तुम नेकनाम रुस्तमकेही लड़के हो, यह राज़ हर ख़ासोआमपर ज़ाहिर होनेसे बड़ी मुश्किल होगी। तूरानके बादशाह अफ़रासियाब तुम्हारे बापके कट्टर दुश्मन हैं। अगर उन्हें यह राज़ मालूम होगया, तो वे तुम्हें बहुत तकलीफ़ पहुँचायेंगे। तुम्हारे बापपर उनका जितना गुस्सा है, वह सब वे तुम्हींपर उतारने लगेंगे। इसलिये अभी कुछ दिन सब्र करो—इस राज़को पोशीदः-ही रहने दो।" कहते-कहते तमीनाकी आँखें सजल हो आयीं।

माताकी यह बात सुनतेही नवयुवक वीरके हृदयमें छिपी हुई तेजस्विता मुखड़ेपर झलकने लगी और उसने कड़ककर कहा,—"अम्मा ! तू फ़िज़ूल इतना डर रही है। यह महज़ तेरे दिलकी कमज़ोरी है। बादशाहके ख़ौफ़से मैं तो अब हरगिज़ इस राज़को पोशीदः न रखूँगा ; बल्कि हर ख़ासोआमपर ज़ाहिर कर दूँगा। तेरी सलाह मुझे पसन्द नहीं आती। डर किस चिड़ियाका नाम है, यह मैं नहीं जानता। और डरना भी किससे ? अपने बापके दुश्मनोंसे ? यह तो नामर्दोंकी बात है। अगर वे सचमुच मेरे वालिद्‌के दुश्मन हैं, तो मैंही उनसे जङ्गमें लोहा लेनेको मुस्तैद हूँ। मैं ज़ालिम अफ़रासियाबको इस मुल्कसेही निकालकर बाहर कर दूँगा—मुझे यक़ीन है, कि उसके सभी सिपाही मेरे झण्डेके नीचे आ जायेंगे। और तो और, मैं ख़ुद ईरानके बादशाह क़ैकाऊसको भी तख़्तसे उतार दूँगा और अपने वालिद्‌के सरपर ताज रखकर

उन्हेंही कैकाऊसकी जगहपर बादशाह बनाकर बैठाऊँगा। इसके बाद दोनों बाप-बेटे मिलकर मुन्सिफ़ी और रियाया-परवरीके साथ हुकूमत करेंगे। फिर कौन हमारी तरफ़ टेढ़ी निगाहसे देखनेकी हिम्मत कर सकेगा? आफ़ताब और माहताबकी रोशनी फैलतेही छोटे-छोटे तारे बेआब हो जाते हैं।"

यह कहते-कहते सुहराबकी नसें फड़क उठीं—उसकी आँखों-से वीरत्वका तेज फूट-फूटकर निकलने लगा। इधर तमीना घोर चिन्तामें पड़ गयी। उसने धीरे-धीरे कहा,—"बेटा! ईरानके ख़िलाफ़ खड़े होनेका हरगिज़ ख़याल न करना। यह तुम्हारे लिये बड़ीही बेजा बात होगी। तुम्हारे ईरानके ख़िलाफ़ हथियार उठातेही तुम्हारे वालिद ईरानकी ओरसे तुम्हारे साथ लड़नेके लिये ज़रूर तैयार हो जायेंगे। फिर तो बाप-बेटेमेंही छिड़ जायेगी। यह बहुतही बुरी बात होगी। बेटा! तुम इस ख़याल-को अपने दिलसे एकदम दूर कर दो।"

लेकिन वीर-मदसे उन्मत्त सुहराबको माताकी ये बातें अच्छी नहीं लगीं। लाचार, तमीना भी यही सोच, मन मारकर, चुप हो रही, कि अब इस परिन्देको पर हो गये हैं, अब इसे कौन उड़नेसे रोक सकता है?

# सुहराबकी यात्रा

इसके बाद एक दिन सुहराबने अपनी माताके पास आकर कहा,—"अम्मा! मैंने वालिदसे मिलनेके लिये जानेका पक्का इरादा कर लिया। अब मैं ज़रूर जाऊँगा—हरगिज़ नहीं रुक सकता। उनसे मिलनेके लिये मेरा जी तड़प रहा है। इसलिये तुम मुझे कोई अच्छासा घोड़ा दिलवाओ, जो रेगिस्तान और जङ्गलमें भी उसी तेज़ीसे दौड़ सके, जिस तेज़ीसे बराबर ज़मीनपर।"

बेटेकी यह बात सुन, तमीनाकी आँखोंसे आँसू गिरने लगे। उससे कुछ भी कहते न बन पड़ा। लाचार, उसैने सुहराबके लिये वही घोड़ा मँगवा दिया, जो सामिङ्गनकी एक घोड़ीके पेटसे रख़शकीही नस्लसे पैदा हुआ था। वह घोड़ा रख़शकीही तरह तेज़ दौड़नेवाला और होशियार जानवर था। उस घोड़ेको पाकर सुहराब बड़ाही ख़ुश हुआ।

अब रह-रहकर सुहराबके मनमें यही उमङ्ग उठने लगी, कि कब ईरान चलकर अफ़रासियाबको सिंहासनसे उतार दूँ और उसकी जगह अपने पिता रुस्तमकोही बैठाऊँ। इसके लिये उसने सामिङ्गनके चुने हुए नवयुवक वीरोंकी एक बहुत बड़ी सेना इकट्ठी की

और एक दिन बड़े साज-बाजके साथ यह सारा दल रणकी भेरी बजाता और विजय-पताका फहराता हुआ ईरानकी ओर चला।

सुहराबके इस तरह उत्साहके साथ, युद्ध-यात्रा करनेको बात तूरानके बादशाह अफ़रासियाबको भी मालूम हुई। वह दिल-ही-दिलमें ईरानके बादशाह और रुस्तम—दोनोंसे जले हुए बैठे थे। इसीलिये उन्होंने सुहराबको अपने पास बुलाकर उसकी पीठ ठोंकते हुए कहा,—"बहादुर नौजवान! तुम्हारे इस इरादेको देखकर मुझे निहायत खुशी हासिल हुई। तुम बड़े मौक़ेसे ईरान जा रहे हो। इस वक़ कैकाऊसके जुल्मोंके मारे वहाँकी रियाया घबरा उठी है। जाओ, मौक़ा देखकर मैं भी तुम्हारी हर तरहसे मदद करूँगा। अभी जो कुछ थोड़ेसे सिपाही और लड़ाईके सामान मैं तुम्हारे हमराह करता हूँ, उन्हें तुम अपनाही समझना। तुम उनसे अपनी ख़्वाहिश और मौक़ेके मुआफ़िक़ जैसा काम चाहो ले सकते हो।"

यह कह, बादशाह अफ़रासियाबने हुमाँ और बरमाँ नामके अपने दो प्रसिद्ध तथा वीर सेनापतियोंके अधीन एक बहुत बड़ी सेना सुहराबके साथ कर दी। साथही बहुतसी युद्ध-सामग्री भी उसे दी; परन्तु यह काम बादशाहने सुहराबकी सहानुभूतिसे प्रेरित होकर नहीं; बल्कि अपना मतलब साधनेके लियेही किया था। उन्हें ईरानके बादशाह और रुस्तम दोनोंहीपर बेतरह क्रोध था, इसलिये उन्होंने सोचा, कि दोनों बाप-बेटोंको भिड़ाकर अपने दुश्मनका ज़ोर घटाही देना चाहिये। इसी इरादेसे उन्होंने

अपने उन दोनों सेनापतियोंको एकान्तमें बुलाकर चुपकेसे कहा,—“देखना, वहाँ जानेपर हरगिज़ इन दोनों बाप-बेटोंको मिलने न देना। ऐसीही कोशिश करना, जिसमें एक दूसरेको अपना जानी दुश्मन समझे। अगर इस नौजवानने रुस्तमको मार डाला या क़ैद कर लिया; तो सारा बखेड़ाही दूर हो जायेगा और मैं बड़ी आसानीसे ईरानके तख़्तपर बैठ जाऊँगा। और अगर रुस्तमनेही इसे मार डाला, तोभी अपना कोई नुक़सान नहीं; क्योंकि आख़िरश यह भी तो दुश्मनकीही औलाद है, किसी-न-किसी दिन अपनेको तकलीफ़ही देगा।”

इस तरह भयानक षड्यन्त्र रचा गया। तूरानी फ़ौज सुहराबके दलमें जा मिली। दोनोंही सेनाएँ एक साथ ईरानके मुल्कपर हमला करनके इरादेसे चल पड़ीं।

रास्तेमेंही “मतीन” नामका एक बड़ाही मज़बूत क़िला मिला, जो ईरानके बादशाहके अधीन था। इस क़िलेमें वज़ीर नामका एक वीर सेनापति बहुतसी सुशिक्षित ईरानी फ़ौज लेकर रहता था। उसने एक बहुत बड़ी फ़ौजको क़िलेकी तरफ़ आते देख, अकेलेही क़िलेसे बाहर आकर ललकारते हुए कहा,—“तुम लोग कौन हो और क्यों लश्करकशी किये हुए ईरानके अन्दर घुसे जाते हो? ईरान बहादुरोंका मुल्क है। कौन ऐसा बहादुर पैदा हुआ है,जो यहाँ फ़ौजके साथ आनेकी हिम्मत कर रहा है? बस, अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी हो, तो यहीं रुक जाओ, नहीं तो मैं एक-एकका सिर क़लम कर लूँगा।”

सेनापतिकी यह अभिमान-पूर्ण बातें सुन, सुहराबने हँसकर, उससे भी दुगुना अभिमान दिखाते हुए, कहा,—"मुझे तो ऐसा मालूम होता है, कि तुम्हेंही अपनी जान प्यारी नहीं है ; अगर होती, तो तुम यों तनहा यहाँतक आनेकी हिम्मत न करते।"

यह सुनतेही वज़ीरने चुटीले सर्पकी तरह क्रोधमें आकर कहा,—"अरे! तू बकता क्या है? अभी तू नादान तिफ़्ल है। मुझे तेरा लड़कपन देख, तरस आता है, नहीं तो अभी तेरा सर धड़से जुदा कर स्यार-कुत्तोंको खिला देता।"

बस फिर क्या था? सुहराब फ़ौरन उससे लड़नेके लिये तैयार हो गया। दोनोंमें कुछही देर लड़ाई हुई थी, कि वज़ीर अपने घोड़ेसे नीचे गिर पड़ा। सुहराब उसकी छातीपर चढ़ बैठा और शेरकी तरह गरजता हुआ बोला,—"अब बोल, तो मैं तेरा सिर ख़ञ्जरसे काट डालूँ।" इसपर वह हारा हुआ वीर गिड़गिड़ाकर जीवन-भिक्षा माँगने लगा। सुहराबने उसे क़ैदी बनाकर हुमाँके हवाले कर दिया। जान बख़्श दी।

मतीनके क़िलेमें गुश्तहाम नामका एक और सेनापति रहता था। उसके एक लड़की थी, जिसका नाम 'गिर्द-अफ़रीद' था। वह अपने पिताके साथ उसी क़िलेमें रहती थी। वह जैसीही सुन्दरी, वैसीही युद्ध-निपुण भी थी। लड़कपनसेही वह लड़ाई-के फ़नमें बड़ी होशियार हो गयी थी। उन दिनों सारे ईरानमें उसकी टक्करकी कोई बहादुर औरत नहीं थी। उसने जब वज़ीर-के क़ैद होनेकी ख़बर सुनी, तब एकबारगी क्रोधसे भर आयी।



सुहराब और गिर्द-अफ़रीद।

"देखना, भागनेका इरादा न करना ; क्योंकि तुम मेरी बहादुरीका इनाम हो !"

[ पृष्ठ—१०४ ]

Burman Press. Calcutta

उसने झट मर्दाना लिबास पहन, हथियार बाँध लिये और तुरतही लड़नेके लिये तैयार हो, सुहराबके पास आयी।

अपने सामने एक कमसिन नौजवानको देखकर सुहराब बड़े ज़ोरसे हँसा और बोला,—"आओ। आओ। अबके तुम्हारी भी क़ूवतकी आज़माइश की जाये।" फिर तो दोनों ओरसे तीर और तलवार चलने लगी। बड़ी देरतक दोनोंमेंसे कोई न हारा। अन्तमें सुहराबने उसकी कमरमें बड़े ज़ोरसे बर्छा गोद दिया। इससे वह गिरूँ-गिरूँ हो गयी; पर तुरतही सम्हलकर क़िलेकी ओर मुड़ी। इसी समय सुहराबने आगे बढ़कर उसका रास्ता रोक लिया और उसपर कमन्द फेंककर उसे नीचे गिरा दिया। नीचे गिरतेही उस सुन्दरीके सिरकी पगड़ी दूर जा गिरी और उसके भीतरसे रमणी-सुलभ लम्बे-लम्बे केश-गुच्छ निकल पड़े। अब तो सुहराबको स्पष्ट मालूम हो गया, कि यह कोई नवयुवती है। यह अद्भुत तमाशा देख, सुहराब अचम्भेमें आ गया। उसने मन-ही-मन कहा,—"ओह! यह बात तो बिलकुल बईदुल-क़यास है! जङ्गके मैदानमें एक नाज़ुक औरतकी ऐसी बहादुरी और दिलेरी तो आजतक कभी नहीं देखी गयी!"

आख़िरकार सुहराबने उस औरतको भी बड़े अदबके साथ उठाकर अपने यहाँ क़ैद कर रखा और मधुर स्वरसे कहा,—"कुछ ख़याल न करना, सिपाहीकोही क़ैद भी नसीब होती है। लेकिन देखना, कहीं भागनेका इरादा न करना; क्योंकि तुम मेरी बहादुरीका इनाम हो!"

यह सुनतेही उस वन्दिनीके चेहरेपर स्याही दौड़ गयी। उसने सोचा,—"अब तो मुझे ज़िन्दगी-भर इसीकी ज़रख़रीद बाँदी बनकर रहना पड़ेगा। क्या करूँ? लाचार हूँ।" तोभी उसने कपटका जाल फैलाते हुए कहा,—"बहादुर! तुम्हारी मिहनत हरगिज़ रायगाँ नहीं जायेगी। तुम्हारी बहादुरीका इनाम तुम्हें हाथोंहाथ मिल जायेगा। लेकिन अगर कहीं क़िलेके सिपाहियोंको यह मालूम हुआ, कि तुमने बड़ी-बड़ी मुश्किलोंसे मुझ औरतको शिकस्त दी है, तो उनका ख़याल तुम्हारी जानिब उतना अच्छा न होगा। साथही अगर मैं छिपे-चोरी तुमसे शादी कर लूँ, तो मेरे बारेमें भी मेरे रिश्तेदारोंके ख़याल ख़राबही होंगे। इसलिये क्याही अच्छा हो, अगर तुम मुझे क़िलेमें जाने दो। मैं अपने वालिदसे हुक्म लेकर फिर तुम्हारे पास चली आऊँगी और ताज़िस्त तुम्हारी बाँदी बनकर तुम्हारी ख़िदमत किया करूँगी। क़िलेमें मेरे बूढ़े बाप रहते हैं। उन्हींके हाथमें वहाँका सारा मालोज़र है। वह सब भी मैं तुम्हारीही नज़र कर दूँगी।"

यह कहते-कहते उसने एक तिरछी निगाहका ऐसा कटीला वार सुहराबपर किया, कि वह अपने आपेमें न रहा। उसने उसी समय उसको छुटकारा दे दिया। इसके बाद वह अपनी मीठी-मीठी बातोंमें फँसाकर अकेले सुहराबको अपने साथ ले चली और क़िलेके दरवाज़ेपर उसे खड़ा करके आप अन्दर चली गयी। मोह-मुग्ध सुहराब चुपचाप वहीं खड़ा रहा।

अपनी प्यारी लड़कीको आते देख, पिताने उसे बड़े प्यारसे

हृदयसे लगा लिया। अन्यान्य सैनिकोंने भी बड़ा हर्ष प्रकट किया। थोड़ीही देर बाद वह क़िलेके ऊँचे बुर्ज़पर चढ़कर बड़े ज़ोरकी आवाज़में बोली,—"ऐ तूरानी बहादुर! तू क्यों बेकार जङ्गके लिये तुला हुआ है? जा, अपने यार-दोस्तोंमें मिल जा। यहाँ फ़िज़ूल क्यों खड़ा है?"

सरल-हृदय सुहराब उसकी इस विश्वासघातकताको देखकर विस्मित हो गया। मारे पछतावेके उसका हृदय जलने लगा। उसने भी बड़े ज़ोरसे पुकारकर कहा,—"अबे ओ मक्कार औरत! अगर मैं पहले जानता, कि तेरे अन्दर इतनी शरारत भरी है, तो मैं तुझे इस तरह क़िलेके बुर्ज़पर चढ़कर बहँकी-बहँकी बातें कहनेका मौक़ा नहीं देता; लेकिन याद रखना, तेरे इस मक्रो-फ़रेबका अञ्जाम बहुतही बुरा होगा। जब यह क़िला एकदम मिस्मार कर दिया जायेगा और तू फिर मेरे हाथों क़ैद होगी, तब तेरी क्या हालत होगी, उसे ज़रा सोच ले। उस वक्त सिवा रो-रोकर ज़मीन तर करनेके और कुछ भी करते न बन पड़ेगा। सिर्फ़ रोनाही-तड़पना हाथ रहेगा।"

यह सुनतेही वह अभिमानिनी बोल उठी,—"वहशी तूरानियोंकी मजाल नहीं, जो ईरानकी ज़मीनपर क़दम भी रख सकें। हमारे बादशाह जब सुनेंगे, कि तुमने यहाँ आकर इस क़दर ज़ुल्मो-सितम करना शुरू किया है और नेकनाम बहादुर रुस्तम जिस वक्त हथियारोंसे लैस होकर जङ्गके मैदानमें उतर पड़ेंगे, उस वक्त तुम्हारा एक भी आदमी यहाँसे जीता नहीं लौटने पायेगा। उस

वक्त सिवा रुस्तमके रू-ब-रू सिर झुका लेनेके और कुछ भी करते न बन पड़ेगा। फिर क्यों ऐसी बेइज़्ज़ती गवारा करने जा रहे हो? जाओ, घर लौट जाओ। फ़िज़ूल अपने सिपाहियोंके सर न कटवाओ। जल्द भागो यहाँसे।"

यह कह, वह पलक मारते आँखोंकी ओट हो गयी। सुहराब उसकी बातें सुनकर और भी क्रोधित हुआ। दिल-ही-दिलमें सैकड़ों पेंचोताब खाते हुए वह थोड़ी देर वहीं चुपचाप खड़ा रहा। जालमें फँसी हुई हरिणीका इस तरह निकल भागना, उसे बड़ा दुःखदायी मालूम होने लगा। उसने क्रोध, लज्जा और अनुताप-से प्रेरित होकर उसी समय सङ्कल्प किया,—"ओफ़! आज तो इस फ़ितनागरने मुझे ख़ूब छकाया। ख़ैर, देखा जायेगा। कल सवेरेही इसका बदला वसूल किया जायेगा। अगर यह बुलन्द क़िला मिस्मार नहीं कर दिया गया, इसकी एक-एक ईंट नहीं निकाल ली गयी, तो फिर मेरा नाम नहीं। कलहो इसके अन्दर और आस-पास रहनेवाले मेरी क़ूवते-बाज़ूका नज़ारा देखेंगे। मैं एक-एकका सिर काटकर रख दूँगा और वह नाचीज़—बदकार औरत जब फिर क़ैद होकर मेरे रू-ब-रू आयेगी, तब उसको भी आजकी इस शोख़ी और शरारतकी पूरी-पूरी सज़ा दूँगा।"

मन-ही-मन यही सङ्कल्प करता हुआ सुहराब अपने ख़ीमेमें लौट आया और अवसरकी प्रतीक्षा करने लगा।

इधर गिर्दाफ़रीदने अपने पितासे जब सुहराबकी वीरताकी बात कही, तब वह मन-ही-मन बहुत डरा। उसने तुरतही सब

लोगोंको बुलाकर सलाह-मश्वर: करना शूरू किया। सभामें यही निश्चय हुआ, कि पहले ईरानके शाहके पास ख़बर भेजकर रातोंरात सब लोग गुप्त-पथसे क़िलेके बाहर निकल जायें। इसी निश्चयके अनुसार दुर्ग-रक्षकने बादशाहके पास एक पत्र लिखा, जिसमें यही कई बातें लिखी थीं,—

"एक तूरानी नौजवानने बहुतसी पैदल और घुड़सवार फ़ौजके साथ मतीनके क़िलेपर हमला किया है। बहादुरीमें वह ईरानके मशहूर पहलवान नेकनाम सामकेही मानिन्द मालूम पड़ता है। उसका नाम सुहराब है। हमारे बहादुर सिपहसालार वज़ीरको उसने क़ैद कर लिया है। उसके पास इतनी बड़ी फ़ौज है, कि हमलोग उसका मुक़ाबला नहीं कर सकते। इस क़िलेका दुश्मनोंके हाथमें पड़नाही ज़ियादातर मुमकिन मालूम होता है। अगर फ़ौरन इस फ़ौजका आगे बढ़ना नहीं रोका गया, तो ईरानी सल्तनतपर बला नाज़िल हो जायेगी। इस अज़दहेको क़ाबूमें लाना, सिवा रुस्तमके दूसरे किसीके लिये ग़ैरमुमकिन है। इस आफ़तसे सिर्फ़ वेही मुल्कको बचा सकते हैं। कब क्या हो जायेगा, इसका कोई ठिकाना नहीं है। हमलोग तो हिफ़ाज़तके लिये क़िला छोड़कर दूसरी जगह जा रहे हैं।"

बादशाहके पास यह चिट्ठी भेजकर सबलोग भाग जानेकी तैयारी करने लगे। गिर्दाफ़रीद अपने पिता और धन-रत्नके साथ पहलेही निकल भागी।

रात बीती। प्रभात हुआ। सूर्यकी किरणें संसारको प्रकाशित

करने लगीं। सुहराबने शय्यासे उठकरही शीघ्र-शीघ्र नित्य-कर्मोंसे निपटकर युद्धकी सूचना देनेके लिये अपनी बिगुल बजायी। साथही वह अपनी विशाल सेना लिये क़िलेपर चढ़ दौड़ा। थोड़ीही देरमें क़िलेका दरवाज़ा टूट गया और सुहराब बड़े अभिमानके साथ अपनी सेनाको सङ्ग लिये हुए उसके अन्दर घुसा। लेकिन वहाँ पहुँचकर उसने जो कुछ देखा, उससे उसे बड़ी निराशा हुई। उसने देखा, कि यहाँ तो चिड़ियाका पतातक नहीं है—पींजरा एकदम सूना पड़ा है! क़िलेके अन्दर न आदमी है, न आदम-ज़ाद! क़िलेका कोना-कोना ढूँढ़ा गया; पर कहीं कोई सिपाही या वह औरत नहीं दिखाई दी। यह देख, सुहराब बड़े अचम्भेमें पड़ा। उसने सोचा,—"यह कैसी हैरतअङ्गेज़ बात है? इतने सिपाही इस क़िलेके अन्दरसे एकाएक किधर ग़ायब हो गये? यह क़िला क्या कोई तिलिस्म है और वे सब क्या कोई जादूगर थे, जो एकदम सब-के-सब नज़रोंसे ग़ायब हो गये? मेरी तो दिलकी दिलमेंही रहा चाहती है।"

सुहराबका जी टूट गया। उसका सारा सङ्कल्प मिट्टीमें मिल गया। उसके कलेजेपर काला नागसा लोटने लगा; क्योंकि वैरका बदला लेना तो थाही, उस वीर नारीपर उसका दिल भी आ गया था। इसीसे क़िलेके सिपाहियोंके भाग जानेका उसे जितना पछतावा नहीं था, उससे कहीं अधिक दुःख उस मोहिनीके नहीं मिलनेका था। वह उसे न पाकर लम्बी साँसें लेने और हाथ मलने लगा।

प्रेमके फन्देमें पड़े हुए लोगोंकी चाल-ढाल, रहन-सहन और तौर-तरीक़ा देखकरही लोगोंको थाह मिल जाती है। सुहराबकी बेचैनी-का सबब भी लोगोंने जानही लिया। एक दिन सुचतुर सेनापति हुमाँने सुहराबसे कहा;—"ऐ बहादुर नौजवान! तुम एक नाचीज़-सी औरतके फेरमें पड़कर अपने मक़सदको हरगिज़ न भूलो। यह इश्क़का कूचा बड़ाही टेढ़ा है। इसमें बहुत फूँक-फूँककर पैर रखना होता है। जो इस कूचेमें क़दम रखता है, वह फिर किसी कामके लायक़ नहीं रह जाता। जो सचमुच बहादुर होते हैं, वे लाख हूरों और परियोंके बहँकावेमें भी नहीं आते। तुम एक इतनी बड़ी फ़ौजके सरदार होकर, एक मक्कारा ऐयाराके ख़यालमें ग़र्क हो रहोगे, तो तुम्हारा किया कुछ भी न होगा। ख़याल करो, हमलोग अपने मुल्कसे कितनी दूर आ गये हैं। बड़े मौक़ेसे हमें यह क़िला बेतरद्दुद हाथ लगा है। अब क्या हम इसे छोड़ दें? ईरानका बादशाह हमलोगोंपर ख़ूब जला होगा और जल्दही इसका बदला लेनेकी धुनमें होगा। ऐसी हालतमें तुम्हारा इस क़दर दूसरी तरफ़ मशग़ूल हो रहना, बड़ी शर्मकी बात है। उठो—ईरानपर हमला करो। जिस दिन ईरानका तख़्तेशाही तुम्हारे पैरोंके नीचे आ जायेगा, उस दिन ऐसी-ऐसी हज़ारों ख़ूबरू परी-जमालें तुम्हारी क़दमबोसी करने आयेंगी।"

हुमाँकी यह ओजस्विनी वक्तृता सुनकर सुहराबकी मोह-निद्रा टूट गयी। वह फिर पहलेकी तरह जोशसे भर उठा।



# रुस्तमका अपमान

इधर मतीनके क़िलेसे आये हुए दूतके हाथसे पत्र लेकर पढ़तेही ईरानके बादशाह कैकाऊस बड़ी हैरतमें पड़े। वज़ीरका क़ैद होना, मतीनके क़िलेका दुश्मनोंके हाथमें चला जाना, क़िलेके तमाम सिपाहियोंका भागना और कमसिन सुहराबकी अद्भुत वीरता आदि बातें पढ़कर उनके आश्चर्य और दुःखका कोई ठिकाना न रहा। उन्होंने उसी समय अपने बड़े-बड़े सेनापतियोंको बुला भेजा। उनकी बुलाहट पातेही गुदरेज़, गुर्गन और बहराम, आदि नामी-गरामी सेनापति उनके पास आ पहुँचे। सबकी सलाहसे बादशाहने इस बलाको सिरसे टालनेके लिये रुस्तमको बुलानाही निश्चय किया और सेनापति ग़ैबको एक पत्रके साथ ज़ाबुलिस्तानकी ओर रवानः किया।

उस पत्रमें बादशाहने रुस्तमको लिखा,—

"ऐ ईरानके लामिसाल जवाहिर! तुम्हारी कहाँतक तारीफ़ की जाये? हमेशःसे तुम्हीं इस सलतनतको हर बलासे महफ़ूज़ रखते आये हो। अबके सुहराब नामका एक नौजवान बहादुर बहुत बड़ी फ़ौज लेकर हमारे मुल्कपर चढ़ आया है। उसने मतीन-के क़िलेमें रहनेवाले हमारे सिपहसालार वज़ीरको हराकर क़ैद कर

लिया है। वह क़िला भी उसके क़ब्ज़ेमें आगया है। इस मामलेने सारे मुल्कमें खलबली डाल दी है। इस आफ़तको दूर करना, तुम्हाराही काम है। तुम्हारी तलवार और गदाके सामने कोई नहीं ठहर सकता। मेरी इज्ज़त तुम्हारेही हाथमें है; लिहाज़ा, जल्द चले आओ और अपने मुल्कको इस बलासे बचाओ।"

यथासमय सेनापति ग़ैब रुस्तमके घर आ पहुँचे। कुशल-समाचारके बाद ग़ैबने बादशाहका पत्र उसके हाथमें दे दिया। पत्र पढ़कर रुस्तम अपने मन-ही-मन विचार करने लगा,—"यह नौजवान एकाएक किधरसे टपक पड़ा? तूरानवालोंमें ऐसा बहादुर तो आजतक कोई पैदाही नहीं हुआ। जब मैं सामिङ्गनसे रवानः होने लगा था, तब तमीनाको लड़का होनेवाला था; मगर ख़ुदाके फ़ज़लसे उसे लड़का न होकर लड़कीही हुई। इस लिये यह मेरा लड़का तो हरगिज़ नहीं है। फिर यह ऐसा बहादुर कौन है, जिसके डरसे बादशाहतक इतने काँप उठे हैं?"

इस तरह सोच-विचार कर, रुस्तमने ग़ैबसे कहा,—ख़ैर,कोई परवा नहीं। मैं अभी उस नादान छोकरेकी सारी शरारत भुलाये देता हूँ। इस टिमटिमाते चिराग़को गुल करनेके लिये महज़ एक-ही फूँक काफ़ी होगी। अभी नसोंमें नया ख़ून दौड़ रहा है। यह उसीका पहला जोश है। मगर इसे ठण्डा करते क्या देर लगेगी? चलो, मौजसे कुछ खाओ-पिओ। इसके बाद देखा जायेगा।"

इसपर ग़ैबने कितना कहा, कि बादशाहका हुक्म जल्दीही आपको बुला लानेका है, इसलिये देर न कीजिये; पर रुस्तमने नहीं

माना और तुरतही नौकरोंको जलसेका इन्तज़ाम करनेका हुक्म दिया। थोड़ीही देरमें महफ़िलका समा बँध गया। ख़ूब खाना-पीना और नाचना-गाना हुआ। इसी तरह आठ-दस दिन बीत गये। तब रुस्तमको ईरान चलनेका ख़याल आया। बात-की-बात-में सेना तैयार होगयी और रुस्तमके वीर भाई ज़हूरके अधीन बहुत बड़ी ज़ाबुली सेना रुस्तमके साथ-साथ चल पड़ी।

यथासमय ससैन्य रुस्तम राजधानीमें आ पहुँचा। राज्यके बड़े-बड़े सेनापतियोंने आगे बढ़कर उसकी अगवानी की; परन्तु अपनी आज्ञाका पालन करनेमें रुस्तमकी ओरसे इतनी देर होजाने-के कारण बादशाह क़ैकाऊस बेतरह नाराज़ हो गये थे, इस लिये जब रुस्तम उनके सामने आया, तब उन्होंने क्रोधसे अन्धा होकर कहा,—"क्यों? इतनी हिमाक़त? मेरा परवाना मिलनेपर भी तूने इतनी देर लगायी? यह मेरी सरासर तौहीन है। तुश! तुम अभी रुस्तमको फाँसीपर चढ़ा दो। इसने अपने मुल्कके बादशाह-की तौहीन की है। और देखो, ग़ैवने भी इसके घर जाकर इतनी देर लगायी, इस लिये उसे भी सूलीपर चढ़ाओ।"

यह दण्डाज्ञा सुनतेही रुस्तम मारे क्रोधके जल उठा। इतनेमें बादशाहका हुक्म पाकर ज्योंही तुशने उसकी ओर हाथ बढ़ाया, त्योंही रुस्तमने उसे ऐसा झटका दिया, कि वह भहराकर गिर पड़ा। इसके बाद पासही खड़े घोड़ेपर सवार हो, रुस्तमने मेघकी तरह गरजते हुए कहा,—"ऐ अहसान-फ़रामोश बादशाह! तू बुज़दिल, नामर्द और ज़ालिम है। तूने शाही तख़्तपर बैठकर इसे

नापाक कर दिया है। बेवक़ूफ़ कहींका! इतने दिनोंतक मैं तुझे हर बलासे बचाता आया। इसका क्या यही नतीजा है? ठीक समझ रखना, रुस्तम सिवा खुदाके और किसीसे नहीं डरता। किसी इनसानसे डरनेका वह नाम नहीं जानता। मैं तुझे एक मिट्टीके ढेलेसे बढ़कर नहीं मानता। बेहया कहींका! दूसरोंका मुँह क्यों ताकता है? अगर हाथोंमें ताक़त है, दिलमें जोश है, तो खुद जाकर उस तूरानी नौजवानका सामना कर। ओफ़! बदबख़्त! तूने मुझे बड़े बेवक़्त तकलीफ़ दी। आजतक मिस्र, माज़न्दरान, चीन वग़ैरह मुल्कोंमें मैं मुफ्तही तेरे लिये अपना सिर कटानेको तैयार होता आया। रुस्तम न होता, तो तू इस तख़्त-पर बैठ लेता। अगर एक दफ़े भी मैं ज़रा आँखें बन्द कर लेता, तो तेरा कभीका सफ़ाया हो चुका होता। एक दफ़े यहाँके तमाम लोगोंने मेरे दादाको यह तख़्त देना चाहा था; लेकिन उन्होंने तख़्तका लालच नहीं किया और सलतनतकी हमेशः ख़िदमत और हिफ़ाज़त करते रहे। अगर मैंने तख़्त लेना चाहा होता, तो आज तू इस तरह अपने एक सच्चे दोस्तकी तौहीन करनेका मौक़ा नहीं पाता।"

यह कह, रुस्तमने अपने साथके सिपाहियोंकी ओर देखते हुए कहा,—"भाइयो! ख़बरदार हो जाओ। मैं तो अब रुख़सत होता हूँ। तुम लोग जाकर उस बहादुर नौजवानका सामना करो, जो ईरानके मुल्कको अपनी चुटकियोंसे उड़ा देनेकी ताक़त रखता है। अब ईरानकी ख़िदमत मुझ बदनसीबसे नहीं हो सकती।"



अपमानित रुस्तम ।

"रुस्तम, उसका भाई और सब सिपाही उसके पीछे पीछे चले।"

Burman Press, Calcutta.

[ पृष्ठ—११७ ]

यह कह, रुस्तम चल दिया। साथ-ही-साथ उसका भाई और सब सिपाही भी उसके पीछे-पीछे चले। यह देख, बादशाह हत-बुद्धि हो रहे। इसी समय इस घरेलू झगड़ेका भयङ्कर परिणाम सोचकर गुदरेज़ने बादशाहसे कहा,—"मुझे यह नहीं मालूम होता, कि रुस्तमको किस कुसूरके लिये आपने फाँसीका हुक्म सुनाया था? आपके दिमाग़में रुस्तमको सज़ा देनेकी बात पैदा होना, इस सलतनतकी ख़राबीकी पेशेनगोई करता है। रुस्तमकी बहादुरी, दिलेरी और इस सलतनतकी वफ़ादारीके साथ की हुई ख़िदमतोंको यादकर आपको हरगिज़ ऐसी बात ज़ुबानसे नहीं निकालनी थी। इस वक़ सरपर ज़बरदस्त दुश्मन खड़ा है। ऐसी हालतमें क्या आपके लिये यही फ़र्ज़ था, कि रुस्तमके मानिन्द वफ़ादार दोस्तको अपना दुश्मन बना डालें? इस वक़ सिवा रुस्तमके, कोई ईरानको नहीं बचा सकता।"

क़ैकाऊस अपने इस सेनापतिकी बहुत इज़्ज़त करते थे। सेनापति गेव इन्हींका लड़का था। इन दोनों पिता-पुत्रने समय-समय-पर बादशाहकी बड़ी सहायता की थी और अनेक युद्धोंमें विजय प्राप्त कर ईरानका मान बढ़ाया था। इस लिये गुदरेज़की बातें सुनतेही बादशाहके मनका भाव एकाएक बदल गया। उन्होंने गिड़गिड़ाकर कहा,—"बजा है, मेरे बहादुर सिपहसालार! तुम्हारा फ़र्माना बहुतही बजा है। मैंने वाक़ई बड़ी भारी ग़लती की। इसके लिये मैं सख़्त नादिम और ग़मज़दः हूँ। जाओ। किसी तरह रुस्तमको समझा-बुझाकर लौटा लाओ।"

यह सुन, सेनापति गुदरेज़, स्वयं घोड़ेपर सवार हो, रुस्तमके पास पहुँचे और बादशाहकी ओरसे माफ़ी माँगते हुए बोले,—"बादशाहने आपके साथ बड़ाही बुरा बर्त्ताव किया; इसमें शक नहीं; लेकिन आपके चले आतेही उन्हें सख़्त नदामत हुई। अपनी ग़लती समझकरही उन्होंने मुझे आपके पास भेजा और आपकी मदद माँगी है। बादशाहका दिमाग़ ठिकाने नहीं है। वे हद दर्जेके बेवक़ूफ़ हैं। उनकी रञ्जोखुशीका आप कुछ ख़याल न करें। अगर आप उनकी हरकतसे बेहद नाराज़ भी हुए हों, तो भी मेरा कहना यही है, कि सारे मुल्कने तो आपकी तौहीन नहीं की? आप अपने हमवतन ईरानियोंको इस बलासे बचानेके लिये क्यों नहीं आगे बढ़ते?"

रुस्तमने मुस्कराते हुए कहा,—"आपकी ये दलीलें ठीक नहीं हैं। मैं फ़िज़ूल बातें करना नहीं चाहता। इस वक़ मैं सिवा ख़ुदाके और किसी बादशाह या शाहनशाहकी रत्ती-भर भी परवा नहीं करता।"

चतुर सेनापतिने कहा,—"अगर आप इस वक़ अपने बादशाहकी कोई बात माननेके लिये तैयार नहीं हैं, तो भलेही न मानें; लेकिन ठीक समझ लीजिये, इसका नतीजा यही होगा, कि हमारे मुल्कको दुश्मनोंके हाथों बहुत ईज़ा उठानी पड़ेगी। सारा मुल्क तबाह हो जायेगा। आज जो ईरानी सुखकी नींद सो रहे हैं, वे-ही कल तड़प-तड़पकर जान देंगे। ओह! एक बिना मूँछोंके नौजवान छोकरेके हाथों इस मुल्ककी इस क़दर तौहीन हो, यह

हमलोगोंसे कैसे देखा जायेगा ? सच जानिये, आपपर भी इसके लिये बहुत बड़ी बदनामी आयेगी।”

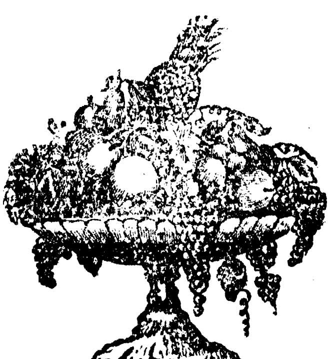
अन्तमें चतुर सेनापतिकी चतुराई काम कर गयी। देशकी भावी दुर्दशाका स्मरण कर, महामना रुस्तमका हृदय काँप उठा। वह सारी पिछली बातें भूल गया और क्रोधसे थरथर काँपता हुआ अपने देशकी सेवाके लिये सेनापति गुदरेज़के साथ-साथ उसी समय चल पड़ा।

इस बार रुस्तमके दरबारमें आतेही बादशाहने उसकी बड़ी आवभगत की और विनयके साथ कहा,—“मेरे बहादुर दोस्त! पिछली बातें भूल जाओ। तुम्हें मालूमही है, कि मैं ज़रा उजड्ड हूँ। जल्दबाज़ी करनेकी मेरी आदतसी हो गयी है। महज़ मामूली बातपर भी मैं कभी-कभी बेतरह बिगड़ उठता हूँ। मैंने बड़ी ग़लती की, जो तुम्हारे साथ वैसी बेजा हरकत की ; लेकिन तुम्हारे दरबारसे रुख़सत होतेही मैं अपनी हरकतपर सख्त नादिम हुआ। ऐन खुशक़िस्मतीका मुक़ाम है, कि तुम फिर आ गये। अब मेरी ताक़त हज़ार गुनी बढ़ गयी। अब मेरा सारा ख़ौफ़ दूर हो गया। मैं बिलकुल बेफ़िक्र हो गया।”

यह कह, बादशाह चुप हो गये। तब रुस्तमने भी बड़े अदबके साथ कहना शुरू किया,—“जहाँपनाह! आप हमारे मुल्कके बादशाह और हम सबके लिये इज़्ज़त, तहज़ीब, ख़िदमत और परस्तिश करनेकी चीज़ हैं। इर्शाद कीजिये, मैं फ़िलहाल कौनसी ख़िदमत बजा लाऊँ ?”

रुस्तमकी इस सज्जनतासे परम प्रसन्न हो, क़ैकाऊसने कहा,—"सब लोग इस वक्त हैरान-परेशान हो रहे हैं, इसलिये आज तो खूब दिल खोलकर मज़े उड़ाये जायें। कलसे जङ्गकी तैयारी की जायेगी।"

बादशाहकी इस इच्छाका सब लोगोंने समर्थन किया। बस, शीघ्रही सब लोग झरनेके पास बने हुए खुशनुमा बाग़में आ पहुंचे और वहाँ खाने-पीनेके साथ-साथ नाचने-गानेमें मग्न हो रहे।



# सेनापति रुस्तम

सवेरा हुआ। भगवान् सूर्यने सारे संसारपर अपनी किरणोंका जाल फैला दिया। क़ैकाऊसके हुक्मसे सारी ईरानी सेना युद्ध-क्षेत्रमें जानेके लिये तैयार हो गयी। महावीर रुस्तमकोही सेनापति बनाया गया। यह सारी सेना क्रमशः मतीन-दुर्गके सामनेवाले मैदानमें आ पहुँची और वहीं डेरे-तम्बू गाड़कर टिक रही। क़िलेमें टिकी हुई सुहराबकी सेनाको भी इस सेनाके आगमनका समाचार मालूम हुआ। ईरानियोंकी इस बेशुमार फ़ौजको देखकर तूरानियोंके दिल दहल उठे। उन्होंने अपनी घबराहट सुहराबपर ज़ाहिर की।

सुहराबने भी क़िलेके बुर्ज़पर चढ़कर देखा, कि ईरानकी एक बहुत बड़ी सेना सामनेवाले मैदानमें डेरा डाले पड़ी हुई है। उसके एक-एक सिपाहीके दिलमें उमङ्ग भरी हुई है। उत्साहसे उनकी बोटी-बोटी फड़क रही है। लेकिन यह सब देखकर भी सुहराबका चित्त विस्मित या भीत नहीं हुआ। उलटा, उसका चेहरा ख़ुशीसे खिल उठा। उसने तूरानी सेनापति हुमाँको कुछ डरते देखकर ललकारते हुए कहा,—"तुम बहादुर होकर भी इस क़दर पस्तहिम्मत होते हो? ख़ौफ़ और बदगुमानीको दिलसे दूर कर

दो। ख़ौफ़ काहेका? देखो, मैं किस आसानीसे इस सारी फ़ौजको यहाँसे खदेड़ भगाता हूँ। तुम ज़रा भी न घबराओ।"

यह कह, सुहराब नीचे उतरा। उसने बड़े अभिमानसे हुमाँको क़िलेके सामने एक तम्बू गड़वानेके लिये कहा। रातको उस तम्बूमें रोशनी जलायी गयी—वीर युवक अपने तूरानी युद्ध-मन्त्रियोंको लेकर गर्वके साथ उस तम्बूमें आ बैठा। आनन्द-आमोदके साथ-साथ युद्धके विषयमें भी परामर्श होने लगा।

इधर ईरानी सेना पहलेसेही तम्बू-ख़ीमे गाड़कर निश्चिन्त हो चुकी थी और इस समय सबलोग खा-पीकर विश्राम कर रहे थे। इसी समय रुस्तमने विचार किया, कि युद्ध आरम्भ होनेके पहले शत्रुकी समस्त गति-विधिका पता लगा लेना चाहिये। यही सोचकर वह स्वयं रातकी अँधेरीमें लुकता-छुपता हुआ सुहराबके दरबारवाले तम्बूके पास आकर आहट लेने लगा। उसने देखा, कि एक बहादुर नौजवान शेरकी तरह अकड़ा हुआ बैठा है। उसकी एक ओर ज़न्दाँ और दूसरी ओर बरमाँ नामके दो प्रसिद्ध वीर सैनिक बैठे हुए हैं। रुस्तम ज़रा और पास आकर उनकी बातें सुननेकी आशासे ठहर गया।

एकाएक ज़न्दाँ उठा। वह सुहराबका शरीर-रक्षक था। जिस समय सुहराब सामिङ्गनसे चलने लगा था, उस समय उसकी स्नेहमयी माताने ज़न्दाँको अपने पास बुलाकर कहा था,—"भाई! देखना, तुम एक लेहज़ःके लिये भी सुहराबको अपनी आँखोंके ओझल न करना। हमेशः इसे अपनी नज़रोंके



रुस्तमकी जासूसी ।

"रुस्तम सुहराबके दरबारवाले तम्बूके पास आकर आहट लेने लगा ।"

Burman Press, Calcutta.

[ पृष्ठ—१२२ ]

सामने रखना। जब देखना, कि इसकी जानोंपर आ बनी है, तब झटपट इसको इसके वालिद्से मिला देना ; फिर कोई खुटका न रह जायेगा।" राजकुमारी तमीनाकी इसी बातको मानकर ज़न्दाँ हर घड़ी सुहराबके साथही रहता था। इस समय उसके एकाएक उठनेका कारण यही था, कि उसने रोशनीमें किसी आदमीकी छाया दरवाज़ेके पास देखी थी। उसने बाहर आतेही देखा, कि एक आदमी अँधेरेमें छिपा बैठा है। ज़न्दाँने कड़ककर पूछा,—"कौन है? चेहरा क्यों छिपाये हुए है?" यह बात उसके मुँहसे निकलते-न-निकलते रुस्तमने इस ज़ोरसे उसके मुँहपर तमाचा मारा, कि वह तिलमिलाकर नीचे गिर पड़ा। उसके मुँह और नाकसे ख़ून निकलने लगा। थोड़ीही देरमें वह वहीं-का-वहीं ठण्डा हो गया। रुस्तम, झटपट घोड़ेपर सवार हो, अपनी छावनीमें चला आया।

ज़न्दाँको अभीतक लौटते न देख, सुहराबको बड़ी चिन्ता हुई। इसी समय बाहरसे किसीने ज़ोरसे चिल्लाकर कहा,—"ऐं! यह क्या मामला है? ज़न्दाँकी यह हालत किसने की?" यह सुनतेही सबलोग बाहर चले आये और ज़न्दाँकी वह दुर्दशा देख, दुःखसे कातर हो गये। विस्मय और शोकसे सुहराबने कहा,— "भाई! जो होना था, वह हो चुका। अब अफ़सोस करनेसेही क्या फ़ायदा है? सबेरा होने दो। मैं कलही इस ख़ूनका बदला वसूल करूँगा। कल मैं ईरानियोंके ख़ूनसे सारी ज़मीन तर कर दूँगा। बिला ख़ूँरेज़ीके इस ख़ूनका बदला नहीं वसूल हो सकता।"

यह कह, सुहराब अपने तम्बूमें सोने चला गया। उस समय उसकी आँखोंसे मानों चिनगारियाँ निकल रही थीं।

सवेरा होतेही सुहराबने सेनापति हुमाँ और बरमाँको फ़ौजको तैयार करनेका हुक्म दिया। इसके बाद ज़िरहबख़्तर पहनकर उसने तमाम हथियार बाँध लिये, और वज़ीरको साथ ले, क़िलेके ऊपर जाकर कहने लगा,—"वज़ीर! इस वक़् तुम मेरी क़ैदमें हो। तुम्हारी क़िस्मतका फ़ैसला मेरे हाथमें है। इस लिये मैं जो पूछता हूँ, उसका साफ़-साफ़ जवाब दे दो, तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। अगर तुम आज़ाद होना चाहते हो, तो मैं जो पूछता हूँ, वह साफ़-साफ़ कह दो।"

यह सुन वज़ीरने कहा,—"इस वक़् मैं आपकी मर्ज़ीके मुआफ़िक़ चलनेको मजबूर हूँ। जो कुछ पूछियेगा, उसका सीधा और सच्चाही जवाब दूँगा। झूठ बोलनेसे क्या फ़ायदा है?"

यह सुन, सुहराबने कहा,—"अच्छा, यह तो कहो, कि इस वक़् ईरानी फ़ौजके सिपहसालार कौन-कौन हैं? नेक-नाम बहादुर रुस्तम कहाँ हैं? तुम्हें तो यहाँके अदब-क़ायदे और तौर-तरीक़े बख़ूबी मालूम हैं। इसलिये तुम देखकर बतलाओ।"

वज़ीरने ख़ूब आँखें गड़ाकर ईरानी छावनीकी ओर देखना शुरू किया। इसके बाद सुहराबसे कहने लगा,—"छावनीके बीचोबीच जो हाथियोंसे घिरा हुआ तम्बू नज़र आ रहा है और जिसके पासही शाही झण्डा फहरा रहा है, उसीके अन्दर ईरानके बादशाह कैकाऊसका तख़्त रखा होगा। उसकी

दाहिनी तरफ़ जो ख़ीमा नज़र आरहा है, वह सिपहसालार तुशका है। वह जो लाल रंगका तम्बू नज़र आता है और जिसके ऊपर शेरका झण्डा उड़ रहा है, उसीके अन्दर मशहूर तीरन्दाज़ गुदरेज़ रहते होंगे।"

इसी समय सुहराबने एकाएक पूछा,—"और वह जो हरे रङ्गका ख़ूबसूरत तम्बू नज़र आरहा है, उसमें एक बड़ाही ख़ूबसूरत पहलवान बैठा नज़र आ रहा है। बहुतसे सिपाही उसे चारों ओरसे घेरे हुए हैं। बहादुरी उसके हरएक अज़ोसे टपक रही है। ऐसा गठीला बदन तो मैंने आजतक किसीका नहीं देखा। क्या वही मशहूर रुस्तम है ?"

वज़ीरको मालूम था, कि वही रुस्तम है ; परन्तु उसने इसी डरसे सत्य बात नहीं कही, कि कहीं इसे बतला देनेसे यह रुस्तमकी कुछ बुराई न कर बैठे। अपने देशके इस गौरवको सुरक्षित रखनेके अभिप्रायसे उसने कहा,—"इस तम्बूमें चीनके बादशाहका भेजा हुआ एक चीनी सिपहसालार है।"

सुहराबने पूछा,—"उसका नाम क्या है ?" वज़ीरने कहा,—"मुझे नहीं मालूम।" यह सुन, सुहराबने मन-ही-मन कहा,—"यह तो बड़े ताज्जुबकी बात है। मेरी माँने अब्बाजानकी शकल-सूरतका जैसा बयान किया था, उससे तो यही शख़्स मेरा वालिद मालूम पड़ता है। ख़ैर, मैं ज़रा इससे पूछूँ तो सही, कि उनका ख़ीमा किस तरफ़ है ?"

लेकिन हज़ार बार घुमा-घुमाकर पूछनेपर भी वज़ीरने

रुस्तमके ख़ीमेका पता उसे नहीं दिया। उसने कहा,—"मेरे जानते तो अभी वे ज़ाबुलिस्तानसे आयेही नहीं होंगे।"

यह सुन, सुहराबने कहा,—"यह तो ग़ैरमुमकिन है, कि जङ्ग छिड़ जानेपर भी वे न आयें।"

वज़ीरने कहा,—"ठीक है। उन्हें तो जङ्गसे मुहब्बतसी है। उनकासा बहादुर दुनियाके परदेमें दूसरा नहीं है।"

यह सुनतेही सुहराबके बदनमें आगसी लग गयी। उसने क्रोधमें आकर कहा,—"चुप रहो। अभी तुमने बहादुर नहीं देखे हैं। एक दफ़े रुस्तमको मेरे मुक़ाबले खड़े होने दो ; फिर उन्हें भी मालूम हो जायेगा, कि बहादुरी और जवाँमर्दी किसे कहते हैं! फ़िज़ूल उनकी झूठी तारीफ़ मेरे सामने मत करो। बोलो, तुम्हारे रुस्तमका ख़ीमा कौनसा है? बोलो, नहीं तो मैं अभी तुम्हारा सिर धड़से जुदा करता हूँ।"

यह कह, सुहराबने उसपर तलवार तानी। वज़ीरने सोचा,—"ज़रूर यह नौजवान रुस्तमकेही ख़ूनका प्यासा है ; नहीं तो उसके लिये इतनी बेचैनी क्यों ज़ाहिर करता? मैंने अच्छाही किया, जो इसे रुस्तमके ख़ीमेका पता नहीं दिया। अब तो मैं इसे हरगिज़ रुस्तमका ख़ीमा न बतलाऊँगा। यह बलाका बहादुर छोकरा उनका पता पाकर न मालूम उनका क्या हाल करे! फिर तो रुस्तमके न रहनेपर यह हमारे मुल्कपर बड़ी आसानीसे क़ब्ज़ा कर लेगा और कैकाऊसको क़ैदकर सारे मुल्कमें ख़ूनका दरिया रवाँ कर देगा। ओह! इस

बातका तो ख़याल करनेसे भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इस लिये यह राज़ इसपर ज़ाहिर करना, अपने मुल्कके साथ दुश्मनी करना है। चाहे जान चली जाये, तोभी मैं इसे ज़रूर अन्धेरेमेंही रखूँगा। मेरे जीने-मरनेसेही क्या? क़ैकाऊस और रुस्तमकी ज़िन्दगीके मुक़ाबलेमें मेरी हस्तीही क्या है? यह बशौक़तमाम मेरी गरदन उतार ले, कुछ परवा नहीं—लेकिन रुस्तमकी ज़िन्दगीको बचाये रखना, मेरा सबसे बढ़कर लाज़िमी फ़र्ज़ है।"

हज़ारों तरहसे घुमा-फिराकर भी जब सुहराब वज़ीरसे पतेकी बात नहीं मालूम कर सका, तब वह जी-ही-जीमें सैकड़ों पेंचोताब खाने लगा; लेकिन उस समय भी उसने वज़ीरसे यह बात खोलकर नहीं कही, कि मैं रुस्तमकाही बेटा हूँ और अपने पिताके दर्शन करना चाहता हूँ। इसे सिवा विधाताके विचित्र विधानके, और क्या कहा जा सकता है?

जो हो, सब तरहसे हताश हो, सुहराब वहाँसे नीचे चला आया और क्रोधमें आकर अपनी सारी सेनाको तैयार होनेका हुक्म दे, लड़ाई करनेके लिये तैयार हो गया। उसकी उत्साहभरी बातें सुन, सभी सिपाही उमङ्गके साथ शत्रुपर आक्रमण करनेके लिये चल पड़े। बीचमें घोड़ेपर सवार, साक्षात् यमकी तरह, सुहराब भी चला।

सुहराबकी सेनाके सामने आतेही ईरानी सेना ठीक वैसेही भाग चली, जैसे सिंहका गम्भीर गर्जन सुन और उछल-कूद देखकर सारे जंगली जानवर जान छोड़कर भागने लगते हैं।

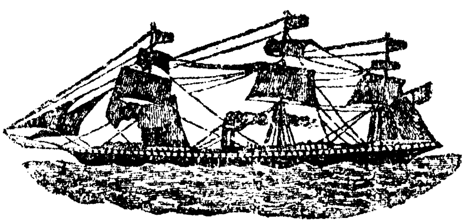
क्रमशः सुहराब घोड़ेपर चढ़ा हुआ ईरानके बादशाहके ख़ीमे-के पास आ पहुँचा और बड़े गर्वसे बोला,—"कहाँ है ईरानका वह नालायक़ और नामर्द बादशाह? अगर उसके ज़रा भी शर्म-हया और दिलेरी हो, तो एक दफ़े मेरे सामने आकर अपनी क़ूवते-बाज़ू-की आज़माइश करे। मैं ज़न्दके ख़ूनका बदला उसका सर काट-कर वसूल करनेपर आमादः हूँ। जो कोई मेरे इस इरादेको पूरा करनेमें रुकावट डालेगा, उसे मैं तलवारके घाट उतार दूँगा।"

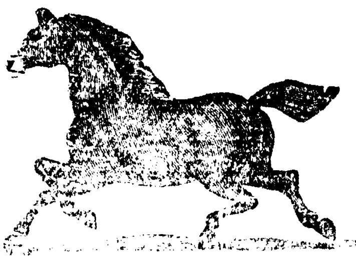
जब किसीने उसकी इन अभिमान-भरी बातोंका उत्तर न दिया, तब उसने फिर कहा,—"बड़ी शर्मकी बात है, कि जो ईरानके तख़्तपर शानसे सर उठाये बैठता है, वह इतना बड़ा बोदा और बुज़दिल है, कि मेरे बार-बार ललकारनेपर भी बाहर अपनी सूरत नहीं दिखलाता! महलसराके अन्दर रहनेवाली बेगमोंकी तरह मुँह छिपाये परदेकी आड़में बैठा हुआ है! न मालूम ऐसे लोग क्यों किसी मुल्कके तख़्तपर पैर रखकर उसे नापाक बनाते हैं?"

सुहराबकी इन गर्वीली बातोंने तो कैकाऊसके और भी औसान ख़ता कर दिये। उनका कलेजा धड़कने और जान घब-राने लगी। उन्हें अपनी आँखोंके आगे अपना सत्यानाश साफ़ दिखलाई देने लगा। उन्होंने घबराकर रुस्तमके पास ख़बर भिजवायी; पर रुस्तमने पहले दिन नहीं लड़नेकी प्रतिज्ञासी कर ली थी। इसलिये उसने कहा,—"आज तो कोई दूसराही उस नौजवानके मुक़ाबलेमें भेजा जाये। अगर वह हार गया, तो मैं तुरतही हथियार हाथमें लेकर जंगके लिये मुस्तैद हो जाऊँगा।"

लेकिन उस शेरके सामने जानेकी किसीको हिम्मत न हुई। इसलिये कैकाऊसने सेनापति तुशको फिर रुस्तमके पास भेजा। तुशके मुँहसे ईरानवालोंकी इस नामर्दी और घबराहटका हाल सुनकर रुस्तमने कहा,—"बेवकूफ़ और बुज़दिल बादशाहोंके मारे क़दम-क़दमपर मुल्कको ऐसीही ज़िल्लत उठानी पड़ती है। बड़ीही शर्मकी बात है!"

यह कह, वह तुरतही हथियारोंसे लैस हो, घोड़ेपर सवार होकर, युद्ध करने चला।





# पिता-पुत्र-संग्राम

मालूम नहीं क्यों, अपने ख़ीमेसे बाहर होतेही वीर-शिरोमणि रुस्तमका कलेजा भी एक बार काँप उठा। उसने बड़ेही विस्मयके साथ मन-ही-मन कहा,—"ऐं! यह क्या? सबकी तरह आज मेरा दिल भी क्यों एकाएक दहल उठा? अरे, तो क्या वह नौजवान कोई जिन्न या देव है? अजीब हैरत-अङ्गेज़ बात है!"

कुछही क्षणमें अपने चित्तको बहुत कुछ सम्हालकर वह आगे बढ़ा। थोड़ीही देरमें वह सुहराबके सामने आ खड़ा हुआ। सुहराबकी वह चौड़ी छाती, लम्बी बाँहें और महावीर सामकी-ही तरह वीरत्वमयी मूर्त्ति देख, रुस्तम एक बार हैरतमें आ गया।

पुराने ज़मानेकी रीतिके अनुसार द्वन्द्व-युद्धके लिये अग्रसर होते हुए सुहराबने रुस्तमके सामने आ, उसे सलाम करके कहा,—"बस! बहादुर शख़्स! आओ, फ़िलहाल मेराही-तुम्हारा मुक़ाबला हो जाये। इसमें किसी दूसरेकी मदद या छेड़-छाड़की कोई ज़रूरत नहीं। दोनों ओरके सिपाही चुपचाप खड़े-खड़े हम-लोगोंकी बहादुरी और जवाँमर्दोंका इम्तिहान करें—ख़ामोशी अख़्तियार किये हुए इस पहली भिड़न्तका नज़ारा देखें।"

रुस्तम राज़ी हो गया। दोनों पिता-पुत्र, एक दूसरेको नहीं पहचानते हुए, शत्रुकी तरह लड़नेको तैयार हो गये। दोनों ओरकी हज़ारों आँखें टकटकी बाँधे उनकी ओर देखने लगीं।

सुहराबने मेघकी भाँति गर्जन करते हुए कहा,—"ऐ नेकनाम बहादुर! मैं साफ़ देख रहा हूँ, कि आज तुम मुफ्तमें जान देनेके लियेही मेरे मुक़ाबलेमें आ खड़े हुए हो। इस दुनियामें ऐसा कोई बहादुर नहीं, जो मेरा मुक़ाबला कर सके। मेरे हथियारके वारसे बच जाना, बड़े-बड़े बहादुरोंके लिये भी ग़ैरमुमकिन है।"

रुस्तमसे सुहराबकी यह गर्वोक्ति नहीं सही गयी। उसने झल्लाकर कहा,—"ऐ नौजवान! तू क्यों बेकार बकबक कर रहा है? अभी तेरी उमरही क्या है? अभी तूने सच्चे बहादुर देखे भी न होंगे। जवाँमर्दों और दिलेरोंसे अभी तेरी मुलाक़ात भी नहीं हुई होगी। अभी ज़रा और दुनिया देखेगा, तो तुझे तजरबा हो जायेगा। मैंने अपनी इस इतनी उमरमें न जाने कितनी लड़ाइयोंमें हथियार उठाये हैं, कितने बहादुरोंका दम भरनेवालोंको जहन्नुमरसीदः कर दिया है। मेरी इस गदाकी मारसे सफ़ेद देव भी मारा जा चुका है। ठहर जा, तुझे अभी मेरी कूवते-बाज़ूका पता चल जायेगा। सिर्फ़ इतनीही कसर है, कि तेरी यह कमसिनी और नाज़ुक बदन देखकर मेरे दिलमें, न मालूम क्यों, बड़ा तरस आ रहा है। इसीलिये अभीतक मैं तेरे ऊपर हाथ नहीं उठा सका। बस! नादानी न कर, चुपचाप अपने घर चला

जा। क्यों बेकार अपने माँ-बापकी गोद सूनी करनेके लिये, परवानेकी तरह इस आतिशेजङ्गमें कूदनेके लिये तैयार है ?"

सच है, खूनका असर बड़ाही ज़बरदस्त होता है। रुस्तम जो सुहराबकी वैसी गर्वीली बातें सुनकर भी इतनी देरतक हथियार न उठा सका, उसका कारण यही था, कि सन्तानकी माया उसके दिलके अन्दर छिपे-छिपे काम कर रही थी। नहीं तो रुस्तम कभी किसीकी लाल-लाल आँखें और कड़ो-कड़ो बातें बर्दाश्त कर लेनेवाला जीव नहीं था।

रुस्तमकी एक-एक बात सुहराबके कलेजेमें चुभसी गयी। उसका सारा गर्व और अभिमान थोड़ी देरके लिये दूर हो गया। उसने बड़ोही उत्कण्ठासे कहा,—"ऐ बहादुर शख्स ! बराहमिहरबानी मुझे यह बतला दो, कि तुम कौन हो ? क्या जिसकी बहादुरी, जवाँमर्दी और शेरदिलीपर एक ज़माना शैदा है, वह नेकनाम बहादुर रुस्तम तुम्हीं हो ?"

विधि-विधानके वशमें पड़े हुए रुस्तमके मुँहसे निकल पड़ा,— "नहीं, मैं तो महज़ उनका एक अदना ख़िदमतगार हूँ। भला कहाँ रुस्तम और कहाँ मैं ?"

यह उत्तर सुनकर सुहराब गहरे विषादके समुद्रमें डूब गया। यद्यपि उसने अपनी माताके बतलाये हुए सभी लक्षण रुस्तममें देखे, तथापि यह सुनकर उसे बड़ी निराशा हुई, कि यह मेरे पिता नहीं हैं। लाचार, उसने अपने सामने खड़े हुए वीरसे युद्ध करनाही अपना कर्त्तव्य समझा।

सबसे पहले दोनों पिता-पुत्र बर्छा लेकर एक दूसरेपर वार करने लगे। थोड़ीही देरमें आपसमें टकराकर दोनोंके बर्छे टूट-कर गिर रड़े। तब वे हाथमें तलवार लिये हुए एक दूसरेका वार बचाने और हमला करने लगे। कुछही देरमें दोनोंकी तलवारें भी टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़ीं।

अब दोनों पिता और पुत्र गदा-युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। पलक मारते-न-मारते गदाके हज़ारों हाथ दोनों ओरसे चल गये। देखते-देखते दोनोंके ज़िरह-बख़्तर टुकड़े-टुकड़े हो गये और थकावटके मारे सारा शरीर पसीनेसे सराबोर हो गया। प्यासके मारे दोनोंके कण्ठ सूखने लगे। लड़ते-लड़ते दोनों वीर क्लान्त होकर थोड़ी देर सुस्तानेके लिये ठहर गये।

रुस्तमने अपने मनमें सोचा,—"ओह! इस कमसिनीमें भी यह कैसा बलाका जाँबाज़ बहादुर है? ऐसा तो मैंने आजतक कभी नहीं देखा था। न मालूम, यह इनसान है या कोई देव!"

थोड़ी देर सुस्तानेके बाद फिर वे दोनों अद्भुत वीर परस्पर भिड़ गये। तरह-तरहके हथियारोंकी लड़ाई हुई; पर कोई किसीको पराजित न कर सका। तब रुस्तमने सुहराबको उठाकर फेंक देनेके इरादेसे उसका कमर-बन्द पकड़ लिया और उसे उठानेके लिये अपनी देहका पूरा ज़ोर लगाया; पर महावीर सुहराब उसके उठाये न उठा। लाचार, हार मानकर रुस्तमने उसे छोड़ दिया। तब सुहराबने भी रुस्तमपर यही तरकीब आज़मानी चाही और उसकी कमरमें हाथ लगाया; पर रुस्तम भी सुहराबके

डिगाये न डिगा। यह देख, तैशमें आकर सुहराबने इस ज़ोरसे रुस्तमके सिरमें गदा मारी, कि उसकी आँखोंके सामने अँधेरा छा गया। एक दफ़े उसकी सारी देह काँप गयी। यह चोट रुस्तमके लिये बेबर्दाश्तसी हो गयी।

रुस्तमकी यह बुरी हालत देख, सुहराबने हँसकर कहा,—"कहो, अभीतक लड़नेका हौसला बाक़ीही है? कहाँ गयी तुम्हारी वह बहादुरी, जिसके ज़ोरपर तुम इतनी बहँकी-बहँकी बातें कर रहे थे? देखना, फिर कभी किसी सच्चे बहादुरके सामने अपनी शेख़ी न बघारना।"

मौक़ा देखकर रुस्तम इस ज़हरके घूँटको चुपचाप पी गया और थोड़ी देर बाद सम्हलकर बोला,—"देखो, दिन ख़तम हो चला। बिलकुल शाम हो गयी है। थोड़ीही देरमें रातकी अँधेरी चारों तरफ़ घिर आयेगी। इसलिये आज तो हमलोग लड़ाई बन्द कर दें। कल फिर देखा जायेगा।"

सुहराबने कहा,—"बहुत ख़ूब। आज तो तुमने बुरी तरह चोट खायी—जाकर आराम कर लो। तबतक मैं ईरानके बादशाह कैकाऊसको अपनी तलवारके मज़े चखाता हूँ।"

यह कह, सुहराबने अपना घोड़ा ईरानके बादशाहके ख़ीमेकी ओर बढ़ाया। रुस्तम वहाँसे चलकर अपने ख़ीमेमें चला आया।



# रुस्तमकी हार

वहाँसे चलकर भयङ्कर क्रोधसे जलता हुआ सुहराब, ईरानके बादशाहके ख़ीमेके पास आ पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने फिर बादशाहको ख़ूब ज़ोरसे ललकारना शुरू किया। तुरतही बहुतसे सिपाही चारों ओरसे आ जुटे और सब लोग मिलकर अकेले सुहराबपर वार करने लगे। अकेलेही उस अद्भुत वीरने बात-की-बातमें कितनोंको धराशायी कर दिया। ख़ूनकी नदीसी बह चली।

इधर सुहराबको छोड़कर चले आनेपर रुस्तमने अपने मनमें सोचा,—"मैं योंही अपना वक़्त क्यों ख़राब करूँ? जब वह मेरी फ़ौजमें घुसकर फ़िसाद बरपा करनेके लिये गया है, तब मैं भी क्यों नहीं उसकी फ़ौजमें घुसकर मौतका बाज़ार गरम कर दूँ?"

यही सोचकर रुस्तम भी क्रोधसे तमतमाया हुआ तूरानी फ़ौजके अन्दर पिल पड़ा और तूरानियोंकी एक बहुत बड़ी संख्याको जहन्नुमकी राह दिखा दी।

इस तरह दोनों ओर भीषण नर-संहार होने लगा; किन्तु एकाएक क़ैकाऊसकी कापुरुषताका स्मरण हो आनेसे रुस्तमने लड़ना बन्द कर दिया और तुरत अपनी फ़ौजकी ओर चल दिया।

वहाँ पहुँचकर उसने देखा, कि उस नौजवान तातारी वीरने बहुतसे ईरानियोंको मार गिराया है और ख़ूनसे अपना हथियार रँगाये रणाङ्गणमें पैतरे बदल रहा है। एक क्षणके लिये भी उसका हाथ नहीं रुकता। यह देख, रुस्तमने उसके सामने आकर कहा,—"क्यों भई! तुमने तो कहा था, कि और किसी सिपाहीसे न लड़ोगे, फिर यह क्या कर रहे हो? अगर अभीतक जंगकी हविस न मिटी हो, तो आओ, मेरेही साथ भिड़ जाओ। नहीं तो इस अँधेरी शबमें लड़ना फ़िज़ूल है। चुपचाप चलकर रात-भर आराम कर लो। कल सवेरे आफ़-ताबके निकलते-न-निकलते हम दोनों मैदानमें उतर पड़ेंगे और दिल खोलकर अपनी मर्दानगी दिखलाते हुए जंग करें और दिलका अरमान निकालेंगे।"

सुहराब लगातार कई घंटोंसे लड़ रहा था। इसलिये वह भी बेहद थक गया था। इसीसे उसने झट हाथ रोक लिया और अपने ख़ीमेकी ओर चल पड़ा।

इधर रुस्तम जब ईरानके बादशाह क़ैकाऊसके सामने आया, तब वे सुहराबकी तारीफ़ किये बिना न रह सके। रुस्तमने बादशाहके मुँहसे सुहराबकी बेहद प्रशंसा सुनकर कहा,—"वाक़ई मैंने आजतक इस नौजवानकासा शेरदिल बहादुर कभी नहीं देखा था। इस कमसिनीमें भी इसमें बलाकी बहादुरी, जाँबाज़ी और जीवट है। जंग करना किसे कहते हैं, यह इस नौजवान बहादुरको बख़ूबी मालूम है। उसकी देह गोया

इस्पातकी बनी है। उसकी बाज़ूमें ग़ज़बकी क़ूवत भरी है। उसकी फुर्ती, चालाकी और हाथकी सफ़ाई देखकर मैं तो एकबारगी हैरतमें आ गया हूँ। लड़ते वक़्त उसकी पेशानीपर ज़रा भी बल नहीं पड़ते। उसके दिल और दिमाग़ दोनों, उस वक़्त भी निहायत संजीदगी और साबितक़दमीके साथ अपना काम अंजाम करते रहते हैं। उसके माँ-बापकी खुश-नसीबी और खुशबख़्तीकी जितनी तारीफ़ की जाये, थोड़ी है, जिन्होंने दुनियामें ऐसा लासानी जवाँमर्द बहादुर पैदा किया। मैं तो दिल-ही-दिलमें उसकी हज़ार बार तारीफ़ करता हूँ। कल फिर उसके साथ मेरी लड़ाई होगी। देखा चाहिये, इस दफ़े क्या नतीजा होता है। कल हम दोनोंमेंसे कौन मौतका शिकार होता है, बस यही देखना है।"

यही कहकर रुस्तम चुपचाप अपने ख़ीमेमें चला गया। बादशाह कैकाऊसको मारे सोचके रात-भर नींद नहीं आयी। वे रात-भर ईश्वरसे अपने प्राणोंकी भिक्षा माँगते रहे।

उधर रुस्तमने अपने ख़ीमेमें पहुँचकर अपने भाई ज़हूरसे कहा,—"मेरे प्यारे भाई! आजके जङ्गसे मुझे इस बातका पूरा पूरा यक़ीन हो गया, कि यह तूरानी नौजवान लासानी बहादुर और ग़ज़बका जाँबाज़ है। अमूमन उसे कोई मैदाने-जङ्गमें शिकस्त नहीं दे सकता। कल कौन मरेगा, इसका पहलेसे अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता; क्योंकि अकसर लड़ाइयोंका फ़ैसला खुदाकी मरज़ीपरही मुनहसिर होता है। देखो, अगर

खुदाको मेरी मौतही मंज़ूर हो और मैंही कलकी लड़ाईमें काम आऊँ, तो तुम मेरे साथियोंके साथ वतनकी तरफ़ रवानः हो जाना और मेरे माँ-बापको तसल्ली देना। कहना, कि यह दुनिया दार-ए-फ़ानी है। यहाँ किसी चीज़का क़याम नहीं। इन्सानकी ज़िन्दगी महज़ पानीका एक बुलबुला है, जिसके न पैदा होते देर लगती है, न मिट जाते। नेकनाम साम, नूरेईमान और कितनेही नामी-नामी बहादुर और नेकबख़्त इस दुनियाको छोड़कर चले गये; फिर मेरी क्या हक़ीक़त है? जो मुक़द्दम है, उसके लिये अफ़सोस करना बेकार है। इस तरह उन्हें ढाँढ़स देकर उनके दिलसे सदमेका असर दूर करनेकी कोशिशि करना। और दूसरी बात यह भी ख़याल रखना, कि इस बहादुर तातारी नौजवानका मुक़ाबला करनेके लिये हरगिज़ क़दम आगे न बढ़ाना। मुझे यह साफ़ दिखलाई दे रहा है, कि अगर वह ज़िन्दः रहा, तो किसी-न-किसी दिन ज़रूरही इस मुल्के-ईरानपर क़ब्ज़ा कर लेगा।"

यह कहकर रुस्तम, उदास मुँह बनाये, वहाँसे अपने ख़ीमेमें आकर लेट रहा।

इधर सुहराबने अपनी फ़ौजमें आकर अपने सेनापति हुमाँसे कहा,—"भई! आज जो बूढ़ा मेरे मुक़ाबलेमें आया था, वह तो बड़ाही ताक़तवर, हिम्मतवर और जंगके हुनरका पूरा जानकार मालूम पड़ता है। न मालूम क्यों, रह-रहकर मेरे दिलमें उसकी जानिब इज्ज़तका ख़याल पैदा हो जाता था। उसे देखकर जब

मैंने अपनी माँकी बतलायी हुई शक्लोशबाहतसे उसके चेहरेका मिलान किया, तो मुझे ठीक अपने वालिद्काही धोका हुआ ; लेकिन जब मैंने उससे पूछा, तो उसने बतलाया, कि वह उनका एक नाचीज़ ख़िद्मतगार है। भाई ! न मालूम क्यों, इतनेपर भी मेरा दिल बार-बार यही कह रहा है, कि वेही मेरे वालिद हैं और मुझसे अपनेको पोशीद: रखना चाहते हैं।"

यह सुनतेही हुमाँने मुँह बनाकर कहा,—"यह सब ख़यालात महज़ नाक़िस हैं। मैंने हज़ारों बार रुस्तमको देखा है और उन्हें ख़ूब अच्छी तरह पहचानता हूँ। जो आदमी अभी तुमसे लड़ रहा था, वह हरगिज़ रुस्तम नहीं हो सकता। उसका घोड़ा रुस्तमके रख़्शकासा मालूम पड़ता था ; पर वह रख़्श नहीं था। अगर ख़ुद रुस्तमही लड़ने आये होते, तो वे तुमसे पोशीदगी क्यों अख़्तियार करते ?"

हुमाँकी यह बात सुहराबके गलेके नीचे उतर गयी और वह इस धूर्त्त तूरानी सेनापतिके धोखेकी टट्टीको न तोड़ सका।

इस तरह विधिकी विचित्र मायाने अज्ञानका काला परदा दोनों ओर डाल दिया !

सवेरा हुआ। दोनों वीर अपने-अपने ख़ीमेसे अस्त्र-शस्त्रसे सज्जित होकर बाहर निकले। थोड़ीही देरमें दोनों आमने-सामने आ गये। एक बार फिर कलकीही तरह दोनों ओर भक्ति-ममता, पुत्र-प्रेम और पितृ-भक्तिने छिपे-छिपे अपना काम करना शुरू किया। रुस्तमपर नज़र पड़तेही सुहराबके

मनमें, न जाने क्यों, भक्ति, श्रद्धा और करुणाकी नदीसी उमड़ आयी। उसने क्रोध और द्वेषको दिलसे दूर कर हँसते हुए कहा,—"कहिये, आज दिलमें क्या है? जङ्गका हौसला या सुलहकी ख़्वाहिश? अगर आप मेरी राय पूछते हैं, तो मैं यही कहूँगा, कि अब लड़ाई-भिड़ाईका नाम न लीजिये और आइये, कलकी हरकतके लिये ख़ुदातालासे मुआफ़ी माँगते हुए हम दोनों आपसमें सुलह कर लें। और लोग भलेही लड़ें; पर हम लोग एक दूसरेके दोस्त बन जायें। न मालूम क्यों, मेरे दिलमें आपकी जानिब बड़ी इज़्ज़तका ख़याल पैदा हो गया है और मैं अपनी कलकी नाशाइस्ता हरकतपर सच्चे दिलसे नादिम हो रहा हूँ। मेरा दिल आपसे जङ्ग करनेकी सलाह नहीं देता। आपको देखतेही, न जाने क्यों, मेरी आँखें भर आती हैं। आप मिहरबानी करके मुझे यह बतला दीजिये, कि आपका इस्मशरीफ़ क्या है? आपके जैसे बहादुरका इस क़दर पोशीदगी अख़्तियार किये रहना क़ायदे और उसूलके बरख़िलाफ़ है। एक मर्त्तबः सच्चे दिलसे कह दीजिये, कहीं आपही मशहूर बहादुर ज़ालके फ़रज़न्द, नेकनाम रुस्तम तो नहीं हैं?"

सुहराबके सरल अन्तःकरणसे निकली हुई बातोंका रुस्तमको कुछ भी विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा, कि इस तातारीकी चिकनी-चुपड़ी बातोंमें पड़नेसे मेरा नुक़सानही होगा। इस लिये उसके सवालका जवाब दिये बिनाही रुस्तमने कहा,—"ऐ नौजवान! मुझे ऐसा नादान न समझ लेना, कि मैं तुम्हारी शीरीं-

जुवानके फेरमें पड़कर अपनी इस्मियत तुमपर ज़ाहिर कर दूँगा। मैंने बहुत कुछ दुनिया देखी-भाली है। दुश्मनोंके हथकण्डे मुझे खूब मालूम हैं। आओ, आओ—घोड़ेसे नीचे उतर आओ और कलके क़ौलके मुताबिक़ मेरे साथ जंग करो।"

लाचार, सुहराबको लड़ाईके लिये तैयार होनाही पड़ा। दोनों सिंह-गर्जन करते हुए परस्पर भिड़ गये। दोनों पिता-पुत्रकी कुश्ती होने लगी। बड़ी देरतक हज़ारों दाँव-पेंच आज़माकर भी कोई किसीको चित् न कर सका। इसी समय एकाएक सुहराबने रुस्तमको उठाकर बड़े ज़ोरसे ज़मीनपर दे पटका और उसकी छातीपर चढ़ बैठा।

ऐं! यह क्या? यह कैसा अद्भुत काण्ड है? आजतक जो बात कभी नहीं हुई, वही एकाएक कैसे हो गयी? जिस महावीर रुस्तमको आजतक दुनियामें कोई पराजित न कर सका, उसे इस नौजवानने कैसे पछाड़ डाला? आज रुस्तमके जीवन-भरकी वीरता, दर्प, दम्भ, गौरव और गरिमापर पानी फिर गया! सचमुच विधि-विधान बड़ाही विचित्र होता है!

अस्तु; इस प्रकार रुस्तमको अपने वशमें आया देख, सुहराबने अपनी तलवार म्यानसे बाहर निकाली और चाहा, कि उससे रुस्तमका गला काट डालूँ; पर रुस्तमको उसी समय एकाएक एक बात सूझ गयी और वह उसे धोखेमें लानेके लिये बोल उठा,—"ठहरो, ठहरो। हमारे मुल्कका यह क़ायदा है, कि किसी बहादुरको पहलीही मर्त्तबः ज़मीनपर गिराकर उसका

गला नहीं काट लिया जाता ; बल्कि उसे दूसरा मौक़ा भी दिया जाता है और अगर वह फिर दुबारा गिर पड़ता है, तो उसका गला ज़रूर काट लेते हैं।"

सुहराबने इस बातको सच मान लिया और तलवारको म्यानके अन्दर रखकर रुस्तमको छोड़ दिया। इसके बाद वह धीरे-धीरे अपने ख़ीमेमें चला आया।

सुहराबके मनमें आजकी विजयसे जो गर्व उत्पन्न हुआ, वह थोड़ीही देरमें हवा हो गया और उसकी जगह यही सन्देह उसके हृदय-समुद्रको आन्दोलित करने लगा, कि कहीं यही वृद्ध वीर मेरे पिता रुस्तम तो नहीं हैं?



# पुत्र-वध

महादुष्टात्मा हुमाँको सुहराबके मुँहसे यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ, कि उसने रुस्तमको इस क़दर फन्देमें लाकर भी सस्ते छोड़ दिया। उसने बड़ी झुँझलाहटके साथ कहा;—"तुमने आज बड़ी भारी बेवकूफ़ीका काम किया, जो उस शेरको जालमें लाकर भी छोड़ दिया। इसका नतीजा बड़ाही बुरा होगा। आज तुम्हारी आँखोंमें उसने खूब धूल झोंकी। तुम्हें खूबही उल्लू बनाया। निहायत अफ़सोसकी बात है। बड़ीही शर्मिन्दगीका मुक़ाम है।"

सुहराबने मुस्कराते हुए कहा;—"इसके लिये तुम कोई फ़िक्र न करो। देख लेना, मैं कल फिर उसे दे मारूँगा।"

हुमाँने कहा,—"होशियार और दानाँ शख्स कभी दुश्मनको छोटा नहीं समझते। मौक़ा पाकर चूक जानेसे फिर दुबारा वैसा मौक़ा हाथ नहीं आता।"

यह सुन, सुहराब चुप हो गया। उससे इसका कुछ भी जवाब देते न बन पड़ा। उसके मनमें उस समय हज़ारों तरहके भाव लहरें मार रहे थे।

इधर रुस्तम भी उदास मुँह बनाये, आजकी हारपर मन-ही-

मन सैकड़ों पेंचोताब खाता हुआ, अपने ख़ीमेमें आया। उसने नहा-धो, पाक होकर सारी रात ज़मीनमें पड़े-पड़े खुदातालासे यही दुआ माँगी, कि उसकी वह पहली ताक़त और क़ूवत फिर लौट आये और वह उस तातारी नौजवानको यह दिखला दे, कि इस बुढ़ापेमें भी उसके बदनमें कितनी ताक़त है !

सवेरे अपने इबादतगाहसे बाहर आतेही रुस्तमको ऐसा मालूम होने लगा, मानों ईश्वरकी दयासे उसमें अपूर्व बल, शक्ति, साहस और पराक्रमका संचार हो आया है। इस प्रकार ईश्वरकी दयाका मन-ही-मन अनुभव करते हुए, रुस्तमने अपना प्यारा घोड़ा मँगवाया और उसपर सवार हो, बड़ी शानके साथ, सुहराबसे लड़नेके लिये मैदानमें आ पहुँचा।

रुस्तमके आतेही सुहराबने मन्द-मन्द मुस्कराहटके साथ कहा,—"क्यों जनाब! आप फिर यहाँ आही गये? कल तो आपने मुझे खूब चक़मा दिया? लेकिन फिर भी आप बुरे फँसेंगे, यह ख़याल रहे। ज़रा अपने बुढ़ापेपर ग़ौर कर लीजियेगा।"

रुस्तमने कहा,—"ऐ मग़रूर नौजवान! तू मुझे जितना हक़ीर और नाचीज़ समझ रहा है, उतना मैं हरगिज़ नहीं हूँ, यह खूब अच्छी तरह समझ लेना। आज खुदाके फ़ज़लसे मैं तुझे अपनी क़ूवतका मज़ा चखा दूँगा।"

इसके बादही दोनों पिता-पुत्र परस्पर भिड़ गये। दोनोंही क्रोध, उत्तेजना और अभिमानमें फूले हुए थे, इसलिये दोनोंहीकी आँखोंसे मानों बिजली निकल रही थी। दोनों खूब घात-प्रतिघात

करते हुए आश्चर्य-जनक वीरता दिखलाने लगे। थोड़ीही देरमें दोनोंका दम फूलने लगा और यही मालूम पड़ने लगा, कि ये क्रोधसे उन्मत्त वीर इसी क्षण कोई-न-कोई महाभयानक काण्ड कर डालेंगे। कौन कह सकता है, कि क्षण-भर बाद क्या होगा?

एकाएक रुस्तमने न जाने किस अमानुषिक बलसे सुहराबको उठाकर नीचे गिरा दिया; पर कहीं वह तुरतही उठकर इसका बदला न लेने लग जाये, इसी डरसे रुस्तमने झट अपना तेज़ खंजर निकाला और उसकी छातीमें भोंक देनेको तैयार हुआ।

हाय! रुस्तम! तुम यह क्या करने जा रहे हो? किसके कलेजेमें ख़ञ्जर मारनेको तैयार हो रहे हो? अपनेही पुत्रका जीवन-नाश कर क्या तुम संसारमें कीर्त्ति कमाना चाहते हो? पुत्र-हत्या, अपने हाथों पुत्रके प्राण लेना, तो पिशाचोंसे भी नहीं बन पड़ेगा। सावधान, रुस्तम! सावधान! अपनेही हाथों अपने वंशका सत्यानाश मत करो।

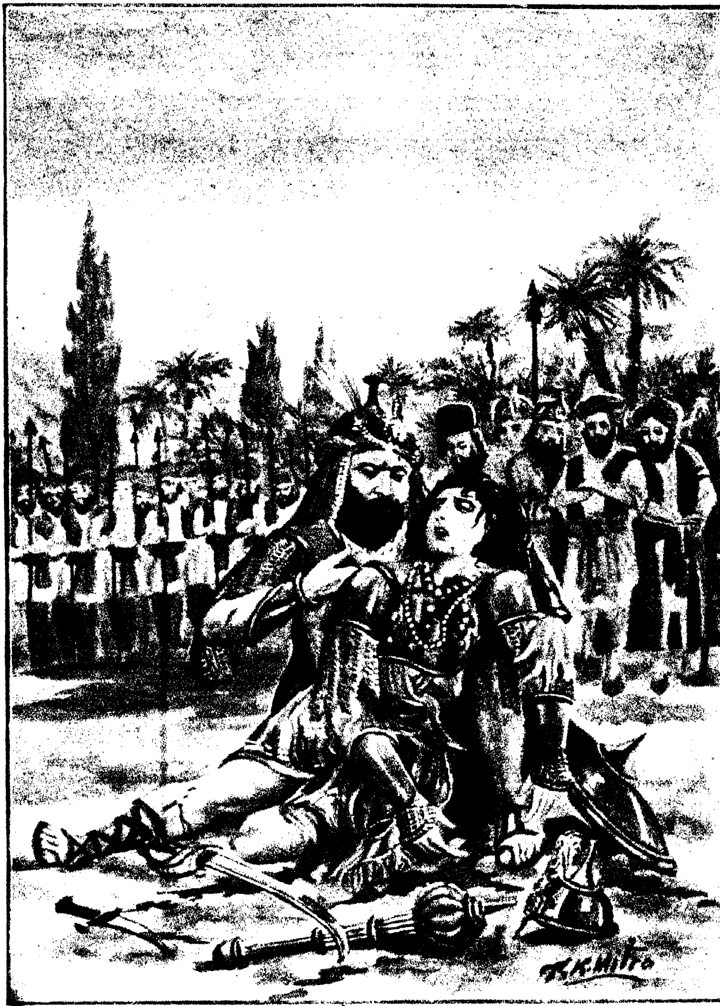
परन्तु रुस्तमको इन सब बातोंका क्या पता था? उसे भला क्या मालूम था, कि वह कितना बड़ा सत्यानाश करने जा रहा है? इसी लिये उसने बिना कुछ सोचे-समझे सुहराबकी छातीमें ख़ञ्जर भोंक दिया! सुहराबने अपने बचावकी बड़ी चेष्टा की; परन्तु उसकी कोई चेष्टा काम नहीं आयी। रुस्तमका वार काम कर-ही गया। सुहराबकी सारी देह ख़ूनसे तर-बतर हो गयी—वह मारे यन्त्रणाके तड़पने और छटपटाने लगा।

बड़ी-बड़ी मुश्किलोंसे अपनी वाचा-शक्तिको वशमें लाकर

सुहराबने कहा,—"ऐ नेकनाम बहादुर ! इस क़दर धोकेसे मेरे कलेजेके अन्दर ख़ञ्जर घुसेड़कर आप अपने दिलमें कितनेही ख़ुश क्यों न होते हों ; पर सच पूछिये, तो यह आपके लिये कोई फ़ख़्रकी बात नहीं हैं। ख़ैर, आपका कोई क़ुसूर नहीं, अपनी मौत मैंने ख़ुद बुलायी है। अपने वालिद्की तलाशमें आकर मैं जो दूसरे काममें लग गया, उसका यही नतीजा होना था। अफ़सोस ! मेरे दिलकी दिलमेंही रह गयी—मेरा अरमान पूरा न हुआ। वालिद्का दीदार नहीं नसीब हुआ। अब मैं इस दुनियामें महज़ कुछही लेहज़ोंका मिहमान हूँ। ख़ैर, मैं तो चला, लेकिन याद रखना, आपके सरकी भी ख़ैरियत नहीं है। मेरे वालिद्, जिनकी बहादुरीकी शुहरत दुनियाके परदे-परदेमें छायी हुई है, जिस दिन आपके इस नापाक जङ्ग और धोखेबाज़ीके ख़ूनका हाल सुन पायेंगे, उस दिन दुनियाकी कोई ताक़त आपको नहीं बचा सकेगी। आप लाख छिपना चाहेंगे, तोभी वे आपको ढूँढ़ निकालेंगे और आपकी जान लिये बिना न छोड़ेंगे।"

यह सुनतेही एकाएक रुस्तम काँप उठा। उसने काँपते हुए कण्ठसे कहा,—"ऐ ? नौजवान ! तेरे वालिद्का नाम क्या है ?"

मरते हुए वीरने आकुल कण्ठसे कहा,—"दुनियाके परदेमें जिनके जोड़का दूसरा कोई बहादुर शख़्स नहीं है, मैं उन्हीं नेक-नाम शेरे-नर रुस्तमका पेसर हूँ। मेरी माँ सामिङ्गनके बादशाहकी दुख़्तर तमीना हैं।"



पिता-पुत्रकी अन्तिम भेंट

"मेरे बहादुर लड़के ! तेरा वह बदनसीब बाप, रुस्तम मैंही हूँ।"

यह बात सुनतेही रुस्तमकी आँखोंके आगे अन्धेरा छा गया, कण्ठ बन्द हो गया और प्राणोंमें विषम वेदना उत्पन्न हो गयी। वह "हाय! यह मैंने क्या कर डाला! ओफ़!" कहता हुआ जड़से कटे हुए पेड़की तरह धड़ामसे ज़मीनपर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। उधर सुहराब मृत्युकी घड़ियाँ गिनता हुआ धीरे-धीरे कराह रहा था।

थोड़ी देर बाद जब रुस्तम होशमें आया, तब आँखोंमें आँसू भरे, आकुल कण्ठसे रोते-रोते सुहराबके मुँहके पास मुँह ले जाकर उसे चूमता हुआ बोला,—"मेरे बहादुर लड़के! तेरा वह बदनसीब बाप, रुस्तम, मैंही हूँ। अपनेही पेसरका ख़ूनी, क़ातिल, क़स्साब, ना-ख़ुदातरस रुस्तम मैंही हूँ। ओफ़! मैंने क्या कर डाला? लेकिन बेटा! तुम मेरेही लख़्तेजिगर हो, मेरे यह जाननेकी कोई सूरत नहीं है। मैं कैसे इस बातका यक़ीन करूँ?"

मृत्युके पंजेसे थोड़ी देरके लिये अपनेको छुड़ाकर सुहराबने बड़ी मुश्किलोंसे कहा,—"ओह! आपही मेरे वालिद, नेकनाम रुस्तम हैं? फिर जब मैंने बड़ी आरज़ूसे, दिलकी कशिशसे, आपसे पूछा था, तभी आपने क्यों नहीं बतला दिया था? मैं अपने वालिदसे मिलने और पेदराना मुहब्बत पानेके लिये बहुतही बेचैन हो गया था, इसीलिये मैं यहाँ आया था; पर आपने तो मेरे साथ ज़रासी भी हमदर्दी नहीं दिखलायी। मुझे क्या मालूम था, कि आप इस क़दर सङ्गदिल हैं? ख़ैर, आपके यक़ीनके लिये मैं आपसे इस बातका इसरार करता हूँ, कि आप मेरा बख़्तर

हटाकर देख लें, मेरी बाज़ूपर आपकी दी हुई एक तावीज़ मेरी माँने बाँध दी है। अफ़सोस, सद अफ़सोस! जब मैं सामिङ्गनसे रुख़सत होने लगा था, तब मेरी माँने मुझसे कहा था, कि बेटा! तेरी यह तावीज़ही तुझे तेरे वालिदसे मिला देगी। वे इसे देखते-ही तुझे अपने कलेजेसे लगा लेंगे। मेरे नेकनाम वालिद! जल्द-ही उस तावीज़को देखकर एक मरतबः मुझे मरनेसे पेश्तर कलेजे-से लगा लें, ताकि इस मरनेमें भी मुझे कुछ लुत्फ़ आ जाये। आपके ज़ानूपर सिर रखकरही मैं इस जहानसे रुख़सत हो जाऊँ, अब तो यही एक तमन्ना—यही एक आख़िरी हसरत—दिलमें बाक़ी रह गयी है। ओफ़! बड़ी तकलीफ़ है! प्याससे गला सूखा जाता है। अब बोलना दुश्वार है।"

यह रुस्तमके दिलको टुकड़े-टुकड़े कर देनेवाली बातें कहते-कहते सुहराब एकाएक चुप हो गया। रुस्तमने उसका बख्तर खोलकर देखा, कि सचमुच उसके दाहिने हाथपर वही तावीज़ बँधी है, जो वह सामिङ्गनसे विदा होते समय तमीनाको दे आया था। यह देखतेही रुस्तमका कलेजा सौ टुकड़े हो गया। वह ज़ोर-ज़ोरसे छाती पीट-पीटकर रोने लगा। उसने पुनः काँपते हुए कण्ठसे रोते-रोते कहा,—

"मेरे लख्तेजिगर! मैं बड़ाही बदनसीब हूँ। मुझसा क़स्साब इस दुनियामें दूसरा न होगा। मैंने आज अपनेही लड़केका ख़ून करके अपने हाथोंको हमेशःके लिये नापाक कर दिया। ओफ़! मेरी क़िस्मतमें क्या यही लिखा हुआ था? दुनियामें जो काम

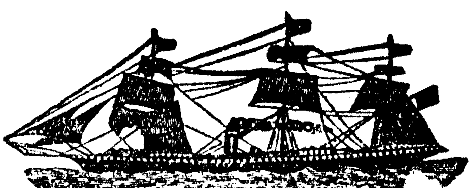
कोई नहीं कर सकता, वही मैंने कर डाला। अपने ख़ूनी हाथोंसे मैंने अपनेही पेसरका कलेजा चाक कर डाला। उफ़! कैसी हैरतअङ्गेज़, नफ़रतआमेज़ बात है। ऐसा क़ातिल और ख़ूनी बाप कभी किसीने काहेको देखा होगा? ओह! अब मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? ऐ परवरदिगार! इस दोज़खकी आगसे भी बढ़कर आतिशे-ग़मसे जलते रहनेकेही लिये क्या तुमने इस नाचीज़को दुनियामें भेजा था? नहीं, बेटा! तुम अकेलेही दुनियासे नहीं जाने पाओगे। मैं भी तुम्हारे हमराह चलूँगा। जिस ख़ञ्जरने तुम्हारी इस लाखों हसरतों और हज़ारों तमन्नाओंसे भरी हुई ज़िन्दगीका ख़ातमा किया है, वही मेरी उम्रका भी प्याला भर देगा। अब मैं अपनी यह नापाक सूरत दुनियाके सामने नहीं ले जाऊँगा। इस हक़ीर ज़िन्दगीसे तो मर जानाही अब हज़ार दर्जे बेहतर और ग़नीमत है।"

अपने पिताको इस प्रकार मोह, ममता और पश्चात्तापसे सिर धुन-धुनकर रोते, छटपटाते और व्याकुल होते देख, सुहराबने वेदना-विजड़ित क्षीण कण्ठसे कहा,—"मेरे प्यारे वालिद! सब्रसे काम लीजिये। इस क़दर अपना आपा न खोइये। आप ख़ुदकुशी का [illegible] जो इरादा कर रहे हैं, वह बिलकुलही नादानोंकीसी बात है [illegible] मेरी मौत इसी ढङ्गसे होनी थी, फिर क्योंकर कोई इसे ट[illegible] सकता? जो मुक़द्दरमें है, वह तो होकरही रहेगा? इस मुक़द्दरको कौन इधरसे उधर कर सकता है? अब आपका यह रोना-पीटना बिलकुलही फ़िज़ूल है। मुझे तो इसी

बातकी ऐन खुशी हासिल हो रही है, कि मैं आपकी सूरत देखते-देखतेही दम तोड़ रहा हूँ !"

अपने मरते हुए पुत्रके मुँहसे ये बातें सुनकर रुस्तमका कलेजा और भी टुकड़े-टुकड़े होने लगा और वह अधिकाधिक व्याकुल होकर रोने लगा। इधर सुहराबकी तकलीफ़का कोई ठिकाना नहीं था। वह पानीसे बिछुड़ी हुई मछली और तीरसे बिंधी हुई हरिणीकी तरह कष्टसे व्याकुल होकर बेतरह रो और छटपटा रहा था। उसका यह हाल देख, रुस्तम भी अधिक आतुर होकर रोने और उसकी घायल देहपर लोट-लोटकर अपनी रोदन-ध्वनिसे आकाश कम्पित करने लगा।

वह भयानक शोकावह दृश्य देख, उस समय पत्थरका कठिन कलेजा भी पिघल जाता; इसमें कोई सन्देह नहीं!



# घोर कृतघ्नता

इधर रुस्तमके आनेमें अत्यन्त विलम्ब होते देख, ईरानके बादशाह बेतरह घबराये। उसके आनेकी राह देखते देखते उनकी आँखें पथरा गयीं, पर रुस्तम नहीं लौटा। इस तरह सारा दिन गुज़र गया। शाम हो आयी; पर रुस्तम नहीं आया। अब तो बादशाहकी व्याकुलता सीमा पार कर गयी। इसी समय उन्होंने एकाएक देखा, कि रुस्तमका प्यारा घोड़ा रख़्श सामने खड़ा है; पर उसका सवार नदारद है! यह देखतेही बादशाहके देवता कूच कर गये। उन्होंने सोचा, कि अवश्यही रुस्तम मारा गया, तभी यह घोड़ा बिना उसे लियेही चला आया है! यह सोचतेही उनकी आत्मा सन्न हो गयी। वे समझ गये, कि ा, अब ईरानकी गौरव-गरिमाके दिन बिलकुल पूरे होनेको ा!

थोड़ीही पारे सैनिक-दलमें भयानक खलबली मच गयी। सभी सैनिकों सेनापतियोंके दिल बैठ गये। उनका उत्साह उड़ गया। सेन ाल देख, बादशाह और भी अधिक घबराये और सब लोग मने आकर कहने लगे,—"तुम लोग अभी जाकर देखो, कि रुस्त क्या हाल हुआ! काश रुस्तम

मारा गया हो, तो समझ लेना, कि हमारे मुल्कपर तबाही आ गयी। फिर तो मुझे [illegible] तर्क कर, बादशाह जमशेदकी तरह इधर-से-उधर भटकते फिरना पड़ेगा। ओह! क्या सच-मुच मेरी सारी उम्मीदोंका आज ख़ातमाही हो गया?"

हुक्म पातेही कुछ सिपाहियोंको साथ लिये हुए कई सेना-पति युद्ध-क्षेत्रमें आ पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन लोगोंने देखा, कि वह वीर तातारी युवक बेसुध गिरा पड़ा है और महावीर रुस्तम उसकी छातीपर लोट-लोटकर—ढाढ़ें मार-मारकर रो रहा है। यह देखतेही रुस्तमके भाई ज़हूरने उसके पास आकर पूछा,—"क्यों भाई! तुम्हें कहाँ ज़ख्म लगा है? क्यों इस क़दर पुक्का फाड़कर रो रहे हो?"

भाईको देखकर रुस्तमके हृदयका सारा शोक-सागर एक-बारगी उमड़ आया। उसने अत्यन्त कातर-कण्ठसे कहा,—"क्या बताऊँ, बिरादर! कि मुझे कहाँ ज़ख्म लगा है? मेरे कलेजे-में आज वह कारी ज़ख्म लगा है, जो हज़ार मरहम-पट्टी करनेसे भी ताज़ीस्त नहीं भरनेका। भाई! मैंने अपने अपने लख्ते-जिगरको—अपनी जानोंकी जानको—मार । है। इस ज़ईफ़ीमें मुझे यही बदनामीका ठीकरा अपने र लेना था! अब मैं जीकरही क्या करूँगा? अब तो मे यह ज़िन्दगी बोझसी हो गयी! हाय!"

यह सुनतेही ज़हूर भी आश्चर्य से व्याकुल हो उठा। उसने एक बार अपनी आँसू-भरी खें सुहराबके मृत्यु-छाया-

ग्रसित मुख-मण्डलकी ओर फेरीं। उसे देखतेही सुहराबने बड़े-ही क्षीण कण्ठसे कहा,—"बस, अब फ़िज़ूल ग़म उठाने और अफ़सोस ज़ाहिर करनेकी कोई ज़रूरत नहीं है। मेरी क़िस्मत-मेंही यही लिखा था, कि मैं अपने वालिद्के हाथों मारा जाऊँ। फिर कौन इस बातको उलट सकता था? बस, चुपचाप ख़ुदाकी मरज़ीपर सब्र करते हुए मुझे इतमीनानके साथ मौतकी गोद्में सो जाने दें। यही समझ लें. गोया मैं नहीं था, बिजली थी, जो लहज़े-भरके लिये आसमानमें चमककर चली गयी। एक गुल था, जिसे हवाका एक झोंका आकर चमनसे उड़ा ले गया।"

यह सुनतेही ज़ुहूर भी छाती पीट-पीटकर रोने लगा। रुस्तम-की रुलाईकी मात्रा भी बेतरह बढ़ गयी। यह देख, सुहराबने पहलेसे भी अधिक धीमी आवाज़में कहा,—"मेरे प्यारे वालिद् और चचाजान! आपलोग इस नाचीज़सी ज़िन्दगीके लिये नाहक़ अफ़सोस क्यों करते हैं? इसका तो एक-न-एक दिन ख़ातमा होनाही था। क़ज़ाके हाथोंसे कोई बच तो सकताही नहीं। वह एक दिन हरएक इनसानको अपने चंगुलमें फँसातीही वह एक दिन सभी छोटे-बड़े मख़लूकको निगल जाती है। हयातके दिन पूरे हो गये थे, फिर कौन मुझे बचा सकता था. तो मैं चला। अब मेरी आपलोगोंसे यही अर्ज़ है, कि मेरे सा गर किसी तरहका ज़ुल्म न करेंगे। वे बेचारे बिलकुल बेक़ुसूर है सोस, मैं उन लोगोंको अपने हमराह इसी लिये लाया था, ... मैं आकर आपसे मिलूँ और ईरानकी

रियायाकी तकलीफें दूर करूँगा ; मगर माँके बतलाये हुए निशानात आपमें पाकर दिलमें इस बातका पूरा-पूरा यक़ीन हो जाने-पर भी, कि आपही मेरे अब्बाजान हैं, मैं ईरानके वज़ीर और अपने सिपह-सालार हुमाँके बहकावेमें आ गया और आपने भी मुझसे अपनेको इस क़दर छिपाया, कि मेरा यक़ीन जाता रहा और मैंने आपको ग़ैरही तसौअर कर लिया। काश, आप पहलेही मुझे अपनी इस्मियत बतला देते, तो आज यह दिन हमें हरगिज़ नहीं देखना पड़ता।"

यह कहते-कहते सुहराब चुप हो गया और चुपचाप पिताके मुँहकी ओर देखने लगा। फिर उसके मुँहसे बोल नहीं निकला। वह बेतरह कमज़ोरी मालूम करने लगा।

यह सब लीलाएँ देख और इन लोगोंकी बातें सुन, जितने सिपाही वहाँ ज़हूरके साथ-साथ आये थे, सभी बड़े ज़ोर-ज़ोरसे रोने-पीटने लगे। फिर तो वह शोक-सागर उमड़ पड़ा, कि जिसका नाम! कोई किसीको चुप करानेवाला नहीं रहा। सभी एकही शोक-तरङ्गमें बह चले।

यह देख, किसी-किसी तरह अपने हार्दिक [illegible]ो मनमेंही दबाकर रुस्तमने अपने सिपाहियोंसे कहा,—"बस [illegible]ो! आज-सेही जंगोजेहदका ख़ातमा हो गया। तुमलोग [illegible]ो-ख़ुशी घर चले जाओ और तूरानी फ़ौजको भी बेख़ौफ़ [illegible] लौट जाने दो। मैं भी आज अपने लड़केके साथ-ह[illegible] अपनी ज़िन्दगीका क़िस्सा तमाम किये देता हूँ।" य[illegible] रुस्तमने अपना ख़ञ्जर

अपनी छातीमें घुसड़नेके लिये उठाया ; पर सिपाहियोंने झटसे आगे बढ़कर उसके हाथसे ख़ञ्जर छीन लिया।

बूढ़े सेनापति गुदरेज़ने कहा,—"ऐ बहादुर शख़्स! यह तो बताओ, क्या तुम्हारे जान दे देनेपर भी यह लड़का बच जायेगा? ज़रा भी इसकी तकलीफ़ रफ़ा होगी? यह दुनिया सराये-फ़ानी है। यहाँ किसीका क़याम नहीं है। जिसकी क़ज़ा जब और जिस सूरतसे आनेवाली होती है, तब और उसी सूरतसे आ जाती है। फिर ऐसे दानाँ शख़्स होकर भी तुम ऐसा क्यों करते हो? ख़ुद-कुशीसे बाज़ आओ। नहीं तो इस अज़ाबसे तुम्हारी रूह बाद-मुर्दन भी तकलीफ़ पायेगी।"

शोक-विह्वल रुस्तमने कहा,—"भाई! अगर तुम्हें मेरी हालत-पर रहम आता है, तो अभी बादशाह क़ैकाऊसके पास जाकर मेरी हालत बयान करो और उनसे हर तरहके ज़ख़्मको दूर करने-वाली नोशदारू नामकी दवा माँग लाओ। उस दवामें मरते हुएको भी जिला देनेकी ताक़त मौजूद है। मुमकिन है, उस दवाके ज़रिये [illegible] इसे जिला सकूँ। सिवा उसके, और किसी चीज़से इस [illegible]न नहीं बच सकती।"

यह सु[illegible] गुदरेज़ दौड़ा हुआ बादशाहके पास आया और सारा क़िस्स[illegible]तकर बादशाहसे नोशदारू माँगी ; लेकिन उस समय बादशाह[illegible] [illegible]शंसता, क्रूरता, कृतघ्नता और हृदय-हीनता दिखलायी, [illegible]ज़ एकबारही सन्नाटेमें आ गया। बादशाहने कहा,—"क्या [illegible] मैं उस कम्बख़्त लौण्डेको जिलाने-

के लिये नोशदारू तो भला नोशदारूही है, एक तिनका भी उठाकर नहीं दे सकता। वह बदमाश मेरी बादशाहत छीननेके लिये आया था और मैं उसे जिलानेके लिये नोशदारू दे दूँ ? मैं ऐसा बेवक़ूफ़ नहीं हूँ। रुस्तमनेही उस दिन मेरी कम बेइज़्ज़ती की थी ? लाखों जली-कटी सुनाकर बड़े तावसे दरबारसे चला गया और जाते-जाते मेरी हद दर्जेकी तौहीन करता गया। अब मैं उसके बेटेको जिलाकर अपनेही तख़्तोताजपर आफ़त ढाऊँ ? ये दोनों बाप-बेटे मिलकर मुझे कान पकड़कर तख़्तसे उतार देंगे। ऐसी जिहालत मैं हरगिज़ नहीं कर सकता।"

यह सुन, बादशाहकी घोर नीचतापर मन-ही-मन क्षुब्ध होता हुआ गुदरेज़ ख़ाली हाथ डुलाता हुआ रुस्तमके पास आ पहुँचा। उसकी बात सुन, रुस्तमने सोचा, कि अगर मैं ख़ुद माँगने जाऊँगा, तो बादशाह हरगिज़ इनकार करनेकी हिम्मत न कर सकेगा। यह सोच, वह झटपट उठ खड़ा हुआ और बादशाहके पास आ पहुँचा। इस बार बादशाहने डरकर नोशदारू दे दी; पर ज्योंही रुस्तम उसे लिये हुए अपने पुत्रके पास पहुँचा, त्योंही उ[illegible]खा, कि वह तो कभीका दम तोड़ चुका! अब कौन [illegible] पियेगा ? पिलाकरही क्या होगा ? अब तो वह संसारके [illegible]:ख-कष्टोंसे छुटकारा पाकर, सदाके लिये अनन्त-गम्भीर [illegible] सो गया!

यह देख, रुस्तम, आर्त्त-नाद कर[illegible]नपर गिर पड़ा और रो-रोकर कहने लगा,—"हाय [illegible]ईफ़ीमें मैंने कैसा अज़ाब अपने सिरपर लिया! [illegible] बहादुर बेटेकी ख़ुद जान

ले ली! न मालूम, यह मेरे किस बुरे फ़ेलका अञ्जाम मुझे देखना पड़ा। हाय! जिस वक़ इस बच्चेकी माँ सुनेगी, कि मैंनेही इसे जल्लादकी तरह हलाल कर डाला है, तब वह मेरी कितनी लानत-मलामत करेगी? मुझे कितनी बद्दुआएँ देगी? ओह! इस बुरी ख़बरको सुनकर उसके सिरपर कैसी बिजली गिरेगी! अब बेचारी किसे देख-देखकर अपने दिलको शाद करेगी? नहीं, वह यह ख़बर पातेही ख़ब्तुलहवास हो जायेगी और ज़रूर खुदकुशी कर लेगी!"

इसी तरह वहाँ बड़ी देरतक शोकका प्रवाह बेरोक बहता रहा। अन्तमें सब लोग रुस्तमको समझा-बुझाकर ख़ीमेमें ले आये। सुहराबकी लाश ताबूतपर रखकर ख़ीमेके पास लायी गयी। वहाँ लाश पहुँचतेही और भी शोक-सागर उमड़ पड़ा। सबके सामनेही रुस्तमने पागलोंकी तरह दौड़े हुए आकर ज़ोर-ज़ोरसे रोना शुरू किया। उसने कहा,—"हाय! बेटा! तूने आज हमेशाहके लिये लड़ाई-भिड़ाई ख़तम कर दी! ठहरो, मैं तुम्हारे साथ-ही-साथ अ[illegible]ल हथियारोंको भी आजही तोड़-फोड़ डालता हूँ।" यह व[illegible]तम फिर अपने ख़ीमेके अन्दर गया और एक-एक करके अप[illegible]ी बर्छे, भाले, ढाल, तलवार, ख़ंजर, गदा और बख्तर इत्या[illegible]ाईके सामान लाकर आगमें जलाने लगा। देखते-ही-देखते [illegible] हथियारोंके साथ-ही-साथ उसने अपनी तमाम और चीज़ें [illegible]र ख़ाक कर दीं। चारों ओर भीषण अग्नि-लीला दिखाई देने [illegible]

ईरानके महानीच और कृतघ्न बादशाह क़ैकाऊसने जब यह सब हाल सुना, तब वह बनावटी सहानुभूति दिखानेके लिये रुस्तमके पास आये और उसे समझाने-बुझाने लगे। उनके चुप होनेपर रुस्तमने कहा,—"जहाँपनाह! अब तो जो कुछ होना था, वह होही गया। अब मेरी आपसे इतनीही अर्ज़ है, कि सुहराबके सिपाहियोंको चुपचाप तूरान चले जाने दें। उनसे छेड़छाड़ न करें। मैं तो अपना बेशक़ीमत हीरा खोही चुका। अब उसीकी आख़िरी ख़्वाहिशके मुताबिक़ मैं आपसे यह अर्ज़ करना चाहता हूँ, कि उसके साथियोंकी कुछ भी बुराई न करें। मैंने ज़हूरसे भी कह दिया है, कि वह उन्हें ज़ैहूनकी सरहदतक पहुँचा आये।"

बादशाहने इस अनुरोधको सहर्ष स्वीकार कर लिया।

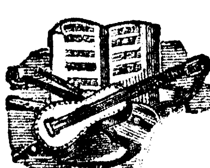
# सबका अन्त

उधर भग्न-हृदय और शोक-सन्तप्त तूरानी ईरानकी सरहद्के पार हुए, इधर सुहराबके जनाज़ेको चारों ओरसे घेरकर बादशाह, सभी सेनापति और सिपाही बड़ी देरतक रोते और उसकी आत्माकी शान्तिके लिये प्रार्थना करते रहे। इसके बाद बादशाह अपने घर चले गये और रुस्तम-से अपने घर चले जानेको कहते गये। रुस्तम ज़हूरके इन्तज़ारमें ठहरा रहा। जब वह तूरानी सैन्यको ज़ैहूनकी सरहद्तक पहुँचाकर लौट आया, तब वह भी अपने सिपाहियोंके साथ सुहराबकी लाश सिस्तान ले जानेको तैयार हुआ। सिपाही कन्धेपर जनाज़ा लिये हुए आगे-आगे चले। पीछे-पीछे शोक-सन्तप्त रुस्त[illegible]नी सूरत बनाये, नङ्गे पाँवों जाने लगा।

ज्योंही [illegible]ानका क़िला नज़र आया, त्योंही रुस्तमका शोक एक बार [illegible]ा हो आया और वह पागलोंकी तरह बेतहाशा दौड़ा हुआ [illegible] पहले अपने पिताके पास पहुँचा और रोता हुआ कहने लगा,—[illegible]बा! मैं बड़ाही नालायक़, नाख़ुदा-तरस, नाहक़ार अ[illegible]ख़ूनी हूँ! मैंने ख़ुदही अपने बेटेके कलेजेमें ख़ंजर भोंका अ[illegible]नीही औलादको मार डाला है!

मुझसा मूज़ी क़ातिल आप कहीं ढूँढ़े भी न पायेंगे। चलिये, ज़रा चलकर देखिये। हमारे सिपाही उस बहादुर लड़केकी लाश लिये आ रहे हैं। चलकर अपने इस नालायक़ लड़केकी करतूत खुद मुलाहिज़ा फ़र्माइये।"

यह सुनतेही ज़ालके सिरपर मानों भयङ्कर वज्र-पात हो गया। वह भी हाय-हाय करके रोने लगा। इसके बाद जब वह जनाज़ा दरवाज़ेपर आया, तब तो बाहर-भीतर सर्वत्र घोर हाहाकार और क्रन्दन होने लगा। सारे नगरके लोग दौड़-दौड़कर यह शोकमय दुर्घटना देखनेके लिये बारी-बारीसे आने लगे। रुस्तमकी माँ रूदाबा बेगमकी रुलाईके मारे ज़मीन और आसमान, दोनों हिल उठे। क्रमशः शोकका वेग कुछ कम होनेपर कुछ प्रधान व्यक्तियों-ने लाशके दफ़नानेका इन्तज़ाम करना शुरू किया। तुरतही एक पीले रङ्गके कफ़नमें लाश लपेटी गयी और यथोचित सम्मान-के साथ क़ब्रस्तानमें ले जाकर दफ़नायी गयी। इसके बाद सब लोग रोते हुए क़ब्रस्तानसे घर लौट आये। उसी समय रुस्तमने अपने पुत्रकी स्मृति-रक्षाके लिये उसकी क़[illegible] एक स्मृति-स्तम्भ बनानेकी आज्ञा दे दी।



# पुत्र-वियोगिनी

ईरानसे लौटे हुए सिपाहियोंके मुँहसे सुहराबके रुस्तमके हाथों मारे जानेकी ख़बर पातेही सामिङ्गनके राजभवनमें भयानक रोदन-ध्वनि और घोर हाहाकार मच गया। तमीना तो कानमें यह ख़बर पड़तेही, पगली हो गयी और रोती-रोती बेहोश होकर गिर पड़ी। महलसराकी सभी स्त्रियाँ एक साथ हाहाकार कर उठीं। राजा, राजसभा, राजकर्मचारी और राजधानीपर गहरे शोककी भयङ्कर छाप पड़ गयी।

बेहोशी दूर होनेपर तमीना आकुल-कण्ठसे रोदन करती हुई कहने लगी,—"हाय, मेरा लाल! तू कहाँ गया! अब तुझे देखे बिना मैं कैसे जिऊँगी? ओह! अब मैं तुझे कैसे देखूँगी? कहाँ पाऊँगी? म[illegible] रीबकी तूही एक दौलत था। आज मेरी वह दौलत लु[illegible] बेटा! तू बापसे क्या मिलने गया—अपनी मौतसेही ज[illegible] ा! हाय! मुझ ग़रीबका चमन किसने उजाड़ डाला? किस[illegible] क़िस्मतमें आग लगा दी? किसने मेरे ऐसे ख़ूबसूरत, ऐसे [illegible] ऐसे बहादुर और ऐसे लायक़ लड़केको बेवक़्तही इस [illegible] थ मार डाला! आज मेरे घरका चिराग़ हमेशाःके लिये गु[illegible] ा। मुझ अन्धीकी आँख जाती

रही। मूज़ीने मेरा कलेजाही काढ़ लिया। हाय! अब मैं किसे अपने कलेजेसे लगाकर अपनेको दुनियामें सबसे खुशनसीब तसौअर करूँगी? बेटा! तू बड़े बेमौक़े मुझे दग़ा दे गया! एक अनजान मुल्कमें जाकर, क़ातिल खूनीके खञ्जरसे घायल होकर न जाने कितनी दफ़े तूने अम्माँ-अम्माँ कहकर मुझे पुकारा होगा और तड़प-तड़पकर जान दी होगी! हाय! अगर तूने मैदाने-जङ्गमें भी अपने वालिदको वह तावीज़ दिखलायी होती, तो इस क़दर बेहरमीके साथ हरगिज़ न मारा जाता। फिर तो कोई तेरा बाल भी बाँका नहीं कर सकता। ओह! यह सदमा एकदम बेबर्दाश्त है! कलेजा टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता है। जिगर चाक-चाक हुआ जाता है।"

यह कहती हुई तमीना पगलीकी तरह इधर-उधर फिरने लगी। थोड़ीही देरमें उसने अपने आँगनमें बहुतसी चीज़ोंका ढेर लगाकर उसमें आग लगा दी और आप भी उसमें जल मरनेके लिये कूद पड़ी। परन्तु शोक! वह जलकर भी ठण्ढी नहीं होने पायी। लोगोंने उसे आगमेंसे बाहर ल लिया। उसके प्राण बच गये। हाँ, उसके तमाम बा गये और उसका सुन्दर चेहरा झुलसकर कोयलेकासा हो ! राज्यके बड़े-बड़े वैद्य और जर्राह उसकी दवा-दारू कर ।

थोड़ेही दिनोंमें तमीनाके ज़ख्म ये; पर उसके जिगरका ज़ख्म नहीं अच्छा हुआ जले हुए अङ्ग तो अच्छे हो गये, पर जो भयङ्कर क के हृदयके परदे-परदेमें

धधक रही थी, वह न बुझी और उसे भीतर-ही-भीतर निरन्तर जलाती रही। वह एकदम पगली हो गयी। सिवा सुहराबके उसे दुनिया-भरमें किसी चीज़की सुध न रही। वह दिन-रात 'हाय बेटा! हाय सुहराब!' के नारे बुलन्द किया करती और बेटेकी एक-एक चीज़को हाथमें ले, बड़े प्यारसे चूमती हुई उसीको सुहराब समझकर अत्यन्त अनुरागसे बातें करने लगती थी।

एक दिन तमीना बड़े गुस्सेसे भरी हुई अपने पिताके पास आकर बोली,—"रुस्तम मेरा जानी दुश्मन—मेरे लख़्तेजिगरका क़ातिल—ख़ूनी—क़स्साब है! मैं उसका सिर काटे बग़ैर न रहूँगी। बिला उसका ख़ून किये मेरे दिलकी यह आतिशेग़म ठण्डी न होगी।" यह कह, उसने पितासे बार-बार इस बातके लिये हठ करनी शुरू की, कि या तो आप ख़ुद रुस्तमसे लड़कर इस ख़ूनका बदला वसूल करें, नहीं तो मुझेही चन्द सिपाहियोंके साथ वहाँ जाने दें। लाचार, तमीनाके इच्छानुसार उन्होंने कुछ सिपाही उसके हमराह कर दिये।

यथास [illegible] सिस्तानमें पहुँचकर तमीनाने रुस्तमके पास ख़बर भिज[illegible] कि मैं अपने बेटेके ख़ूनका बदला वसूल करने आयी हूँ—[illegible] आकर मेरे साथ भी उसी तरह युद्ध करें, जैसे मेरे बेटेके स[illegible]ई थे। जो दूत रुस्तमके पास यह ख़बर लाया था, उसके मुँ[illegible]के पागलपनकी बात सुनकर रुस्तमके मनमें फिर नये [illegible]शोक उत्पन्न हो आया! वह पुक्का फाड़कर रोने लगा। [illegible] समझमें नहीं आया, कि मैं उस

पुत्र-हीना जननीको क्या कहकर प्रबोध दूँगा? किस मुँहसे उसके सामने जाकर खड़ा हूँगा?

इधर रुस्तम इसी सोच-विचारमें पड़ा रहा, उधर उसकी माँ रूदाबा बेगम, कई औरतोंके साथ, अपनी पुत्र-वधूके पास आ पहुँचीं। उन्हें देखतेही तमीना उनके गले लगकर पुक्का फाड़कर रोने लगी। इतनेमें ज़ाल भी वहाँ आ पहुँचे और अपनी पुत्र-वधूको समझा-बुझाकर घर चलनेको कहने लगे।

उनकी बातें सुन, तमीनाने क्रोधसे गरजते हुए कहा,—"रुस्तमने मेरे कलेजेमें कटार मारी है; मेरे सिरपर बिजली गिरा दी है, पहले आप लोग एक बार उसे मेरे रू-ब-रू पेश कीजिये, इसके बाद जो कुछ कहना हो, कहियेगा। मैं एक बार उस क़ातिलसे यह पूछना चाहती हूँ, कि उसने मेरे बेटेको किस लिये इस बेरहमीके साथ मारा है?"

यह सुन, सब लोग वहाँसे लौट गये। थोड़ीही देरमें आँखोंमें आँसू भरे रुस्तम वहाँ आ पहुँचा। रुस्तमको देखतेही तमीनाकी भवें तन गयीं, देह थर-थर काँपने लगी और वह ...ीकी तरह सपाटे भरती, खड्ग लिये हुई रुस्तमपर टूट पड़... ...गर उसी समय ज़ाल वहाँ पहुँचकर उस वारको न रोक ले... रुस्तमका वारा-न्यारा हो जाता। इसके बाद ज़ालने ...मझाते हुए कहा,—"बेटी! तू बड़ी होशियार और ... ...। फिर तू इस क़द्र आपेसे क्यों बाहर हो रही है? ... कोई क़िस्मतका लिखा भी मेट सकता है? हमारी ...तमही यह सदमा उठाना

बदा था। फिर हम कैसे इससे छुटकारा पाते ? अब तू चाहे रुस्तमका सिर उतार ले, या खुद अपनाही गला काट ले; पर इससे क्या होता-जाता है ? अगर ऐसा करनेसे तुझे तेरा प्यारा बेटा वापिस मिल जाये, तो मैं एक नहीं, सौ मर्त्तबः तुझसे कहूँगा, कि फ़ौरनसे पेश्तर रुस्तमका सर क़लम कर दे। मगर तू यह जानती है, कि यह बिलकुल ग़ैरमुमकिन है। हमारा जो जवाहिर खो गया, वह अब हरगिज़ दस्तयाब होनेका नहीं। यह दिलका इज़तराब तो हमें हश्रतक साथ ले जाना होगा। चल, बेटी! घर चल।"

यह सुनतेही तमीनाकी आँखें खुल गयीं। वह तत्वकी बात समझ गयी; पर सुसरालमें जाकर रहनेको किसी तरह राज़ी नहीं हुई। उसने अपने साथियोंको सामिङ्गन लौट जानेका हुक्म दे दिया। इसके बाद वह पगली बनी हुई क़ब्रस्तानमें पड़ी दिन-रात अपने बेटेकी क़ब्र अगोरने लगी।

इसी तरह महीनों गुज़र जानेके बाद लोगोंकी बड़ी आरज़ू-मिन्नतपर वह ालमें आयी और स्वामीके प्रेम-जलसे भींग-कर अपने शो तप्त हृदयको क्रमशः शीतल करने लगी।



# उपसंहार

मनुष्यका मन सब समय एकसाँ नहीं रहता। वह प्रतिदिन, नहीं-नहीं—प्रतिक्षण—बदलता रहता है। इसी नियमके अनुसार तमीना भी अपने पुत्रका गम्भीर शोक धीरे-धीरे भूलती चली गयी। वह पतिके प्रगाढ़ प्रेम और ऐकान्तिक अनुरागमें अपने हृदयको अवगाहन कराती हुई क्रमशः उसे शीतल करने लगी। रुस्तम भी उसके मानस-पटसे उस शोककी छायाको दूर करनेका प्राण-पणसे प्रयत्न करने लगा। दम्पतीर्[…] सिरेसे, नये ढङ्गसे, नये रूपमें, प्रेमका नूतन अभिनय जारी […]ा।

ईश्वरकी […] कुछ दिनों बाद तमीना फिर गर्भवती हुई। उसके सास-स[…]र स्वामीको इस संवादसे बड़ाही हर्ष हुआ और वे उस दिनक[…] बड़ी उत्कण्ठासे करने लगे, जिस दिन उनका भावी वंश[…]ों जन्म-ग्रहण कर उनके शोकाकुल परिवारको आनन्द-पाराव[…] देगा।

यथासमय तमीनाके गर्भसे एक बड़ाही सुन्दर बालक उत्पन्न हुआ। सिस्तानके क़िलेमें आनन्दका सागर उमड़ आया। बड़े ज़ोरसे बधावे बजने लगे। चारों ओर आनन्दका अटल साम्राज्य छा गया!

पर हाय! यह क्या? एकाएक इस अमृतमें विष कहाँसे उत्पन्न हो गया? नव-जात पुत्रको गोदमें लेतेही तमीनाको अपने हृदयके सार-रत्न सुहराबका स्मरण हो आया और वह "हाय सुहराब! मेरा प्यारा सुहराब! तू कहाँ चला गया?" कह-कहकर रोने और छटपटाने लगी। प्रसूताके दुर्बल शरीर और मस्तिष्कपर इस प्रबल शोकने भयङ्कर आघात पहुँचाया और वह देखते-ही-देखते बेहोश हो गयी। चारों ओरसे दास-दासियाँ दौड़ी हुई चली आयीं और उसको होशमें लानेकी बड़ी चेष्टा करने लगीं। धात्रियोंने उसकी गोदसे बच्चेको ले लिया और कोई उसके मुँहपर शीतल जलके छींटे डालने तथा कोई पंखा झलने लगी।

पर कोई उपचार काम न आया। तमीनाके प्राण उस समय अपने प्यारे पुत्रकी खोजमें परलोकको ओर प्र कर चुके थे! शायद उस समयतक अभागिनी माता, अपने पुत्रको ढूँढ़ती हुई, सर्व-नियन्ता, सर्वेश्वरके चरणोंके पास कर आँचल पसारे, पुत्रके मुख-दर्शनकी भिक्षा माँग रही

शुभम्

# जासूस सम्राट मि० ब्लेकके सचित्र उपन्यास।

## हवाई जहाज़

( सचित्र जासूसी उपन्यास )

यूरोपीय महायुद्धके समय जर्मन-सुन्दरियोंके नयन शिकार बनकर अंगरेज अफ़सर किस प्रकार अपना मान सम्भ्रम और यश सर्वस्व गँवा बैठते थे, उसका बड़ा ही मनोरंजक हृदयग्राही और अनूठा चित्र इस उपन्यासमें खींचा गया है। साथही जासूस सम्राट् मि० ब्लेक और जर्मन-जासूसोंके ऐसे-ऐसे अद्भुत दाँव-पेंच दिखलाए गये हैं, कि पढ़कर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। यदि आप मि० ब्लेककी जासूसियोंको पढ़ना चाहते हैं, तो इसे ज़रूर पढ़ें। मूल्य १॥।) रु०, रेशमी जिल्द २।) रु०

## भूत लीला

आपने अभीतक जितने उपन्यास पढ़े होंगे, यह उपन्यास उन सबसे निराला और अपने ढंगका एक ही है। लन्दनमें कुछ आदमी भूत लीलासे अपने अनुचित स्वार्थोंको सिद्ध करते और कभी कभी मनुष्योंका खून भी कर डालते थे। जासूस सम्राट मि० ब्लेकने उस रहस्यका भंडा फोड़कर एक धनी-मानी मनुष्यको मृत्यु-मुखसे बचाकर पापियोंको सज़ा दिलानेमें कैसी बुद्धिमत्ता और बहादुरीसे काम लिया है, इसे पढ़कर तबीयत फड़क उठती है। इस सचित्र पुस्तकका दाम ॥।)

## आखिरी दुश्मन

( सचित्र जासूसी उपन्यास )

सुन्दरी अमेलियाने अपने शत्रुओंसे चुन-चुनकर कैसा बदला लिया है, पाठक इसका हाल पहलेही पढ़ चुके हैं। इस पुस्तकमें अपने आख़िरी दुश्मनसे बदला लेनेका लोमहर्षण और दिलको दहला देनेवाला वर्णन लिखा है। सुन्दरी अमेलियाके साहस और चतुराइयोंका वर्णन पढ़कर पाठक आश्चर्य चकित हो जायेंगे। ऐसा सुन्दर दिलचस्प उपन्यास पाठकोंने अभीतक न पढ़ा होगा। रंग-बिरंगे कई चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य १॥।) रु०

## जेल-रहस्य

( सचित्र जासूसी उपन्यास )

जेलोंमें कैसे-कैसे भीषण कांड और अमानुषिक अत्याचार हुआ करते हैं, कैसे-कैसे चोर, डाकू और लुटेरे इकट्ठे होकर भोले-भाले मनुष्योंको लूटा करते हैं, यदि आप इसका आँखों देखा सच्चा हाल जानना चाहते हैं, तो इस उपन्यासको अवश्य पढ़ें। जासूस सम्राट् मि० ब्लेकने स्वयं जेलमें जासूसी करके इनके गुप्त रहस्योंका भंडा-... है, कि पढ़कर रोंगटे खड़े हो ... रंग-बिरंगे सुन्दर ४ चित्र भी दिये ...ये हैं। मूल्य १॥।), रेशमी जिल्दका २।) रु०

पता—आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०, ३६७ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।